अष्टकवर्ग

फलित की आधुनिक विधियाँ

संशोधित एवं विस्तृत संस्करण

एम. एस. मेहता
राजेश चन्द्र डडवाल

सागर पब्लिकेशन्स

अष्टकवर्ग

फलित की आधुनिक विधियाँ

लेखक

एम. एस. मेहता

एवं

राजेश चन्द्र डडवाल

अनुवादक

पवन बल्लभ थपलियाल

सागर पब्लिकेशनस्

72, जनपथ, वेद मेंशन, नई दिल्ली – 110001

दूरभाषः 23320648, 23328245

ई–मेलः sagarpub@del3.vsnl.net.in

वेबसाइटः www.sagarpublications.com

प्रथम संस्करण, 2007
संशोधित एवं विस्तृत संस्करण, 2017

© एम. एस. मेहता एवं राजेश चन्द्र डडवाल

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying or otherwise, without the prior permission of the author.

Published and printed by:
Saurabh Sagar for
Sagar Publications
New Delhi-110001

Printed at:
The Artwaves
Telefax.: 41609709
E-mail: theartwaves@gmail.com

प्रस्तावना

ज्योतिषशास्त्र एक दैविक विज्ञान है और इसीलिए सटीक फलादेश करने के लिए गुरु और भगवान का आशीर्वाद एवं कृपा आवश्यक है।

हमारे श्रद्धेय गुरु श्री के. एन. राव जी ने हमको उचित मार्गदर्शन दिया जिससे पूर्व में अप्रकाशित अष्टकवर्ग से सम्बन्धित नवीन सामग्री के रुप में कई तरह से दैविक सहायता प्राप्त हुई।

अष्टकवर्ग भावों एवं ग्रहों के बलाबल के आंकलन करने की एक अद्वितीय पद्धति है और सटीक फलित करने में सही मार्गदर्शन का काम करती है। इसका एक उदाहरण दें तो जन्मपत्रिका में सुस्थित सूर्य जातक को प्रमत्त उंचाई की ओर ले जाएगा। ऐसा जातक जन्म से ही नेतृत्व करने की क्षमता वाला होगा और जीवन में बड़ी आसानी से उसे सफलतायें प्राप्त होगीं। चूंकि नैसर्गिक राशिचक्र में सूर्य पंचम भाव का कारक ग्रह है, पंचम भाव अर्थात पूर्व पुण्यों, सफलता एवं बौधिक क्षमता का भाव, अतः जन्मपत्रिका में बली सूर्य के बिना जीवन में उच्च्य स्तर एवं सफलताओं को प्राप्त करना संभव नहीं है। इसी प्रकार बली चन्द्रमा जातक को आम लोगों की भलाई में रुचि रखने वाला श्रेष्ठ मानववादी व्यक्ति बनाएगा और अपार मानसिक शान्ति प्रदान करेगा। पीड़ित एवं निर्बली चन्द्रमा वाले जातक के पास अच्छी सोच–विचार की क्षमता नहीं होती है और वह विषाद ग्रस्त एवं जड़मति होता है।

अष्टकवर्ग ही केवल एक ऐसी पद्धति है जो हमें ग्रहों के बलाबल के बारे में कहेगी और तदनुसार खुशियों एवं सम्पन्नता अथवा उपद्रव एवं दुःख के समय अन्तराल को बताएगी।

अष्टकवर्ग पद्धति का सबसे बड़ा योगदान यह है कि यह जन्मकुण्डली के बलाबल की स्पष्ट तस्वीर देती है और उचित परिहार के लिए मार्गदर्शन करती है।

विश्वभर में ज्योतिषशास्त्र की अन्य विधाओं में से किसी भी शाखा में जन्मपत्रिका के आंकलन एवं फलादेश कहने की अष्टकवर्ग जैसी विलक्षण पद्धति उपलब्ध नहीं है, जो इस बात की पुष्टि करती है कि दैविक विज्ञान ज्योतिष का जन्म ऋषि–मुनियों की पवित्र भूमि भारत वर्ष में हुआ है।

आभार

अष्टकवर्ग के फलित की आधुनिक विधियों की इस पुस्तक का स्कूल ऑफ एस्ट्रोलॉजी, भारतीय विद्या भवन के **छात्रों** और **साथी अध्यापकों** की सार्थक एवं व्यवहारिक सहयोग के बिना प्रकाशित होना असभंव ही था। इन सभी साथियों ने ही अष्टकवर्ग से सम्बन्धित सभी प्रकार के आंकड़े, सामाग्री एवं कुण्डलियाँ उपलब्ध करायीं। विशेषकर हम दीपा गुप्ता के आभारी हैं जिन्होंने हमें इस पुस्तक को पूर्ण करने में अपना नैतिक प्रोत्साहन व टाइपिंग दक्षता का सक्रिय सहयोग दिया।

हम **पवन बल्लभ थपलियाल** के भी आभारी हैं जिन्होंने एकत्रित सम्बन्धित सामाग्री को एक पुस्तक के रुप में पुनः व्यवस्थित किया और साथ ही उसका हिन्दी में भी अनुवाद किया।

हम श्री राजेश तोमर के भी ऋणी हैं जिन्होंने इस पुस्तक का सूक्ष्मता से अध्ययन किया और हमको बहुत उपयोग सलाह दी। नरेन्द्र एवं सौरभ सागर के प्रति हम विशेष आभारी हैं जिन्होने इस पुस्तक को इतनी शीघ्रता एवं इतने सुन्दर ढंग से छापने में रुचि दिखाई।

राजेश चन्द्र डडवाल

लेखकों एवं अनुवादक के बारे में

इस पुस्तक के लेखक श्री एम. एस. मेहता और श्री राजेश चन्द्र डडवाल, विश्व के सबसे बड़े ज्योतिष विद्यालय, स्कूल ऑफ एस्ट्रोलॉजी, भारतीय विद्या भवन में संकाय सदस्य हैं। आपके पास ज्योतिष अध्यापन का कई वर्षों का अनुभव है और आप सैकड़ों विद्यार्थियों को फलित की उन्नत विधियाँ पढ़ा चुके हैं। आपके मार्गदर्शन में विद्यार्थियों ने फलित की कला को सरलता एवं सुगमता से सीखा है।

यह पुस्तक आपके वर्षों अध्यापन–अनुभव का परिणाम है और आशानुसार जन्मकुण्डली की विवेचना करने में नई सामाग्री उपलब्ध करायेगी।

श्री एम. एस. मेहता इससे पहले भी श्री के. एन. राव जी के मार्गदर्शन में ज्योतिष के विषय में कई पुस्तकें जैसे कि ***Planets and foreign Travels, Analysing Horoscope through modern Techniquies, Varsh Phala etc.*** लिख चुके हैं। उन्होंने सम्मानित पत्रिका ***Journal of Astorolgy*** के लिए मुण्डेन ज्योतिष में भी कई लेख लिखे हैं।

अनुवादक: पवन बल्लभ थपलियाल भारतीय विद्या भवन से ज्योतिष आचार्य हैं और वर्तमान में भारत मौसम विज्ञान विभाग में कार्यरत हैं। पारिवारिक पृष्ठभूमि होने के उपरान्त भी शिक्षा पूर्ण करने के बाद, ज्योतिष के ज्ञान के प्रति रुचि जागृत हुई और भारतीय विद्या भवन से ज्योतिष की शिक्षा प्राप्त की। हिन्दी, अंग्रजी के अतिरिक्त संस्कृत का ज्ञान रखते हैं और उत्तराखण्ड की देवभूमि में इधर–उधर बिखरे ज्योतिष के ज्ञान को समेटने एवं जन–जन तक पहुंचाने में प्रयासरत हैं।

भूमिका

ज्योतिषशास्त्र एक ऐसी अद्‌भुत विद्या है जो ग्रह–नक्षत्रों की स्थिति देखकर किसी भी जातक के जीवन में होने वाली शुभाशुभ घटनाओं को समय से पहले ही पढ़ने में सक्षम है। मानव कल्याण हेतु हमारे ऋषि–मुनियों ने ज्योतिषशास्त्र की ऐसी कई सरल एवं सुगम पद्धतियों का उत्सर्जन किया जिनके द्वारा फलित कथन अधिक सटीक एवं सही हो सके। अष्टकवर्ग पद्धति भी एक ऐसी पद्धति है जो फलित कथन को आसान बनाने में सहायक है। सभी शास्त्रीय ग्रन्थ इस पद्धति की विशेष अनुशंसा करते हैं। इस पद्धति के विषय को स्पष्ट करते हुए महाऋषि पराशर कहते हैं:

यथा लग्नाच्च चन्द्राच्च ग्रहाणां भावजं फलम्।
तथाऽन्येभ्योऽपि खेटेभ्यो विचिन्त्यं दैवविद्वरैः ।।
अतो रव्यादिखेटानां सलग्नानां पृथक्–पृथक्।
अष्टानां सर्वभावोत्थं यथोक्तमशुभं शुभम्।।
ज्ञात्वाऽऽदौ करणं स्थानं बिन्दुरेखोपलक्षितम् ।
क्रमादष्टकवर्गस्य वाच्यं स्पष्टफलं यथा ।।

इसी विषय को स्पष्ट करते हुए मंत्रेश्वर ज्योतिषशास्त्र की अपनी अनुपम कृति फलदीपिका में कहते हैं:

गोचरग्रहवशान्मनुजानां यच्छुभाशुभफलाभ्युपलब्ध्यै।
अष्टवर्ग इति यो महदुक्तस्तत्प्रसाधनमिहाभिदधेऽहम्।।

यद्यपि सही–सही फलादेश के लिए गोचर का ज्ञान अत्याधिक आवश्यक है लेकिन इतना महत्वपूर्ण होने के उपरान्त भी यह विषय, ज्योतिषशास्त्र का ऐसा अंग है जिसको सामान्यतः अधिक महत्व नहीं दिया जाता है। कालान्तर में सभी ज्योतिषशास्त्रियों ने इसके महत्व को समझकर इस विषय में अनुसंधान करके इसके चमत्कारी परिणामों को सबके सामने रखा। मुख्य रूप से अष्टकवर्ग पद्धति, गोचर के विषय की ही सूक्ष्मता से विवेचना करने की एक विशिष्ट पद्धति है। अष्टक का

शाब्दिक अर्थ, आठ होता है, अर्थात लग्न एवं सात ग्रह। ग्रह सदैव चलायमान स्थिति में होते हैं और एक–दूसरे के सापेक्ष में निरन्तर स्थिति परिवर्तन करते रहते हैं। इनकी कुछ स्थितियों को शुभ और कुछ स्थितियों को अशुभ माना जाता है। अष्टकवर्ग पद्धति में ऐसे सिद्धान्तों का विस्तार से वर्णन है जिनके द्वारा यह ज्ञात किया जाता है कि कौन सा ग्रह कब गोचरवश शुभ फल देगा और कब अशुभ फल।

विभिन्न ग्रहों की दशा–अन्तर्दशा में सही–सही फल जानने में अष्टकवर्ग पद्धति की महत्वता अधिक रेखांकित होती है क्योंकि बिना किसी संदेह के यह सिद्ध हो चुका है कि अधिकतम बिन्दुओं के साथ सम्बन्धित नहीं होने की स्थि ति में उच्च का ग्रह भी शुभ फल प्रदान नहीं करता है। इसके विपरीत यदि कोइ ग्रह अपने भिन्नाष्टकवर्ग में बिन्दुरहित रहने वाली राशि में गोचर करता है तो अत्याधिक अशुभ फल देता है। ऐसी स्थितियों में अशुभ शनि का गोचर मृत्यु तुल्य कष्ट का कारण बन सकता है। यह स्पष्ट रुप से समझ लेना चाहिए कि कोई भी ग्रह चाहे उच्च राशि, स्वराशि, केन्द्र, त्रिकोण, उपचय स्थान अथवा शुभ वर्गो में बली स्थिति में ही क्यों न हो, 25 से कम बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर अधिक प्रभावशाली नहीं होता है।

अष्टकवर्ग की प्रशंसा में पराशर कहते हैं कि:

अष्टवर्गेण ये शुद्धास्ते शुद्धाः सर्वकर्मसु ।
अतोऽष्टवर्गसंशुद्धिरन्वेष्या सर्वकर्मसु।।
तावद् गोचरमन्वेष्यं यावन्न प्राप्यतेऽष्टकम् ।
अष्टवर्गे तु सम्प्राप्ते गोचरं विफलं भवेत् ।।

अर्थात जो राशि अष्टकवर्ग में शुद्ध हो वह सब शुभ कार्यों में शुद्ध (शुभ फलप्रद) समझी जाती है। अतः सब कार्यों के लिए अष्टकवर्ग शुद्धि देखनी चाहिए। जो राशि अष्टकवर्ग में शुद्ध नहीं हो उसी का गोचरशुद्धि देखना। जो राशि अष्टकवर्ग से शुद्ध हो उसके लिये गोचरशुद्धि विचार करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि अष्टकवर्ग शुद्धि प्रबल है। अतः अष्टकवर्ग शुद्धि होने से गोचर निष्फल हो जाता है।

यह पुस्तक विशेषतः ज्योतिष के छात्रों को अष्टकवर्ग पद्धति के सिद्धान्तों की सूक्षमता को, चरणबद्ध तरीके से समझने के लिए लिखी गई है। बहुत बडी संख्या में बुद्धिजीवी एवं अच्छे प्रतिष्ठित व्यक्तियों को ज्योतिष पढ़ाने के अनुभव से लेखक को ज्योतिष के छात्रों की मांग का अच्छी तरह ज्ञान है। इसके अतिरिक्त

नये छात्रों के लिए इस पुस्तक में जन्मपत्रिका विवेचना के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को विस्तार से समझाया गया है जो अनुभवी ज्योतिषशास्त्रियों के लिए भी उपयोगी हो सकते हैं। पुस्तक के अन्त में अभ्यास के लिए जन्मपत्रिकाओं के बहुत से उदाहरण भी दिये गए हैं।

यह पुस्तक श्री के. एन. राव के दिशा–निर्देशन में लिखी गई है, जिन्होंने अपने लेखों की एक कड़ी के अन्तर्गत अष्टकवर्ग को "डॉट्स ऑफ डेस्टनी" कहते हुए इसकी महत्वपूर्णता पर प्रकाश डाला था। इस संसार में नाम कमाने एवं प्रसिद्धि पाने के बारे में श्री के. एन. राव कहते हैं:–

"इस संसार में ऐसे तीन तरीके हैं जिनके द्वारा कोई भी व्यक्ति सफलता प्राप्त कर सकता है। प्रथम उसकी जन्मपत्रिका में राजयोग एवं धनयोग होना चाहिए। दूसरा, उसे इन योगों से सम्बन्धित दशा सही समय पर मिलनी चाहिए और तीसरा यह कि सफलता की उंचाइयों की सीमा का निर्धारण केवल अष्टकवर्ग की सहायता को मुख्य महादशा के समय शनि एवं बृहस्पति के गोचर से मिलाकर ही किया जा सकता है।"

इस पुस्तक को वर्तमान संशोधित रुप में प्रस्तुत करने के क्रम में सम्बन्धित विषय पर उपलब्ध साहित्य का गहन अध्ययन किया गया है। इस पुस्तक के संदर्भ में पाठकगण यदि किसी भी प्रकार का सुझाव देना चाहते हों तो उनका हार्दिक स्वागत है। सुझावों के औचित्य को समझते हुए, उन्हें अगले संस्करण में शामिल किया जाएगा।

एम. एस. मेहता

विषय–सूची

क)	प्रस्तावना	iii
ख)	आभार	v
ग)	लेखकों एवं अनुवादक के बारे में	vii
घ)	भूमिका	ix
अध्याय संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1.	फलित की अष्टकवर्ग पद्धति	1
2.	अष्टकवर्ग सारिणियां बनाने की विधि	10
3.	शोधन	25
4.	सर्वाष्टकवर्ग में शोधन	42
5.	शोध्य पिण्ड	48
6.	अष्टकवर्ग द्वारा जन्मपत्रिका की विवेचना	53
7.	सर्वाष्टकवर्ग द्वारा जन्मपत्रिका की विवेचना	60
8.	सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा फलित	77
9.	चन्द्रमा के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा फलित	86
10.	मंगल के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा फलित	93
11.	बुध के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा फलित	102
12.	बृष्हस्पति के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा फलित	107
13.	शुक्र के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा फलित	116
14.	शनि के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा फलित	122

अध्याय संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
15.	अष्टकवर्ग और गोचर	129
16.	ग्रहों का कक्ष्या में गोचर	144
17.	इन्दु लग्न और आर्थिक सम्पन्नता	147
18.	अष्टकवर्ग एवं आयुर्दाय	156
19.	अष्टकवर्ग एवं दशा–अन्तर्दशा	162
20.	अष्टकवर्ग एवं मुहूर्त्त	165
21.	विवाह और अष्टकवर्ग	169
22.	अष्टकवर्ग में मतभिन्नता	172
23.	उदाहरण जन्मकुण्डलियाँ	178
	i) *स्वतंत्र भारत*	
	ii) *बिल क्लिंटन*	
	iii) *जार्ज बुश*	
	iv) *सचिन तेंदूलकर*	
	v) *लाल बहादुर शस्त्री*	
	vi) *संजय गांधी*	
	vii) *जे.एल. नेहरू*	
	viii) *ए.बी. वाजपेयी*	
	ix) *राजीव गांधी*	
	x) *अमिताभ बच्चन*	

अध्याय 1

फलित की अष्टकवर्ग पद्धति

अष्टकवर्ग क्या है?

"अष्ट" शब्द मूलरूप से संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है आठ, अतः अष्टकवर्ग का अर्थ हुआ आठ वर्ग अर्थात आठ भाग या टुकड़े। अष्टकवर्ग पद्धति समझने के लिए सर्वप्रथम यह समझना आवश्यक है कि इसकी मूल उत्पति कहां से हुई है और इसका अर्थ क्या है ? ज्योतिषशास्त्र में अष्टकवर्ग का अभिप्राय गोचरवश लग्न के साथ–साथ अन्य छः ग्रहों के द्वारा उस ग्रह विशेष पर पड़ने वाला संयुक्त ऊर्जाओं का प्रभाव है। ग्रहों में यहां केवल सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि, इन्ही सात ग्रहों की ऊर्जाओं के प्रभाव की विवेचना की जाती है। छाया ग्रह होने के कारण राहू एवं केतु को इस पद्धति में शामिल नहीं किया जाता है।

सामान्यतः किसी भी ग्रह का गोचर लग्न अथवा चन्द्रमा से देखा जाता है, जबकि इस ग्रह विशेष एवं अन्य ग्रहों की मूल स्थिति के संदर्भ में इसकी गोचरस्थ स्थिति को अनदेखा किया जाता है। अष्टकवर्ग पद्धति गोचर देखने की इसी कमजोरी को दूर करती है। अतः अष्टकवर्ग पद्धति गोचरवश, लग्न एवं सात ग्रहों द्वारा उत्सर्जित ऊर्जाओं का स्वयं एवं अन्य सातों पर पड़ने वाले संयुक्त प्रभाव की विवेचना है। ग्रहों द्वारा उत्सर्जित ये ऊर्जायें शुभ एवं अशुभ दोनों ही प्रकार की होती हैं, अतः अष्टकवर्ग पद्धति से इसकी सूक्ष्म विवेचना की जाती है कि किस स्थिति विशेष में यह जन्मपत्रिका के जातक के लिए शुभ फलकारी होंगी और किस स्थिति विशेष में अशुभ फलकारी होगी। सामान्यतः गोचरवश कोई भी ग्रह विशेष, जन्मपत्रिका के चन्द्रमा से शुभ स्थान में हो सकता है, लेकिन यह आवश्यक नहीं है कि वह लग्न एवं पत्रिका में अपनी मूल स्थिति के साथ–साथ अन्य ग्रहों से भी शुभ स्थिति में हो। अर्थात वह किसी से शुभ स्थिति में हो सकता है और किसी से अशुभ स्थिति में। अष्टकवर्ग पद्धति, इन सभी शुभ–अशुभ स्थितियों का संयुक्त शुभ अथवा अशुभ प्रभाव जानने में सहायता करती है। संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि अष्टकवर्ग पद्धति जन्मपत्रिका में ग्रहों की

मूल स्थिति के संदर्भ में गोचरस्थ ग्रहों का सूक्ष्म बल दर्शाती है। यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि ग्रह चाहे नैसर्गिक शुभ हो अथवा अशुभ, बली होने की स्थित में सदैव ही अच्छे फल देता है, जबकि बलहीन ग्रह अशुभ फलदायक होता है।

अष्टकवर्ग का उद्भव और महत्वः

अष्टकवर्ग पद्धति प्राचीन काल से ही ज्योतिषशास्त्र का एक अंग रही है। ज्योतिषशास्त्र के सभी शास्त्रीय ग्रन्थों में ज्योतिषीय सिद्धान्तों पर आधारित पराशर कृत, *वृहत पराशर होराशास्त्र,* सर्वश्रेष्ठ स्थान रखता है। इसके द्वारा वर्णित सिद्धान्तों को सभी ज्योतिषाचार्य एकमत से स्वीकार भी करते हैं। वृहत पराशर होराशास्त्र के उत्तर खण्ड में, ऋषि मैत्रेय के यह पूछने पर कि, कलियुग में पापकर्मरत होने से मनुष्य की बुद्धि मन्द हो गई है, अतः जो अल्पबुद्धिगम्य हो, जिससे तात्कालिक ग्रह स्थिति से मनुष्यों के सुख–दुःख और आयुर्दाय का स्पष्ट ज्ञान हो, उस प्रकार के शास्त्र का ज्ञान मुझे बतलाइये, पराशर कहते हैं कि "जन्मपत्रिका में ग्रह स्थिति अनुसार जिस प्रकार के सामान्य फल सभी दैवज्ञों ने कहे हैं, मैंने भी उसी प्रकार अब तक उन फलों को कहा है। लेकिन ग्रहगति सूक्ष्म होने के कारण वसिष्ठ या बृहस्पति भी इसका निश्चय नहीं कर सकते हैं तो साधारण मनुष्य किस प्रकार से कर सकता है। अतः सूक्ष्म फल जानने का शास्त्र अब कहता हूँ।"

यथा लग्नाच्च चन्द्राच्च ग्रहाणां भावजं फलम्।
तथाऽन्येभ्योऽपि खेटेभ्यो विचिन्त्यं दैवविद्वरैः ।।
अतो रव्यादिखेटानां सलग्नानां पृथक्–पृथक्।
अष्टानां सर्वभावोत्थं यथोक्तमशुभं शुभम्।।
ज्ञात्वाऽऽदौ करणं स्थानं बिन्दुरेखोपलक्षितम् ।
क्रमादष्टकवर्गस्य वाच्यं स्पष्टफलं यथा ।।

अर्थात जिस प्रकार लग्न एवं चन्द्रमा से ग्रहों के द्वादशभावजन्म शुभाशुभ फल कहे गये हैं, उसी प्रकार अन्य ग्रहों से भी भावों के शुभाशुभ फल होते हैं। इसलिए रवि आदि सात ग्रह एवं लग्न, इन आठों के क्रम से करणंज्ञक अशुभ स्थान को बिन्दुरूप से और स्थानसंज्ञक शुभ भाव को रेखारूप से उपलक्षित समझकर वक्ष्यमाण फल कहना चाहिये।

अतः यह स्पष्ट है कि, अष्टकवर्ग पद्धति, पराशरी सिद्धान्तों में से उत्सर्जित, फल कहने की एक पद्धति है जो जन्मपत्रिका के निश्चित फलित कहने में

अतिसहायक है। जन्मपत्रिका के फल समझने की भारतीय ज्योतिष की सभी पद्धतियों में यह पद्धति अद्वितीय है और अपना एक विशेष स्थान रखती है। फलित करने अथवा कहने की ऐसी विलक्षण पद्धति, भारतीय ज्योतिष के अतिरिक्त अन्यत्र कहीं भी नहीं मिलती है। इससे इस बात की भी पुष्टि होती है कि भारत वर्ष की पुण्य भूमि ही ज्योतिषशास्त्र की जन्म स्थली है।

महार्षि वराहमिहिर के पुत्र पृथ्युशस अपने होरासार नामक ग्रन्थ में कहते हैं, "यद्यपि गोचर से सामान्य फल जाने जा सकते हैं लेकिन गूढ़ फलों को केवल अष्टकवर्ग के प्रयोग से ही ज्ञात किया जा सकता है।" अपने कथन को स्पष्ट करते हुए वह आगे कहते हैं कि, जन्मपत्रिका में विधवा अथवा वैधव्य योग और सन्तान अरिष्ट योग होने के उपरान्त भी यदि बृहस्पति का भिन्नाष्टकवर्ग बली है तो ये योग फलित नहीं होते हैं। अतः जन्मपत्रिका के सही फल जानने के लिए अष्टकवर्ग का अध्ययन आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

इनके अनुसार, आयुर्दाय पद्धति के संदर्भ में भी अष्टकवर्ग पद्धति सबसे अधिक श्रेष्ठ पद्धति है। विशेषकर, जब जन्मपत्रिका के केन्द्र में चन्द्रमा किसी एक ग्रह के साथ स्थित हो और दशम भाव में शुभाशुभ दोनों तरह के ग्रह स्थित हों तो जातक की आयु की गणना, अष्टकवर्ग पद्धति से ही करनी चाहिए।

अष्टकवर्ग गोचरवश चलयमान ग्रहों के बलाबल के आंकलन की एक ऐसी विशिष्ट एवं सूक्ष्म पद्धति है जिसका उत्सर्जन हिन्दू महाऋषियों ने अपनी अन्तर्प्रज्ञा के ज्ञान से किया है। जन्मपत्रिका केवल जन्म के समय ग्रहों की स्थितियों का भान कराती है लेकिन चूंकि ग्रह हमेशा चलायमान स्थिति में रहते हैं, इसलिए जन्मपत्रिका की अपनी मूल स्थिति एवं अन्य ग्रहों की स्थितियों के संदर्भ में भी, गोचर में स्थितियां परिवर्तित करते रहते हैं। अतः ग्रहों के शुभाशुभ परिणाम ज्ञात करने के लिए उनकी गोचरवश विभिन्न स्थितियों के बलाबल का आंकलन आवश्यक है। यह ज्योतिष का सर्वमान्य सिद्धान्त है कि केवल बली ग्रह ही अच्छा परिणाम देते हैं। उदाहरणतः जन्मपत्रिका का बली सूर्य जातक को उच्च पद, सम्मान, धन–सम्पदा एवं अच्छा स्वास्थ्य देता है जबकि बलहीन सूर्य जातक को परिवार एवं मित्रों से बिछोह व तिरस्कार की ओर अग्रसर करता है। ऐसे जातक के अपने उच्च अधिकारियों से मतभेद होते हैं, जिससे वह विषादग्रस्त होता है। उसे दिल सम्बन्धी रोग होने की संभावनायें भी प्रबल होती है और पराशर के अनुसार ऐसा जातक व्यर्थ में इधर–उधर भटकता रहता है। व्यवहारिक रूप से देखने पर, कई बार विपरीत परिणाम भी पाये जाते हैं। अब प्रश्न यहां यह

उठता है कि यह कैसे निर्णय करें कि जातक को कैसा परिणाम प्राप्त होगा और कब प्राप्त होगा। "फलदीपिका" में मंत्रेश्वर भी ऐसी किसी तीसरी पद्धति की अनुशंसा करते हैं जिसकी सहायता से यह निर्णय किया जा सके कि कोई ग्रह शुभ फल देगा अथवा अशुभ फल देगा। अष्टकवर्ग पद्धति ही एक ऐसी अद्वितीय एवं विशिष्ट पद्धति है जो इस बात का उत्तर देने में अधिक समर्थ है।

यद्यपि अष्टकवर्ग पद्धति अपने आप में एक स्वतंत्र पद्धति है लेकिन, चूंकि इसका मूल पराशर सिद्धान्त ही है अतः इसका प्रयोग पराशरी पद्धति के साथ ही होता है। यह एक ऐसी पद्धति है जिसे समझना भी सरल है और यह जन्मपत्रिका की मुख्य घटनाओं को इंगित करते हुए सटीक एवं सही परिणाम देने में भी सहायता करती है। यह ग्रह के बल की स्पष्ट एवं संक्षिप्त तरीके से एक ऐसी रूपरेखा बताती है जिसके बिना सही फल का निर्णय करना असंभव सा प्रतीत होता है।

शून्य शुभ अंक प्रदान करने वाले ग्रह का अशुभ प्रभावः

प्रत्येक ग्रह एक निश्चित अर्थ अथवा तत्त्व को अभिव्यक्त करता है जिसका वह स्थिर कारक कहलाता है। किसी भी ग्रह पर पड़ने वाला अशुभ प्रभाव उसके नैसर्गिक कारकत्त्व को भी प्रभावित करेगा जैसे कि सूर्य–पिता, चन्द्रमा–माता, मंगल–भाई–बहन, बुध–ज्ञाती/सम्बन्धी अर्थात चाचा, मामा आदि, बृहस्पति–पुत्र, शुक्र–कलत्र और शनि–सेवक। जब कोई ग्रह किसी राशि में 0 शुभ बिन्दु प्रदान करता है तो वह निम्नलिखित तरीके से जातक/जन्मपत्रिका को पीड़ित करेगाः

1. ग्रह का नैसर्गिक कारकत्त्व पीड़ित होगा।
2. वह लग्नादि उन–उन भावों को प्रभावित करेगा जिन–जिन भावों में वह 0 शुभ बिन्दु प्रदान करता है और साथ ही साथ यदि वह इनमें से किसी भी भाव में स्थित नहीं है तो अपने स्वामित्व वाले भावों पर भी अशुभ प्रभाव डालेगा।
3. वह कालपुरुष के उन भावों को भी प्रभावित अथवा पीड़ित करेगा जिन भावों को वह राशियाँ दर्शाती हैं जिनमें वह 0 शुभ बिन्दु प्रदान करता हैं।
4. वह उस राशि एवं भाव को प्रभावित करेगा जहां वह स्थित है।
5. जब कोई ग्रह दो राशियों का स्वामी होकर उनमें से एक राशि में स्थित

होता है तो वह केवल उस राशि को ही प्रभावित करेगा जिसमें 0 प्रदान करता है, दूसरी राशि को नहीं।

6. ग्रह द्वारा अभिव्यक्त होने वाले अपने तत्त्व। जैसे कि कालपुरुष की जन्मपत्रिका में मंगल प्रथम एवं अष्टम भाव का स्वामी है। अतः प्रथम भाव के स्वामित्व के कारण वह सिर को पीड़ित करेगा अर्थात सिर पर चोट दे सकता है और अष्टम भाव के स्वामित्व के कारण प्रजनन अंगो को पीड़ित करेगा।

7. अशुभ दशा/अन्तर्दशा के समय नैसर्गिक पापी ग्रहों जैसे कि मंगल, शनि, राहू, केतु एवं शुभ बिन्दु न देने वाले ग्रह विशेष का गोचर अधिक अशुभ हो सकता है, लेकिन गोचरस्थ शुभ ग्रहों की दृष्टि, अशुभता को कम करती है। यदि 7 या 8 शुभ बिन्दु प्रदान करने वाला ग्रह गोचरवश उस राशि में उच्च का होता है जिस राशि में दूसरा ग्रह 0 बिन्दु प्रदान करता है तो यह स्थिति अशुभता की भरपाई कर देती है, अर्थात अशुभ प्रभाव नगण्य हो जाता है। जो ग्रह 0 शुभ बिन्दु प्रदत्त करता है उसको कभी भी अकेला नहीं लेना चाहिए, हमेशा भरपाई करने वाली स्थितियों का विचार भी साथ में करना चाहिए। यही बात गोचर के उस ग्रह के लिए भी लागू होती है जो 0 शुभ बिन्दु का प्रदान करता है।

अष्टकवर्ग पद्धति में प्रयोग होने वाले कुछ मूल शब्दः

अष्टकवर्ग पद्धति के नियमों को समझने एवं जानने से पहले इसमें प्रयोग आने वाले शब्दों का भावार्थ समझ लेना आवश्यक है। आगे ऐसे ही कुछ मुख्य शब्दों के बारे में विस्तार से बताया गया हैः

1. बिन्दु अथवा शुभ अंकः

राहू एवं केतु को छोडकर, सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र एवं शनि सभी सात ग्रह और लग्न, आठ प्रकार की शुभाशुभ ऊर्जाओं का उत्सर्जन करते हैं। प्रत्येक ग्रह अपनी मूल स्थिति से कुछ निश्चित स्थानों में शुभ ऊर्जा एवं शेष स्थानों में अशुभ ऊर्जा का उत्सर्जन करते हैं। उत्तर भारत में शुभ स्थानों में उत्सर्जित ऊर्जा को बिन्दु अथवा अंक द्वारा दर्शाते हैं, अतः बिन्दु या शुभ अंक कहते हैं जबकि दक्षिण भारत में इन शुभ स्थानों की ऊर्जा को रेखा द्वारा दर्शाते हैं अतः रेखा कहते हैं।

इस पुस्तक में हम बिन्दु अथवा अंक का प्रयोग शुभ ऊर्जा के लिए और रेखा का प्रयोग अशुभ ऊर्जा के लिए करेंगे।

1. **कक्ष्याः** प्रत्येक राशि का मान 30 अंश होता है जिसको आठ बराबर भागों में बांटने पर आठ कक्ष्यायें बनती हैं। इस प्रकार एक कक्ष्या का मान 3 अंश 45 मिनट होता है। प्रत्येक ग्रह अपनी निश्चित कक्ष्या में, अपनी जन्मपत्रिका में मूल स्थित से निश्चित भाव में बिन्दु प्रदत्त करता है। अतः कक्ष्या किसी भी राशि का एक निश्चित भाग होता है और प्रत्येक कक्ष्या का स्वामी भी एक निश्चित ग्रह होता है। राशि की कक्ष्याओं के स्वामी क्रमशः शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्रमा और लग्न होते हैं।

2. **प्रस्तार चक्रः** प्रस्तार चक्र एक ऐसी तालिका है जिसके द्वारा सभी बारह भावों की आठ कक्ष्याओं में, प्रदत्त बिन्दुओं के योग को तालिका के रूप में दर्शाया जाता है। प्रत्येक ग्रह के लिए अलग–अलग प्रस्तार चक्र बनता है।

3. **भिन्नाष्टक वर्गः** ग्रह के प्रस्तार चक्र में प्रत्येक ग्रह द्वारा, सभी बारह भावों प्रदत्त बिन्दुओं के कुल योग को, भावानुसार, जन्मपत्रिका में लिखकर दर्शाया जाता है। इस प्रकार से सातों ग्रहों का, अपने–अपने प्रस्तार चक्र के अनुसार, एक–एक वर्ग तैयार होता है जो उस–उस ग्रह का भिन्नाष्टकवर्ग कहलाता है। दूसरे शब्दों में जन्मपत्रिका में ग्रहों द्वारा अपनी, लग्न एवं अन्य सात ग्रहों की मूल स्थिति से दिये गये शुभ बिन्दुओं को भिन्नाष्टकवर्ग कहा जाता है।

4. **सर्वाष्टकवर्गः** प्रत्येक ग्रह द्वारा अपने–अपने भिन्नाष्टकवर्ग में भाव विशेष में प्रदत्त बिन्दुओं को जोड़कर, एक वर्ग में लिखकर दर्शाया जाता है। इस प्रकार से सभी बारह भावों में प्रदत्त बिन्दुओं अर्थात शुभ अंको के कुल योग को सर्वाष्टक वर्ग कहते हैं। सर्वाष्टकवर्ग, समुदाय अष्टकवर्ग के नाम से भी जाना जाता है। दोनों में एक सूक्ष्म अन्तर यह है कि सर्वाष्टकवर्ग सभी सात ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्गों के आधार पर बनाया जाता है जबकि बिना भिन्नाष्टक वर्ग बनाये, सीधे ही सर्वाष्टकवर्ग बनाने की विधि (जिसका वर्णन आगे किया गया है) के प्रयोग से प्राप्त वर्ग को समुदाय अष्टकवर्ग कहते हैं। इस अन्तर के अतिरिक्त, दोनों वर्ग कुल बिन्दुओं के अनुसार एक जैसे ही होते हैं।

रेखा सर्वाष्टकवर्गः

किसी भी भाव को सभी सात ग्रह और लग्न आठ प्रकार की ऊर्जायें देते हैं, अतः प्रत्येक भाव में कुल 56 अंक होते हैं। यदि शुभ अंकों को 56 से घटायें तो उस भाव में ग्रहों द्वारा प्रदत्त अशुभ अंक शेष बचते हैं, जिनको उत्तर भारत में रेखा के नाम से जाना जाता है। उदाहरणतः यदि किसी जन्मपत्रिका के मेष राशि के भाव में 32 बिन्दु अर्थात शुभ अंक हैं तो उस राशि में 56–32 = 24 रेखा होंगी। इसी तरह रेखाओं का सर्वाष्टकवर्ग बनता है और मण्डल शोधन आदि भी किया जाता है।

सभी सातों ग्रहों की कक्ष्या में लग्न सहित ग्रहों द्वारा अपने एवं अन्य ग्रहों के संदर्भ में प्रदत्त शुभ बिन्दुओं को, सारिणी के रूप में आगे दिया गया है।

अष्टकवर्ग कुण्डलियों का निर्माणः

अष्टकवर्ग की कुण्डलियों को बनाने की विधि के तरीकों को अध्याय 2 में विस्तार से समझाया गया है लेकिन इसको बनाने के लिए आगे दी गई सारिणी का प्रयोग होगा। यह सारिणी प्रत्येक ग्रह द्वारा अपने एवं लग्न सहित अन्य ग्रहों के संदर्भ में प्रदत्त किये जाने वाले शुभ बिन्दुओं के स्थान को दर्शाती है।

ग्रहों के शुभ बिन्दुओं की सारिणी

सारिणी–1.1
सूर्य के लिए (कुल 48 अंक)

ग्रह	भाव									कुल
शनि से	1	2	4	7	8	9	10	11		8
बृहस्पति से	5	6	9	11						4
मंगल से	1	2	4	7	8	9	10	11		8
सूर्य से	1	2	4	7	8	9	10	11		8
शुक्र से	6	7	12							3
बुध से	3	5	6	9	10	11	12			7
चन्द्रमा से	3	6	10	11						4
लग्न से	3	4	6	10	11	12				6

सारिणी–1.2
चन्द्रमा के लिए (कुल 49 अंक)

ग्रह	भाव									कुल
शनि से	3	5	6	11						4
बृहस्पति से	1	4	7	8	10	11	12			7
मंगल से	2	3	5	6	9	10	11			7
सूर्य से	3	6	7	8	10	11				6
शुक्र से	3	4	5	7	9	10	11			7
बुध से	1	3	4	5	7	8	10	11		8
चन्द्रमा से	1	3	6	7	10	11				6
लग्न से	3	6	10	11						4

सारिणी–1.3

मंगल के लिए (कुल 39 अंक)

ग्रह	भाव									कुल
शनि से	1	4	7	8	9	10	11			7
बृहस्पति से	6	10	11	12						4
मंगल से	1	2	4	7	8	10	11			7
सूर्य से	3	5	6	10	11					5
शुक्र से	6	8	11	12						4
बुध से	3	5	6	11						4
चन्द्रमा से	3	6	11							3
लग्न से	1	3	6	10	11					5

सारिणी–1.4

बुध के लिए (कुल 54 अंक)

ग्रह	भाव									कुल
शनि से	1	2	4	7	8	9	10	11		8
बृहस्पति से	6	8	11	12						4
मंगल से	1	2	4	7	8	9	10	11		8
सूर्य से	5	6	9	11	12					5
शुक्र से	1	2	3	4	5	8	9	11		8
बुध से	1	3	5	6	9	10	11	12		8
चन्द्रमा से	2	4	6	8	10	11				6
लग्न से	1	2	4	6	8	10	11			7

सारिणी–1.5

शुक्र के लिए (कुल 52 अंक)

ग्रह	भाव									कुल
शनि से	3	4	5	8	9	10	11			7
बृहस्पति से	5	8	9	10	11					5
मंगल से	3	5	6	9	11	12				6
सूर्य से	8	11	12							3
शुक्र से	1	2	3	4	5	8	9	10	11	9
बुध से	3	5	6	9	11					5
चन्द्रमा से	1	2	3	4	5	8	9	11	12	9
लग्न से	1	2	3	4	5	8	9	11		8

सारिणी–1.6

बृहस्पति के लिए (कुल 56 अंक)

ग्रह	भाव									कुल
शनि से	3	5	6	12						4
बृहस्पति से	1	2	3	4	7	8	10	11		8
मंगल से	1	2	4	7	8	10	11			7
सूर्य से	1	2	3	4	7	8	9	10	11	9
शुक्र से	2	5	6	9	10	11				6
बुध से	1	2	4	5	6	9	10	11		8
चन्द्रमा से	2	5	7	9	11					5
लग्न से	1	2	4	5	6	7	9	10	11	9

सारिणी–1.7

शनि के लिए (कुल 39 अंक)

ग्रह	भाव									कुल
शनि से	3	5	6	11						4
बृहस्पति से	5	6	11	12						4
मंगल से	3	5	6	10	11	12				6
सूर्य से	1	2	4	7	8	10	11			7
शुक्र से	6	11	12							3
बुध से	6	8	9	10	11	12				6
चन्द्रमा से	3	6	11							3
लग्न से	1	3	4	6	10	11				6

सारिणी—1.8
सीधे सर्वाष्टक वर्ग बनाने की सारिणी

राशि / ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शनि	3	2	4	4	4	3	3	4	4	4	6	1
बृहस्पति	2	1	1	2	3	4	2	4	2	4	7	4
मंगल	4	5	3	4	3	3	4	4	4	6	7	2
सूर्य	3	3	3	3	2	3	4	5	3	5	7	2
शुक्र	2	3	3	3	4	4	2	3	4	3	6	3
बुध	3	1	5	2	6	6	1	2	5	5	7	3
चन्द्रमा	2	3	5	2	2	5	2	2	2	3	7	1
लग्न	5	3	5	5	2	6	1	2	2	6	7	1
योग	24	21	29	25	26	34	19	26	26	36	54	17

ग्रहों के लिए ग्रह गुणाकर

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
गुणाकर	5	5	8	5	10	7	5

राशियों के लिए राशि गुणाकर

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
गुणाकर	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12

अध्याय 2

अष्टकवर्ग सारिणियां बनाने की विधि

किसी भी जन्मपत्रिका का अष्टकवर्ग तैयार करने के लिए, विभिन्न चरणों में, नियमानुसार कार्य करना पड़ता है। इस पद्धति में निम्नलिखित आठ वर्ग कुण्डलियां बनती है:

कुण्डली संख्या 1 – सारिणी संख्या 2.1 – सूर्य का प्रस्तारक वर्ग
कुण्डली संख्या 2 – सारिणी संख्या 2.2 – चन्द्रमा का प्रस्तारक वर्ग
कुण्डली संख्या 3 – सारिणी संख्या 2.3 – मंगल का प्रस्तारक वर्ग
कुण्डली संख्या 4 – सारिणी संख्या 2.4 – बुध का प्रस्तारक वर्ग
कुण्डली संख्या 5 – सारिणी संख्या 2.5 – बृहस्पति का प्रस्तारक वर्ग
कुण्डली संख्या 6 – सारिणी संख्या 2.6 – शुक्र का प्रस्तारक वर्ग
कुण्डली संख्या 7 – सारिणी संख्या 2.7 – शनि का प्रस्तारक वर्ग
कुण्डली संख्या 8 – सारिणी संख्या 2.8 – सब का योग अर्थात सर्वाष्टक वर्ग

पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक चरण एवं नियम को, उदाहरण के रूप में स्वर्गीय श्रीमति इन्दिरा गांधी की जन्मपत्रिका पर लगाकर समझाया जा रहा है।

उदाहरण जन्मपत्रिका

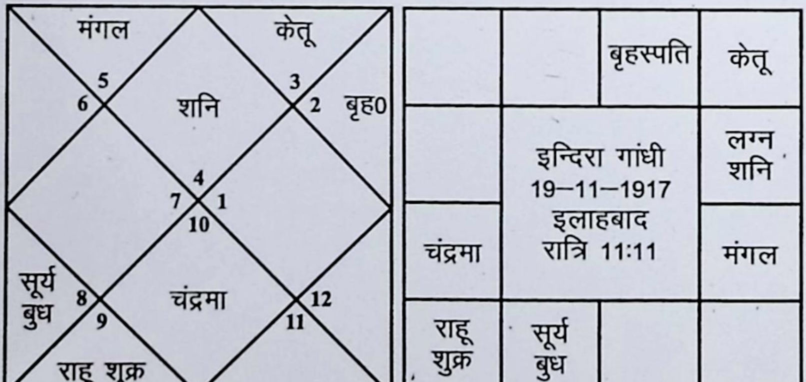

लग्न	24:18	सूर्य	04:07	चन्द्रमा	05:35	मंगल	16:22	बुध	13:13
बृहस्पति	15:00	शुक्र	21:00	शनि	21:47	राहू	09:12	केतु	09:12

प्रथम चरणः

सर्वप्रथम आगे दिये गए प्रारुप के अनुसार प्रत्येक ग्रह के लिए एक, कुल आठ रिक्त तालिकायें बनाकर तैयार कर लें। यह तालिकायें प्रस्तार वर्ग कहलाती हैं।

राशि / कुल	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शनि												
बृहस्पति												
मंगल												
सूर्य												
शुक्र												
बुध												
चन्द्रमा												
लग्न												
कुल												

जन्मपत्रिका के अनुसार, ग्रह जिन–जिन राशियों में स्थित हों, उन–उन राशियों को विशेष चिन्ह द्वारा चिन्हित करें।

स्वर्गीय श्रीमति इन्दिरा गांधी की जन्मपत्रिका में शनि कर्क राशि में स्थित है, अतः शनि के सामने कर्क राशि के खाने को विशेष चिन्ह द्वारा चिन्हिंत किया जाएगा। यह विशेष चिन्ह यह दर्शायेगा कि गणना कहां से प्रारम्भ करनी है। इसी प्रकार बृहस्पति के लिए, बृहस्पति के सामने वृषभ राशि के खाने को चिन्हित करना है। इसी प्रकार मंगल के लिए मंगल के सामने सिंह राशि के खाने को, सूर्य के लिए, सूर्य के सामने वृश्चिक राशि के खने को, शुक्र के लिए शुक्र के सामने धनु राशि के खाने को, बुध के लिए बुध के सामने वृश्चिक राशि के खाने को और चन्द्रमा के लिए चन्द्रमा के सामने मकर राशि के खाने को चिन्हित करना है। लग्न के लिए लग्न के सामने कर्क राशि के खाने को विशेष चिन्ह से चिन्हित करना है। उपरोक्त कार्य करने से जो तालिका निर्मित होगी उसको नीचे दिखाया

गया है। इस प्रकार प्रत्येक ग्रह के लिए एक–एक अर्थात कुल सात तालिकायें बनती हैं जो सम्बन्धित ग्रह का प्रस्थारक वर्ग कहलाती हैं और आठवीं तालिका का प्रयोग सर्वाष्टक वर्ग के लिए होगा।

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
शनि				*									
बृहस्पति		*											
मंगल					*								
सूर्य								*					
शुक्र									*				
बुध								*					
चन्द्रमा										*			
लग्न				*									
कुल													

उपरोक्त प्रकार से तालिकायें तैयार करने के पश्चात् प्रत्येक ग्रह द्वारा प्रदत्त बिन्दु अर्थात शुभ अंक को बिन्दुओं के रुप में उस ग्रह के प्रस्थारक वर्ग तालिका में दर्शायेंगे।

नियमः प्रत्येक ग्रह अपनी मूल स्थिति के भाव से आगे के भावों में अंक प्रदत्त करता है, अतः प्रत्येक ग्रह की गणना प्रस्तार वर्ग में विशेष चिन्ह द्वारा दर्शाये उसके स्थान से होती है।

सूर्य का प्रस्थारक वर्ग तालिका 2.1

उपरोक्त प्रकार से निर्मित तालिकाओं में से एक तालिका में सूर्य के प्रस्थारकवर्ग को बनाना है। **सारिणी 1.1** के अनुसार सूर्य के संदर्भ में, सूर्य के स्वयं, अन्य छः ग्रहों और लग्न द्वारा द्वारा दिये गये बिन्दुओं को उन–उन ग्रहों के सामने के खानों में अंकित करना है। यहां यह स्मरण रखना अतिआवश्यक है कि ग्रह द्वारा दिये गये शुभ बिन्दुओं की गणना उसकी मूल स्थिति अर्थात जिसको हमने विशेष चिन्ह द्वारा दर्शाया है, वहां से आरम्भ करनी है। सूर्य की सारिणी में शनि, अपने मूल स्थान से 1, 2, 4, 7, 8, 9, 10, 11 स्थानों में शुभ बिन्दु देता है। चूंकि जन्मपत्रिका में शनि कर्क राशि में स्थित है अतः गणना कर्क राशि से प्रारम्भ होगी और प्रथम बिन्दु कर्क राशि में, दूसरा कर्क से द्वितीय स्थान अर्थात सिंह

राशि में, तीसरा बिन्दु कर्क राशि से चतुर्थ स्थान अर्थात तुला राशि में, चतुर्थ बिन्दु कर्क से सप्तम स्थान अर्थात मकर राशि में, पंचम बिन्दु कर्क से अष्टम स्थान अर्थात कुंभ राशि में, षष्टम बिन्दु कर्क से नवम स्थान अर्थात मीन राशि में, सप्तम बिन्दु कर्क से दशम स्थान अर्थात मेष राशि में और अष्टम बिन्दु कर्क राशि से एकादश स्थान अर्थात वृषभ राशि में अंकित होगा।

इसी प्रकार अगली कक्ष्या में सूर्य के संदर्भ में बृहस्पति द्वारा प्रदित अंको को बृहस्पति द्वारा ग्रहीत राशि वृषभ राशि से 5, 6, 9 और 11 स्थानों की राशियों में अंकित करना है। चूंकि बृहस्पति वृषभ राशि में है इसलिए गणना वृषभ से प्रारंभ होनी है और प्रथम बिन्दु वृषभ से पंचम स्थान अर्थात कन्या राशि में, द्वितीय बिन्दु वृषभ से षष्टम स्थान अर्थात तुला राशि में, तृतीय बिन्दु वृषभ से नवम स्थान अर्थात मकर राशि में तथा चतुर्थ बिन्दु वृषभ से एकादश स्थान अर्थात मीन राशि में अंकित करना है।

इसी प्रकार, अन्य ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दुओं को उनके सामने अंकित करने से सूर्य का प्रस्थारक वर्ग तैयार हो जायेगा जो नीचे तालिका 2.1 के अनुसार होगा।

तालिका 2.1 (सूर्य का प्रस्थारक वर्ग)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
शनि 1,2,4,7,8,9,10,11	0	0		*0	0		0			0	0	0	8
बृहस्पति 5,6,9,11		*				0	0			0		0	4
मंगल 1,2,4,7,8,9,10,11	0	0	0		0*	0		0			0	0	8
सूर्य 1,2,4,7,8,9,10,11		0	0	0	0	0	·	*0	0		0		8
शुक्र 6,7,12		0	0					0	*				3
बुध 3,5,6,9,10,11,12	0			0	0	0	0	*		0		0	7
चन्द्र 3,6,10,11			0				0	0		*		0	4
लग्न 3,4,6,10,11,12	0	0	0	*		0	0		0				6
कुल	4	5	5	3	4	5	5	4	2	3	3	5	48

उपरोक्त प्रस्थारकवर्ग तालिका में प्राप्त प्रत्येक राशि के बिन्दुओं के कुल योग को, जन्मपत्रिका के उसी राशि के भाव में दर्शायेंगे। इस प्रकार से प्राप्त वर्ग, सूर्य का भिन्नाष्टक वर्ग कहलायेगा।

कुण्डली संख्या 2.1

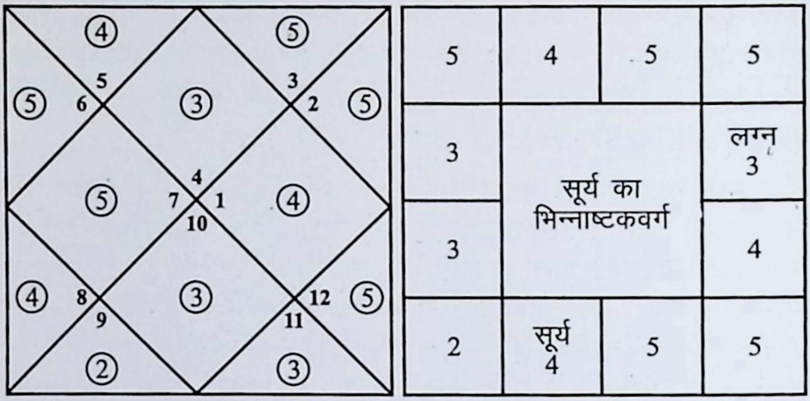

चन्द्रमा का प्रस्थारक वर्ग

चन्द्रमा के संदर्भ में अन्य ग्रहों एवं लग्न द्वारा प्रदत्त बिन्दुओं को सारिणी 1.2 में दिया गया है। इस सारिणी की सहायता से पूर्व में वर्णित विधि अनुसार ही चन्द्रमा का प्रस्थारक वर्ग बनेगा।

विशेषः शुभ बिन्दु दर्शाने से पहले ग्रहों द्वारा गृहीत राशियो एवं लग्न को विशेष चिन्ह से चिन्हित करें क्योंकि यह चिन्ह ग्रहों द्वारा प्रदत्त शुभ बिन्दुओं की गणना का प्रारम्भ भाव होता है।

प्रथम कक्ष्या शनि सेः चन्द्रमा के संदर्भ में प्रथम कक्ष्या में शनि से 3, 5, 6 एवं 11वें स्थान में प्रदत्त बिन्दुओं को जन्मपत्रिका में शनि की स्थिति अर्थात कर्क राशि से गणना प्रारभं करके अंकित किया जायेगा। प्रथम बिन्दु कर्क राशि से तृतीय स्थान अर्थात कन्या राशि में, दूसरा बिन्दु कर्क राशि से पंचम स्थान अर्थात वृश्चिक राशि में, तृतीय बिन्दु कर्क राशि से षष्टम स्थान अर्थात धनु राशि में और चतुर्थ बिन्दु कर्क राशि से एकादश स्थान अर्थात वृषभ राशि में अंकित किया जायेगा।

द्वितीय कक्ष्या बृहस्पतिः चन्द्रमा के संदर्भ में द्वितीय कक्ष्या में बृहस्पति 1, 4, 7, 8, 10 एवं 11वें स्थान में शुभ बिन्दु देता है। अतः चन्द्रमा के प्रस्थारक वर्ग में बृहस्पति के सामने जन्मपत्रिका में बृहस्पति की मूल स्थिति अर्थात वृषभ राशि से इन स्थानों में आने वाली राशियों को अंकित किया जायेगा। इस प्रकार अंकित करने से बृहस्पति की कक्ष्या में वृषभ, सिंह, वृश्चिक, धनु, कुंभ और मीन राशियों में शुभ अंक या बिन्दु आते हैं।

तृतीय कक्ष्या मंगलः चन्द्रमा के संदर्भ में मंगल अपने से 2, 3, 5, 6, 10 एवं 11वें भाव में बिन्दु प्रदत्त करता है। अतः मंगल द्वारा गृहीत सिंह राशि से गणना प्रारम्भ होगी और सम्बन्धित भावों में बिन्दु आएंगे।

इसी प्रकार, अन्य ग्रहों द्वारा प्रदित बिन्दुओं को उनके सामने अंकित करने से चन्द्रमा का प्रस्थारक वर्ग तैयार हो जायेगा जो आगे तालिका 2.2 के अनुसार होगा।

तालिका संख्या 2.2 (चन्द्रमा का प्रस्थारक वर्ग)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
शनि 3,5,6,11		0		*		0		0	0				4
वृह0 1,4,7,8,10,11,12	0	0*			0			0	0		0	0	7
मंगल 2,3,5,6,9,10,11	0	0	0		*	0	0		0	0			7
सूर्य 3,6,7,8,10,11	0	0	0		0	0		*		0			6
शुक्र 3,4,5,7,9,10,11	0		0		0	0	0		*		0	0	7
बुध 1,3,4,5,7,8,10,11		0	0		0	0		0*		0	0	0	8
चन्द्रमा 1,3,6,7,10,11			0	0			0	0		0*		0	6
लग्न 3,6,10,11	0	0		*		0			0				4
कुल	5	6	5	1	4	6	3	4	4	4	3	4	49

चन्द्रमा के प्रस्थारकवर्ग तालिका में प्राप्त प्रत्येक राशि के कुल बिन्दुओं को, जन्मपत्रिका में उसी राशि के भाव में लिखेंगे और इस प्रकार चन्द्रमा का भिन्नाष्टक वर्ग तैयार होगा।

कुण्डली संख्या 2.2

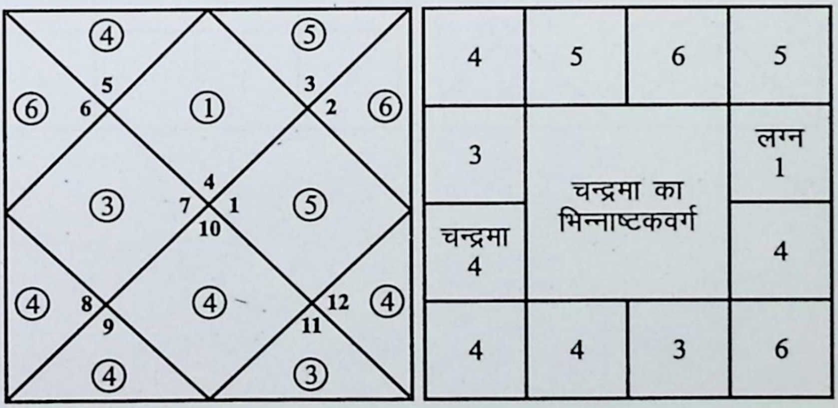

इसी प्रकार अन्य ग्रहों की प्रस्थारक वर्ग की तालिकाओं से उनके भिन्नाष्टकवर्ग बनेंगे। शेष ग्रहों की प्रस्थारकवर्ग तालिकायें और भिन्नाष्टकवर्ग आगे दिये गयें हैं।

तालिका संख्या 2.3 (मंगल का प्रस्थारक वर्ग)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
शनि 1,4,7,8,9,10,11	0	0		0*			0			0	0	0	7
बृहस्पति 6,10,11,12	0	*					0				0	0	4
मंगल 1,2,4,7,8,10,11		0	0		0*	0		0			0	0	7
सूर्य 3,5,6,10,11	0				0	0		*		0		0	5
शुक्र 6,8,11,12		0		0			0	0	*				4
बुध 3,5,6,11	0					0		*		0		0	4
चन्द्रमा 3,6,11			0					0		*		0	3
लग्न 1,3,6,10,11	0	0		0*		0			0				5
कुल	5	4	2	3	2	4	3	3	1	3	3	6	39

कुण्डली संख्या 2.3

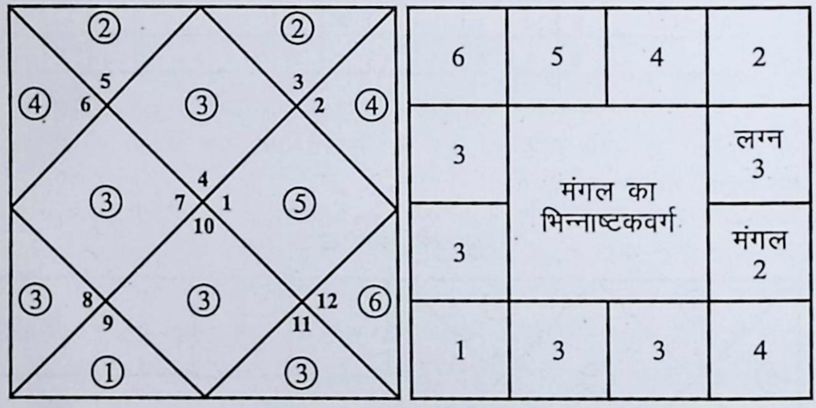

तालिका संख्या 2.4 (बुध का प्रस्थारक वर्ग)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
शनि 1,2,4,7,8,9,10,11	0	0		0*	0		0			0	0	0	8
बृहस्पति 6,8,11,12	0	*					0		0			0	4
मंगल 1,2,4,7,8,9,10,11	0	0	0		0*	0		0			0	0	8
सूर्य 5,6,9,11,12	0			0		0	0	*				0	5
शुक्र 1,2,3,4,5,8,9,11	0			0	0		0		0*	0	0	0	8
बुध 1,3,5,6,9,10,11,12	0			0	0	0	0	0*		0		0	8
चन्द्रमा 2,4,6,8,10,11	0		0		0		0	0		*	0		6
लग्न 1,2,4,6,8,10,11	0	0		0*	0		0		0		0		7
कुल	8	3	2	5	6	3	7	3	3	3	5	6	54

कुण्डली संख्या 2.4

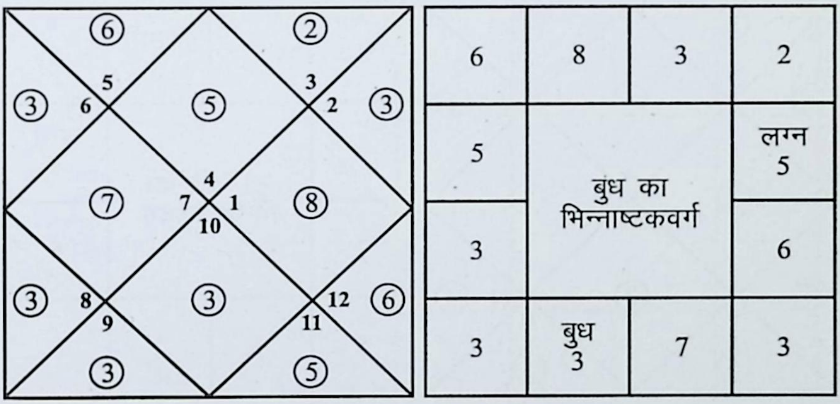

तालिका संख्या 2.5 (बृहस्पति का प्रस्थारक वर्ग)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
शनि 3,5,6,12			0	*		0		0	0				4
बृह0 1,2,3,4,7,8,10,11		0*	0	0	0			0	0		0	0	8
मंगल 1,2,4,7,8,10,11		0	0		0*	0		0			0	0	7
सूर्य 1,2,3,4,7,8,9,10,11		0	0	0	0	0		0*	0	0	0		9
शुक्र 2,5,6,9,10,11	0	0			0	0	0		*	0			6
बुध 1,2,4,5,6,9,10,11	0			0	0	0		0*	0		0	0	8
चन्द्रमा 2,5,7,9,11		0		0		0		0		*	0		5
लग्न 1,2,4,5,6,7,9,10,11	0	0		0*	0		0	0	0	0		0	9
कुल	3	6	4	5	6	6	2	7	5	3	5	4	56

कुण्डली संख्या 2.5

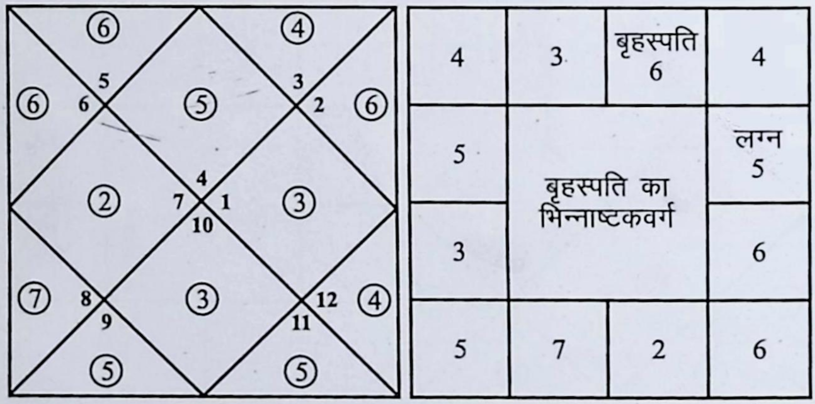

तालिका संख्या 2.6 (शुक्र का प्रस्थारक वर्ग)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
शनि 3,4,5,8,9,10,11	0	0		*		0	0	0			0	0	7
बृहस्पति 5,8,9,10,11		*				0			0	0	0	0	5
मंगल 3,5,6,9,11,12	0		0	0	*		0		0	0			6
सूर्य 8,11,12			0			0	0	*					3
शु0 1,2,3,4,5,8,9,10,11	0			0	0	0	0		0*	0	0	0	9
बुध 3,5,6,9,11	0			0		0		*		0		0	5
चं0 1,2,3,4,5,8,9,11,12	0	0			0	0		0	0	0*	0	0	9
लग्न 1,2,3,4,5,8,9,11		0		0*	0	0	0	0			0	0	8
कुल	5	3	2	4	3	7	5	3	4	5	5	6	52

कुण्डली संख्या 2.6

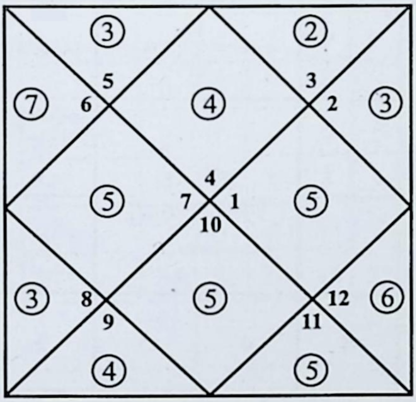

6	5	3	2
5	शुक्र का भिन्नाष्टकवर्ग		लग्न 4
5			3
शुक्र 4	3	5	7

तालिका संख्या 2.7 (शनि का प्रस्थारक वर्ग)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
शनि 3,5,6,11		0		*		0		0	0				4
बृहस्पति 5,6,11,12	0	*				0	0					0	4
मंगल 3,5,6,10,11,12		0	0	0	*		0		0	0			6
सूर्य 1,2,4,7,8,10,11		0	0		0	0		0*	0		0		7
शुक्र 6,11,12		0					0	0	*				3
बुध 6,8,9,10,11,12	0		0	0	0	0	0	*					6
चन्द्रमा 3,6,11			0					0		*		0	3
लग्न 1,3,4,6,10,11	0	0		0*		0	0		0				6
कुल	3	5	4	3	2	5	5	4	4	1	1	2	39

कुण्डली संख्या 2.7

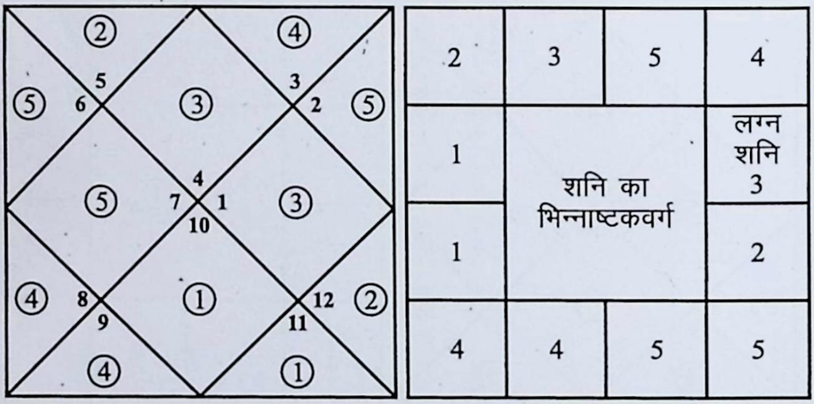

सर्वाष्टकवर्ग का प्रस्तार चक्रः

इस प्रकार प्रस्थारकवर्ग द्वारा तैयार भिन्नाष्टक वर्गो से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक राशि में ग्रहों ने कितने–कितने बिन्दु प्रदान किये हैं। अब प्रत्येक ग्रह के प्रस्थार वर्ग में विभिन्न राशियों द्वारा प्राप्त अंकों को उस ग्रह के सामने एक अन्य तालिका में लिखेंगे जो सर्वाष्टकवर्ग का प्रस्थारक चक्र कहलायेगा और इस तालिका में प्राप्त प्रत्येक राशि में प्राप्त बिन्दुओं की कुल संख्या को जन्मपत्रिका में लिखकर सर्वाष्टकवर्ग तैयार करेंगे।

तालिका संख्या 2.8 (सर्वाष्टकवर्ग अथवा समुदायाष्टक वर्ग चक्र)

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
सूर्य	4	5	5	3	4	5	5	4*	2	3	3	5	**48**
चन्द्रमा	5	6	5	1	4	6	3	4	4	4*	3	4	**49**
मंगल	5	4	2	3	2*	4	3	3	1	3	3	6	**39**
बुध	8	3	2	5	6	3	7	3*	3	3	5	6	**54**
बृहस्पति	3	6*	4	5	6	6	2	7	5	3	5	4	**56**
शुक्र	5	3	2	4	3	7	5	3	4*	5	5	6	**52**
शनि	3	5	4	3*	2	5	5	4	4	1	1	2	**39**
कुल	**33**	**32**	**24**	**24**	**27**	**36**	**30**	**28**	**23**	**22**	**25**	**33**	**337**

कुण्डली संख्या 2.8

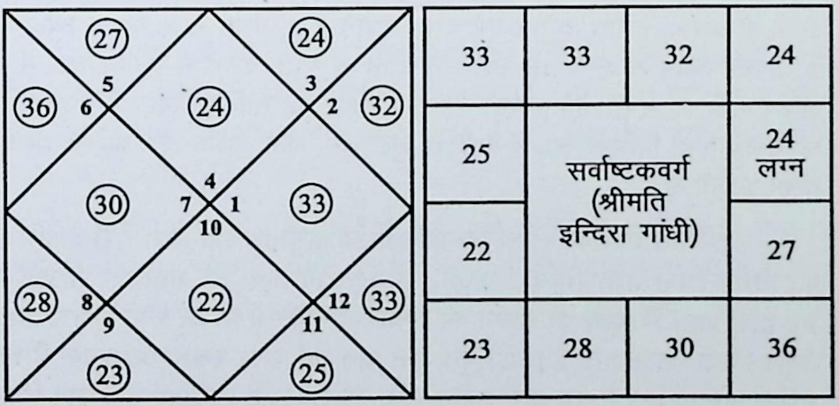

ग्रहों का भिन्नाष्टकवर्ग बनाये बिना, सीधे सर्वाष्टक वर्ग तैयार करने की विधिः

कभी–कभी किसी कार्य विशेष हेतु केवल सर्वाष्टकवर्ग की ही आवश्यकता होती है। अतः भिन्नाष्टकवर्ग तैयार किये बिना भी आगे दी गई *सारिणी 2.9* की सहायता से सीधे सर्वाष्टकवर्ग तैयार किया जा सकता है।

तालिका संख्या 2.9

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
शनि	3	2	4	4	4	3	3	4	4	4	6	1	**42**
बृहस्पति	2	1	1	2	3	4	2	4	2	4	7	4	**36**
मंगल	4	5	3	4	3	3	4	4	4	6	7	2	**49**
सूर्य	3	3	3	3	2	3	4	5	3	5	7	2	**43**
शुक्र	2	3	3	3	4	4	2	3	4	3	6	3	**40**
बुध	3	1	5	2	6	6	1	2	5	5	7	3	**46**
चन्द्रमा	2	3	5	2	2	5	2	2	2	3	7	1	**36**
लग्न	5	3	5	5	2	6	1	2	2	6	7	1	**45**
कुल	**24**	**21**	**29**	**25**	**26**	**34**	**19**	**26**	**26**	**36**	**54**	**17**	**337**

उपरोक्त तालिका में ग्रह द्वारा विभिन्न भावों में प्रदत्त कुल बिन्दुओं को, संख्या के रूप में दर्शाया गया है। इससे यह स्पष्ट है कि सूर्य अपने संदर्भ में अपने से प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान में 3, पंचम में 2, षष्टम स्थान में 3, सप्तम स्थान में 4, अष्टम स्थान में 5, नवम में 3, दशम में 5, एकादश में 7 और द्वादश स्थान में 2 बिन्दु देता है। इसी प्रकार यह तालिका अन्य ग्रहों के द्वारा अपने स्थान से विभिन्न स्थानों में प्रदत्त कुल शुभ अंको अथवा बिन्दुओं को संख्या द्वारा दर्शाती है।

एक रिक्त तालिका लेकर जन्मपत्रिका के अनुसार ग्रहों द्वारा गृहीत राशियों को विशेष चिन्ह द्वारा चिन्हित करके, उपरोक्त तालिका की सहायता से प्रत्येक ग्रह द्वारा प्रदत्त बिन्दुओं की संख्या को सम्बन्धित पंक्ति में भरकर सीधे सर्वाष्टकवर्ग तैयार किया जा सकता है। यहां पुनः इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि गणना जन्मपत्रिका में ग्रह द्वारा गृहीत राशि, जिसको कि तालिका में, विशेष चिन्ह द्वारा दर्शाया गया है, वहां से ही प्रारम्भ करनी है।

उदाहरण जन्मपत्रिका में सूर्य के वृश्चिक राशि में स्थित होने के कारण सूर्य की पंक्ति में प्रथम भाव वृश्चिक ही होगा। इसलिए, तालिका संख्या 2.8 के अनुसार सूर्य से प्रथम स्थान अर्थात वृश्चिक राशि में 3 बिन्दु, द्वितीय स्थान अर्थात धनु राशि में भी 3 बिन्दु, तृतीय स्थान अर्थात मकर राशि में भी 3 बिन्दु, चतुर्थ स्थान अर्थात कुंभ राशि में भी 3 बिन्दु, पंचम राशि अर्थात मीन राशि में 2 बिन्दु, षष्टम स्थान अर्थात मेष राशि में 3 बिन्दु, सप्तम स्थान अर्थात वृषभ राशि में 4 बिन्दु, अष्टम स्थान अर्थात मिथुन राशि में 5 बिन्दु, नवम स्थान अर्थात कर्क राशि में 3 बिन्दु, दशम स्थान अर्थात सिंह राशि में 5 बिन्दु, एकादश स्थान अर्थात कन्या राशि में 7 बिन्दु और द्वादश स्थान अर्थात तुला राशि में 2 बिन्दु होंगें।

इसी प्रकार चन्द्रमा, जो जन्मपत्रिका में मकर राशि में स्थित है और तालिका में मकर राशि की पंक्ति में विशेष चिन्ह द्वारा दिखाया गया है, से गणना प्रारभं करके उससे मकर राशि में 2, कुंभ में 3, मीन में 5, मेष में 2 आदि, इसी प्रकार तालिका के अनुसार बिन्दुओं को, संख्या के रूप में सभी राशियों में लिखा जायेगा।

उदाहरण जन्मपत्रिका में मंगल सिंह राशि में है। अतः सिंह राशि प्रथम स्थान गिना जायेगा और तालिका के अनुसार उसमें 4 बिन्दु, द्वितीय स्थान कन्या में 5 बिन्दु, तृतीय स्थान तुला राशि में 3 बिन्दु, चतुर्थ स्थान वृश्चिक राशि में 4 बिन्दु, पंचम एवं षष्टम स्थानों अर्थात धनु एवं मकर राशियों में 3–3 बिन्दु, सप्तम–अष्टम–नवम स्थानों अर्थात कुंभ, मीन एवं मेष राशियों में 4–4 बिन्दु, दशम स्थान वृषभ राशि में 6 बिन्दु, एकादश स्थान मिथुन राशि में 7 बिन्दु और द्वादश स्थान कर्क राशि में 2 बिन्दु, संख्या के रूप में अंकित किये जायेंगे।

जन्मपत्रिका में बुध वृश्चिक राशि में है, अतः वृश्चिक राशि को प्रथम स्थान गिना जायेगा, जिसमें 3 बिन्दु, द्वितीय स्थान धनु में 1 बिन्दु, तृतीय स्थान मकर में 5 बिन्दु, चतुर्थ स्थान कुंभ में 2 बिन्दु आदि, इसी प्रकार अन्य राशियों में अंको द्वारा, बिन्दु अंकित किये जायेंगे।

बृहस्पति वृषभ राशि में स्थित है, अतः वृषभ राशि को प्रथम स्थान गिनकर तालिका अनुसार उसमें 2 बिन्दु, द्वितीय स्थान मिथुन राशि में 1 बिन्दु अंकित किया जायेगा और इसी प्रकार अन्य राशियों में, अंको द्वारा, बिन्दु अंकित किये जायेंगे।

शुक्र धनु राशि में है अतः धनु राशि प्रथम स्थान गिना जायेगा जिसमें तालिका के अनुसार 2 बिन्दु, होंगे। अगले स्थान मकर राशि में 3 बिन्दु, तृतीय स्थान कुंभ राशि में भी 3 बिन्दु अंकित किये जायेंगें और इसी प्रकार तालिका के अनुसार, अन्य राशियों में भी अंको द्वारा, बिन्दु अंकित किये जायेंगे।

जन्मपत्रिका में शनि कर्क राशि में है, अतः कर्क राशि को प्रथम स्थान गिनकर तालिका के अनुसार उसमें 3 बिन्दु और अन्य स्थानों में तालिका के अनुसार बिन्दुओं को, संख्या द्वारा अंकित किया जायेगा।

इस प्रकार हमारे पास *तालिका संख्या 2.9* के अनुसार ही प्रत्येक राशि के बिन्दुओं की संख्या वाली तालिका आ जाती है। सीधे सर्वाष्टकवर्ग बनाने की विधि को समुदाय अष्टकवर्ग भी कहा जाता है।

तालिका संख्या 2.9 के द्वारा सीधे सर्वाष्टक वर्ग

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
शनि	4	6	1	3*	2	4	4	4	3	3	4	4	42
बृहस्पति	4	2*	1	1	2	3	4	2	4	2	4	7	36
मंगल	4	6	7	2	4*	5	3	4	3	3	4	4	49
सूर्य	3	4	5	3	5	7	2	3*	3	3	3	2	43
शुक्र	4	4	2	3	4	3	6	3	2*	3	3	3	40
बुध	6	1	2	5	5	7	3	3*	1	5	2	6	46
चन्द्रमा	2	2	5	2	2	2	3	7	1	2*	3	5	36
लग्न	6	7	1	5*	3	5	5	2	6	1	2	2	45
कुल	33	32	24	24	27	36	30	28	23	22	25	33	337

विशेषः सर्वाष्टकवर्ग की यह सारिणी केवल प्रत्येक ग्रह द्वारा प्रदित कुल शुभ अंकों की संख्या का योग ज्ञात करने के लिए ही प्रयोग में आती है। किसी ग्रह विशेष अथवा सभी ग्रहों द्वारा प्रदत्त शुभ अंकों को जानने के लिए पूर्व वर्णित विधि से ग्रहों के अपने–अपने भिन्नाष्टक वर्ग बनाने आवश्यक हैं।

अध्याय 3

शोधन

प्रत्येक ग्रह के भिन्नाष्टक वर्ग में प्राप्त अंकों का दो प्रकार से शोधन किया जाता है। इन शोधनों का प्रयोग जन्मपत्रिका के जातक की आयु गणना एवं अन्य विषयों के फलित के लिए किस प्रकार से किया जाता है उसका विवरण आगे के अध्यायों में दिया गया है।

इन शोधन को **त्रिकोण शोधन अथवा प्रथम शोधन और एकाधिपत्य शोधन अथवा द्वितीय शोधन** के नामों से जाना जाता है।

यह बात याद रखने वाली है कि इसी क्रमानुसार ही शोधन होता है अर्थात पहले त्रिकोण शोधन होता है एवं उसके पश्चात ही एकाधिपत्य शोधन होता है और इनके इस क्रम को किसी भी स्थिति में परिवर्तित नहीं किया जाता है। सर्वप्रथम दोनों शोधन को करने की विधि को समझते हैं।

त्रिकोण शोधन अर्थात प्रथम शोधनः

भिन्नाष्टक वर्ग में प्राप्त अंकों का सबसे पहले त्रिकोण शोधन किया जाता है। जन्मपत्रिका की सभी बारह राशियों को तत्त्वों के आधार पर अग्नि, पृथ्वी, वायु एवं जल, चार वर्गों में बांटा गया है। इस प्रकार से प्रत्येक वर्ग में तीन–तीन राशियाँ आती हैं जो आपस में त्रिकोण भाव की राशियाँ बनती हैं। चारों वर्गों की राशियाँ इस प्रकार से हैं:

1. अग्नि तत्त्व राशियाँ – मेष, सिंह और धनु अर्थात राशि संख्या 1, 5 और 9
2. पृथ्वी तत्त्व राशियाँ – वृषभ, कन्या और मकर अर्थात राशि संख्या 2, 6 और 10
3. वायु तत्त्व राशियाँ – मिथुन, तुला और कुंभ अर्थात राशि संख्या 3, 7 और 11
4. जल तत्त्व राशियाँ – कर्क, वृश्चिक और मीन अर्थात राशि संख्या 4, 8 और 12

नियम

1. यदि किसी भी तत्त्व की तीनों राशियों में प्राप्तांकों की संख्या एक समान नहीं है तो सबसे कम संख्या को, तीनों राशियों की संख्याओं से अलग–अलग घटायें। शेष बची संख्याओं को सम्बन्धित राशि वाले स्थान में लिखें। (यह नियम पराशर के मतानुसार है जिसको इस पुस्तक में भी लिया गया है। इस नियम के विषय में ज्योतिषाचार्यों में कुछ मतान्तर है जिसकी चर्चा अध्याय संख्या 22 अष्टकवर्ग में मतान्तर के अन्तर्गत की गई है।)
2. यदि तीनों राशियों में से किसी भी एक राशि को शून्य अंक प्राप्त हैं तो उस तत्त्व की राशियों का शोधन नहीं होगा।
3. यदि तीनों राशियों में से किन्ही दो राशियों के प्राप्तांक शून्य हैं तो तीसरी राशि का अंक भी समाप्त होकर शून्य ही हो जाएगा।
4. यदि तीनों राशियों के अंक समान हैं तो शोधन के पश्चात तीनों राशियों के अंक 0 हो जांएगे।

विशेषः नियम संख्या 3 के संदर्भ में मतान्तर है लेकिन हम सर्वाधिक स्वीकार्य मत की ही अनुशंसा करेगे और उसी को लेकर आगे चलेंगे।

उपरोक्त नियमों को उदाहरण अर्थात स्वर्गीय इन्दिरा गांधी की जन्मपत्रिका में लगाकर प्रथम शोधन अर्थात त्रिकोण शोधन करेगें।

सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग का त्रिकोण शोधन अर्थात प्रथम शोधन

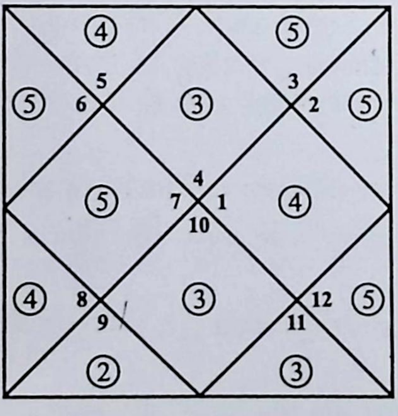

5	4	5	5
3	शोधन से पूर्व सूर्य का भिन्नाष्टकवर्ग		लग्न 3
3			4
2	4	5	5

1. अग्नि तत्त्व राशियों का शोधन

	मेष	सिंह	धनु
प्राप्त बिन्दु	4	4	2
(–) निम्नतम अंक	2	2	2
शोधन के बाद प्राप्तांक	2	2	0

2. पृथ्वी तत्त्व राशियों का शोधन

	वृषभ	कन्या	मकर
प्राप्त बिन्दु	5	5	3
(–) निम्नतम अंक	3	3	3
शोधन के बाद प्राप्तांक	2	2	0

3. वायु तत्त्व राशियों का शोधन

	मिथुन	तुला	कुंभ
प्राप्त बिन्दु	5	5	3
(–) निम्नतम अंक	3	3	3
शोधन के बाद प्राप्तांक	2	2	0

4. जल तत्त्व राशियों का शोधन

	कर्क	वृश्चिक	मीन
प्राप्त बिन्दु	3	4	5
(–) निम्नतम अंक	3	3	3
शोधन के बाद प्राप्तांक	0	1	2

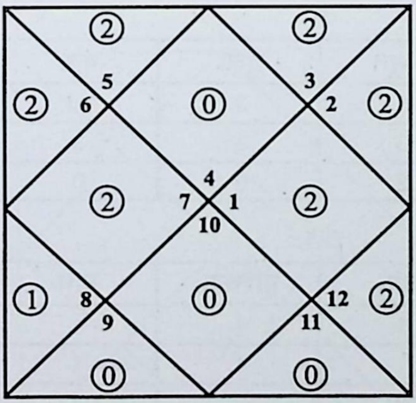

2	2	2	2
0	त्रिकोण शोधन के पश्चात् सूर्य का भिन्नाष्टकवर्ग		लग्न 0
0			2
0	1	2	2

चन्द्रमा के भिन्नाष्टकवर्ग का त्रिकोण शोधन अर्थात प्रथम शोधन

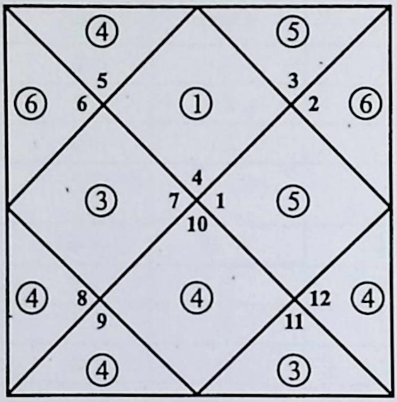

1. अग्नि तत्त्व राशियों का शोधन

	मेष	सिंह	धनु
प्राप्त बिन्दु	5	4	4
(–) निम्नतम अंक	4	4	4
शोधन के बाद प्राप्तांक	1	0	0

2. पृथ्वी तत्त्व राशियों का शोधन

	वृषभ	कन्या	मकर
प्राप्त बिन्दु	6	6	4
(–) निम्नतम अंक	4	4	4
शोधन के बाद प्राप्तांक	2	2	0

3. वायु तत्त्व राशियों का शोधन

	मिथुन	तुला	कुंभ
प्राप्त बिन्दु	5	3	3
(–) निम्नतम अंक	3	3	3
शोधन के बाद प्राप्तांक	2	0	0

4. जल तत्त्व राशियों का शोधन

	कर्क	वृश्चिक	मीन
प्राप्त बिन्दु	1	4	4
(–) निम्नतम अंक	1	1	1
शोधन के बाद प्राप्तांक	0	3	3

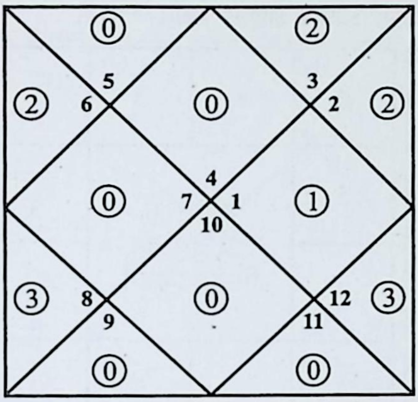

3	1	2	2
0	त्रिकोण शोधन के पश्चात् चन्द्रमा का भिन्नाष्टकवर्ग		लग्न 0
0			0
0	3	0	2

इसी प्रकार अन्य ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्ग में शोधन करने पर स्थित इस प्रकार होगी:

मंगल के भिन्नाष्टकवर्ग का त्रिकोण शोधन अर्थात प्रथम शोधन

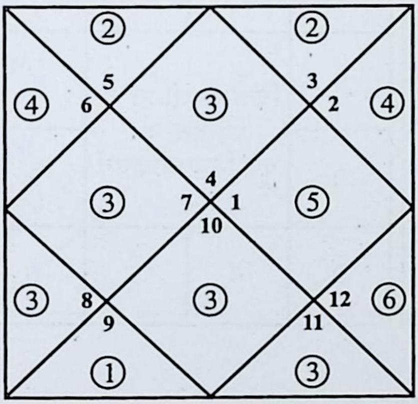

6	5	4	2
3	शोधन से पूर्व मंगल का भिन्नाष्टकवर्ग		लग्न 3
3			2
1	3	3	4

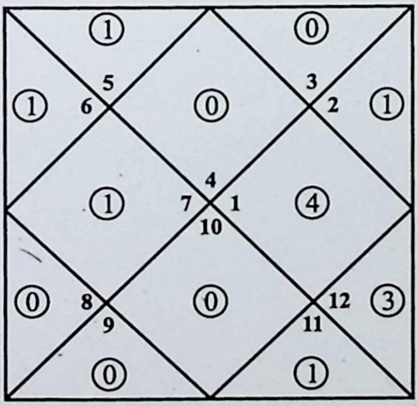

3	4	1	0
1	त्रिकोण शोधन के पश्चात् मंगल का भिन्नाष्टकवर्ग		लग्न 0
0			1
0	0	1	1

बुध के भिन्नाष्टकवर्ग का त्रिकोण शोधन अर्थात प्रथम शोधन

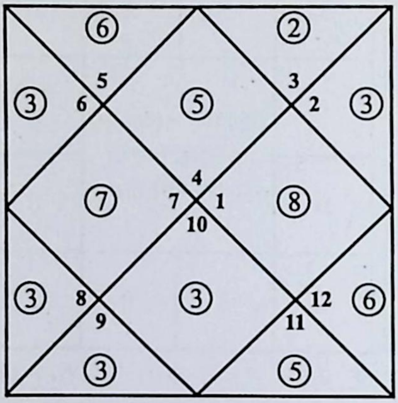

6	8	3	2
5	शोधन से पूर्व बुध का भिन्नाष्टकवर्ग		लग्न 5
3			6
3	3	7	3

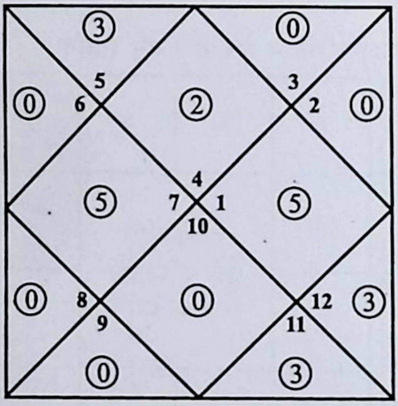

3	5	0	0
3	त्रिकोण शोधन के पश्चात् बुध का भिन्नाष्टकवर्ग		लग्न 2
0			3
0	0	5	0

बृहस्पति के भिन्नाष्टकवर्ग का त्रिकोण शोधन अर्थात प्रथम शोधन

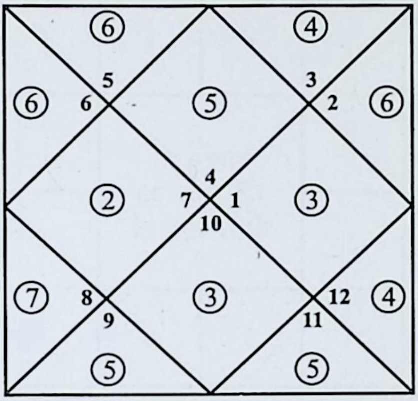

4	3	6	4
5	शोधन से पूर्व बृहस्पति का भिन्नाष्टकवर्ग		लग्न 5
3			6
5	7	2	6

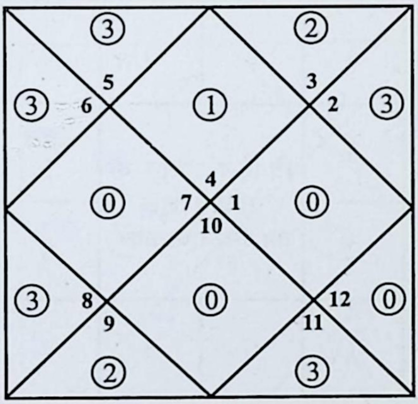

0	0	3	2
3	त्रिकोण शोधन के पश्चात् बृहस्पति का भिन्नाष्टकवर्ग		लग्न 1
0			3
2	3	0	3

शुक्र के भिन्नाष्टकवर्ग का त्रिकोण शोधन अर्थात प्रथम शोधन

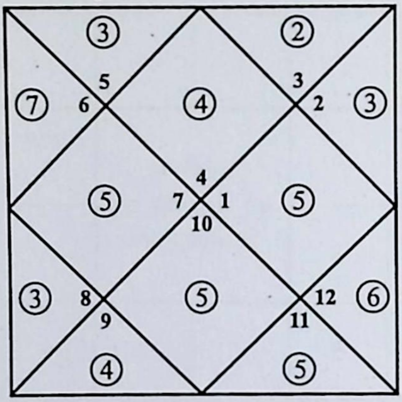

<table>
<tr><td>6</td><td>5</td><td>3</td><td>2</td></tr>
<tr><td>5</td><td colspan="2" rowspan="2">शोधन से
पूर्व शुक्र का
भिन्नाष्टकवर्ग</td><td>लग्न
4</td></tr>
<tr><td>5</td><td>3</td></tr>
<tr><td>4</td><td>3</td><td>5</td><td>7</td></tr>
</table>

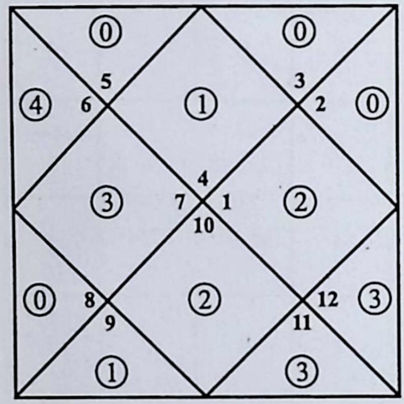

<table>
<tr><td>3</td><td>2</td><td>0</td><td>0</td></tr>
<tr><td>3</td><td colspan="2" rowspan="2">त्रिकोण शोधन के
पश्चात् शुक्र
का भिन्नाष्टकवर्ग</td><td>लग्न
1</td></tr>
<tr><td>2</td><td>0</td></tr>
<tr><td>1</td><td>0</td><td>3</td><td>4</td></tr>
</table>

शनि के भिन्नाष्टकवर्ग का त्रिकोण शोधन अर्थात प्रथम शोधन

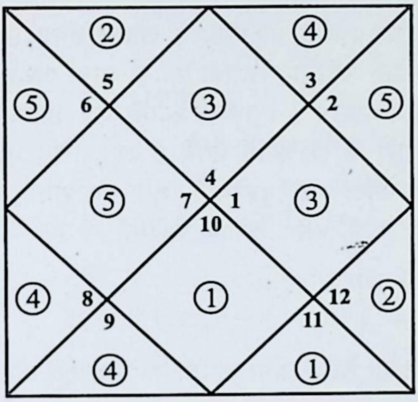

2	3	5	4
1	शोधन से पूर्व शनि का भिन्नाष्टकवर्ग		लग्न 3
1			2
4	4	5	5

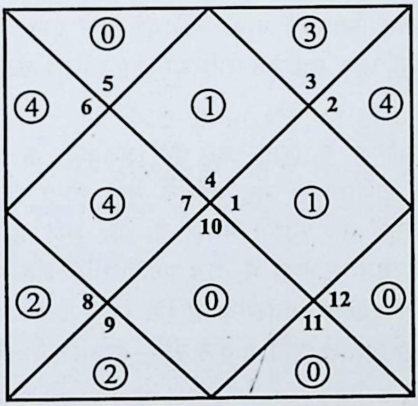

0	1	4	3
0	त्रिकोण शोधन के पश्चात् शनि का भिन्नाष्टकवर्ग		लग्न 1
0			0
2	2	4	4

एकाधिपत्य शोधन अथवा द्वितीय शोधन

त्रिकोण शोधन करने के बाद दूसरा शोधन एकाधिपत्य शोधन होता है। एकाधिपत्य का अर्थ है कि एक ही ग्रह का अधिपति अथवा स्वामी होना अर्थात यह शोधन उन दो राशियों के लिए किया जाता है जिनका स्वामी एक ही ग्रह हो। चूंकि सूर्य एवं चन्द्रमा एक–एक राशि के ही स्वामी होते हैं अतः सिंह एवं कर्क राशि में यह शोधन नहीं होता है। मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र एवं शनि, ये सभी ग्रह दो–दो राशियों के स्वामी होते हैं, अतः इनकी राशियों में ही यह शोधन होता है।

नियमः

1. सूर्य एवं चन्द्रमा एक–एक राशि के ही स्वामी होने के कारण सिंह एवं कर्क राशि का यह शोधन नहीं किया जाता है।
2. बाकी बचे पांच ग्रहों में – यदि किसी ग्रह की दोनों राशियों में से एक भी राशि में पहले से ही 0 अंक है तो उस ग्रह की राशियों का शोधन नहीं होता है।
3. यदि किसी भी ग्रह की दोनों ही राशियों में, (राहू–केतु को छोडकर), अन्य कोई भी ग्रह स्थित हों तो उन राशियों में यह शोधन नहीं होता है। उदाहरणतः मेष एवं वृश्चिक राशियों का स्वामी मंगल है और यदि इन दोनों राशियों में ग्रह स्थित हों तो इन राशियों में, यह एकाधिपति शोधन नहीं किया जाएगा। यहां यह याद रखना आवश्यक है कि राहू–केतु का ग्रह के रूप में विचार नहीं होता है अर्थात यदि केवल राहू–केतु स्थित हैं तो शोधन होगा।

   किसी भी राशि में ग्रह की उपस्थिति राशि का बली बना देती है और वह बल ही उस राशि के शोधन को रोकता है।
4. यदि किसी ग्रह की दोनों राशियों में से एक भी राशि में ग्रह है और किसी भी राशि में 0 नहीं है तो उसका शोधन इस प्रकार से होता हैः दोनों राशियों के अंकों की तीन स्थितियां हो सकती हैंः

   (अ) ग्रहरहित राशि के बिन्दु की संख्या, ग्रहयुत राशि के बिन्दुओं की संख्या से अधिक हो सकती है। ऐसी स्थिति में **ग्रहरहित राशि की संख्या को ग्रहयुत राशि की संख्या के बराबर** कर देते हैं। पुनः यह बात यहां सिद्ध होती है कि ग्रहयुत राशि बली होती है और उससे छेड़छाड़ नहीं करते हैं।

(ब) ग्रहरहित राशि के बिन्दुओं की संख्या, ग्रहयुत राशि के समान हो सकती है और

(स) ग्रहरहित राशि के बिन्दुओं की संख्या, ग्रहयुत राशि से कम हो सकती है।

इन दोनों ही स्थितियों में ग्रहयुत राशि की संख्या में शोधन नहीं होगा जिससे उस संख्या में कोई भी बदलाव नहीं आयेगा लेकिन ग्रहरहित राशि के बिन्दुओं की संख्या 0 हो जाती है।

5. यदि किसी ग्रह की दोनों राशियों में कोई भी ग्रह नहीं हो और किसी भी राशि में बिन्दुओं की संख्या 0 नहीं हो तो, शोधन इस प्रकार से होता है:

(अ) यदि दोनों राशियों की संख्या समान है तो दोनों ही 0 हो जाएंगे।

(ब) यदि दोनों की संख्या समान नहीं है तो बडी संख्या को छोटी संख्या के बराबर कर देंगे अर्थात दोनों राशियों में समान संख्या ही आयेगी।

टिप्पणी: कुछ पुस्तकों में शोधन का तरीका अन्य विधि से दिया है। यहां हम सर्वाधिक मान्य विधि का ही अनुसरण करे रहे हैं।

अब उपरोक्त नियमों के अनुसार हम स्वर्गीय इन्दिरा गांधी की जन्मपत्रिका में दूसरा शोधन अर्थात एकाधिपत्य शोधन करके, इन नियमों को व्यवहारिक रूप से समझेंगे।

स्वर्गीय श्रीमति इन्दिरा गांधी की जन्मपत्रिका में सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग में द्वितीय शोधन

2	2	2 बृहस्पति	2 केतु
0	प्रथम शोधन के पश्चात् सूर्य का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		0 लग्न Sat
0 चंद्रमा			2 मंगल
0 राहू शुक्र	1 सूर्य बुध	2	2

1. सूर्य एवं चन्द्रमा का एक–एक राशि का ही स्वामी होने के कारण कर्क और सिंह राशियों के अंको से कोई छेड़छाड़ नहीं करेंगे अर्थात उनमें यह

शोधन नहीं होगा। (नियम 1)

2. मंगल की राशियाँ मेष और वृश्चिक हैं। मेष राशि में बिन्दुओं की संख्या 2 है और वृश्चिक में 1 है। चूंकि वृश्चिक राशि में ग्रह स्थित है अतः इसमें कोई शोधन नहीं होगा अपितु मेष राशि के बिन्दुओं की संख्या वृश्चिक राशि के समान 1 हो जाएगी। (नियम 4–अ)

3. बुध की राशियाँ मिथुन और कन्या हैं। दोनों राशियों में 2–2 संख्या है और दोनों में ही कोई ग्रह स्थित नहीं है, अतः दोनों की बिन्दुओं की संख्या शोधन के बाद 0 हो जायेगी। (नियम 5–अ)

4. बृहस्पति की राशियाँ धनु और मीन हैं। धनु में बिन्दुओं की संख्या 0 है और मीन में 2 है। धनु ग्रहयुत भी है जबकि मीन ग्रहरहित है। चूंकि एक राशि के बिन्दुओं की संख्या 0 है अतः दूसरी राशि में कोई शोधन नहीं होगा। (नियम 2)

5. शुक्र की दोनों ही राशियों वृषभ एवं तुला में बिन्दुओं की संख्या 2–2 है और वृषभ ग्रहयुत है जबकि तुला ग्रहरहित। अतः वृषभ राशि की संख्या में कोई शोधन नहीं होगा लेकिन तुला राशि में शुभ बिन्दुओं की संख्या 0 हो जाएगी। (नियम 4–ब)

6. शनि की दोनों राशियों, मकर एवं कुंभ, दोनों में ही पहले से ही 0 है अतः इनमें शोधन की कोई आवश्यकता ही नहीं है।

इस प्रकार एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् सूर्य का अष्टकवर्ग निम्न प्रकार से होगा।

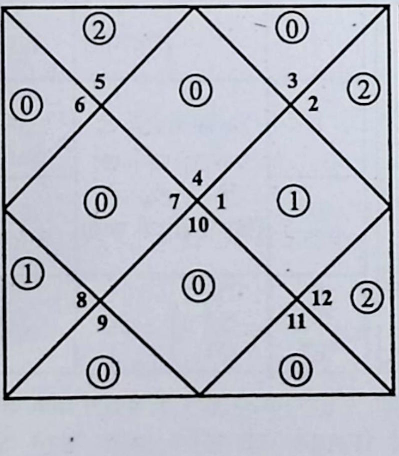

2	1	2	0
0	द्वितीय शोधन के पश्चात् सूर्य का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		लग्न 0
0			2
0	1	0	0

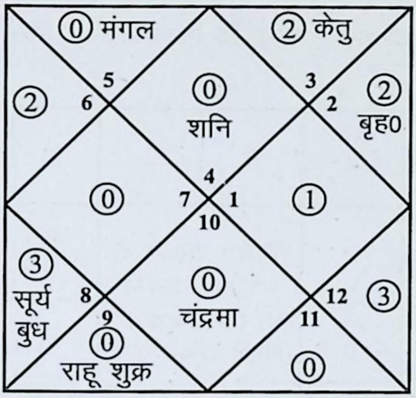

3	1	2 बृहस्पति	2 केतु
0	प्रथम शोधन के पश्चात् चन्द्रमा का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		0 लग्न शनि
0 चंद्रमा			0 मंगल
0 राहू शुक्र	3 सूर्य बुध	0	2

1. कर्क एवं सिंह राशि के बिन्दुओं की संख्या में कोई भी शोधन नहीं होगा। (नियम 1)

2. मंगल की राशियों में, मेष राशि में बिन्दुओं की 1 संख्या एवं वृश्चिक राशि में 3 संख्या है। चूंकि वृश्चिक में ग्रह स्थित हैं अतः उसमें कोई परिवर्तन नहीं होगा अपितु मेष की संख्या 0 हो जाएगी। (नियम 4–स)

3. बुध की दोनों राशियों मिथुन एवं कन्या में बिन्दुओं की संख्या 2–2 है और दोनों राशियाँ ही ग्रहरहित हैं, अतः दोनों की संख्या 0 हो जाएगी। (नियम 5–अ)

4. बृहस्पति की धनु राशि में 0 संख्या एवं मीन राशि में 3 संख्या है। चूंकि एक राशि में पहले से ही 0 संख्या है अतः आगे शोधन नहीं होगा। (नियम 2)

5. शुक्र की वृषभ राशि में 2 एवं तुला में 0 संख्या है। चूंकि एक राशि में पहले से ही 0 संख्या है अतः आगे शोधन नहीं होगा। (नियम 2)

6. शनि की दोनों राशियों में बिन्दुओं की संख्या 0 है अतः शोधन की कोई आवश्यकता नहीं है।

इस प्रकार एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् चन्द्रमा का भिन्नाष्टकवर्ग निम्न प्रकार से होगा।

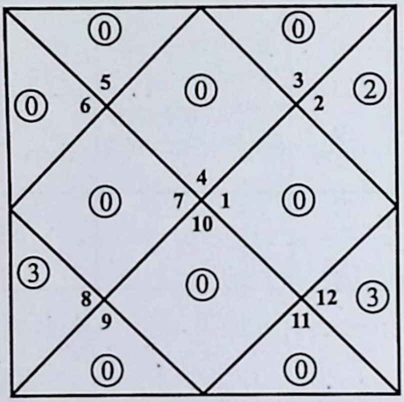

3	0	2	0
0	द्वितीय शोधन के पश्चात् चन्द्रमा का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		लग्न 0
0			0
0	3	0	0

इसी प्रकार सभी ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्गों का द्वितीय शोधन अर्थात एकाधिपत्य शोधन किया जाएगा। एकाधिपत्य के बाद शेष ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्ग इस प्रकार से होंगे:

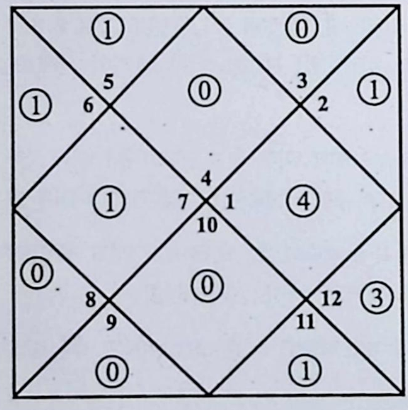

3	4	1	0
1	प्रथम शोधन के पश्चात् मंगल का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		लग्न 0
0			1
0	0	1	1

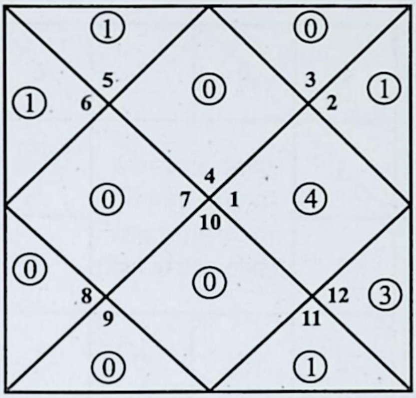

3	4	1	0
1	द्वितीय शोधन के पश्चात् मंगल का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		लग्न 0
0			1
0	0	0	1

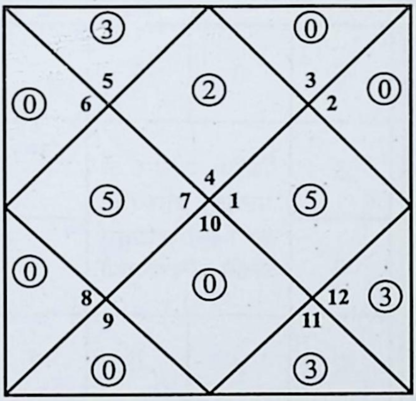

3	5	0	0
3	प्रथम शोधन के पश्चात् बुध का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		लग्न 2
0			3
0	0	5	0

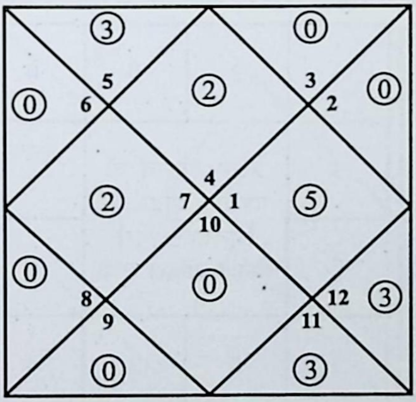

3	5	0	0
3	द्वितीय शोधन के पश्चात् बुध का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		लग्न 2
0			3
0	0	2	0

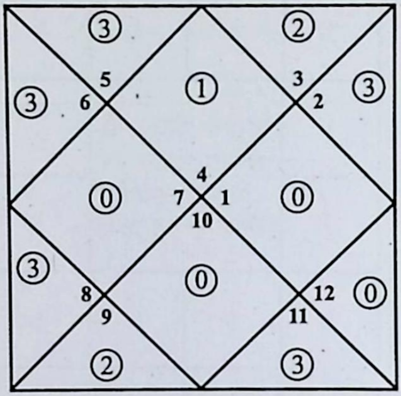

0	0	3	2
3	प्रथम शोधन के पश्चात् बृहस्पति का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		लग्न 1
0			3
2	3	0	3

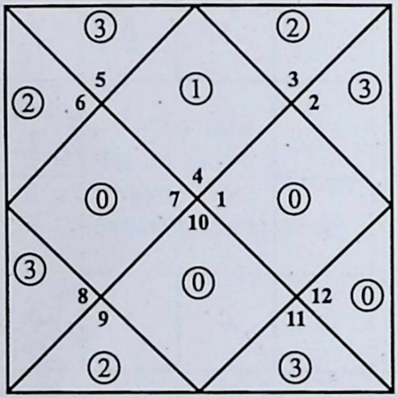

0	0	3	2
3	द्वितीय शोधन के पश्चात् बृहस्पति का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		लग्न 1
0			3
2	3	0	2

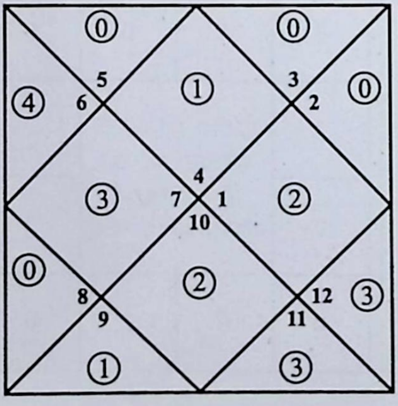

3	2	0	0
3	प्रथम शोधन के पश्चात् शुक्र का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		लग्न 1
2			0
1	0	3	4

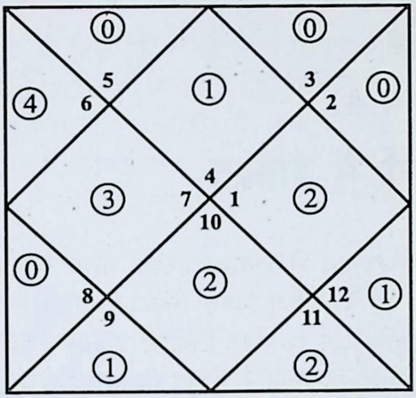

1	2	0	0
2	द्वितीय शोधन के पश्चात् शुक्र का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		लग्न 1
2			0
1	0	3	4

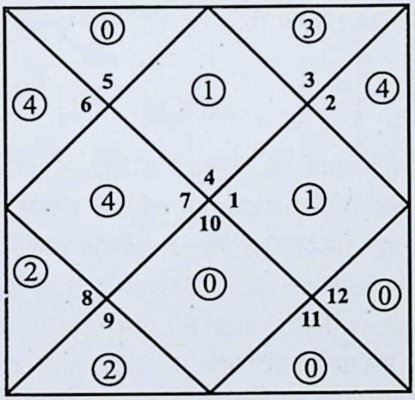

0	1	4	3
0	प्रथम शोधन के पश्चात् शनि का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		लग्न 1
0			0
2	2	4	4

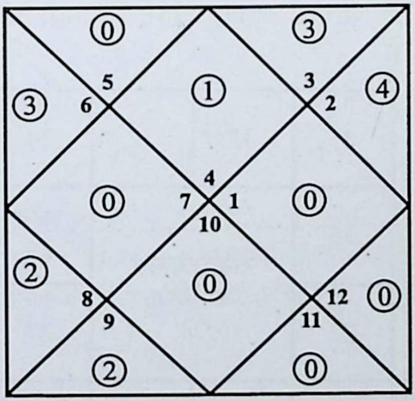

0	0	4	3
0	द्वितीय शोधन के पश्चात् शनि का भिन्नाष्टकवर्ग (श्रीमति इन्दिरा गांधी)		लग्न 1
0			0
2	2	0	3

अध्याय 4

सर्वाष्टक वर्ग में शोधन

जिस प्रकार प्रत्येक ग्रह के भिन्नाष्टकवर्ग में शोधन करके, शोध्य पिण्ड प्राप्त किये हैं, उसी प्रकार सर्वाष्टकवर्ग का भी शोध्य पिण्ड निकाला जाता है। इसमें अन्तर केवल इतना है कि भिन्नाष्टक वर्ग में सीधे त्रिकोण शोधन किया जाता है जबकि सर्वाष्टकवर्ग शोधनों में सर्वप्रथम मण्डल शोधन किया जाता है। अतः मण्डल शोधन सर्वाष्टकवर्ग के तीन शोधनों में से प्रथम शोधन है। आइए सर्वप्रथम मण्डल शोधन को समझते हैं।

I. मण्डल शोधनः

नियमः सर्वाष्टकवर्ग में प्राप्त प्रत्येक राशि के बिन्दुओं को 12 से भाग करके शेषफल को उस राशि में अंकित करो, लेकिन किसी भी राशि में संख्या 0 नहीं होगी। यदि किसी राशि में 12 के गुणक संख्या जैसे कि 12, 24, 36 इत्यादि कोई भी है तो उस स्थिति में 12 से भाग करने पर यद्यपि शेषफल शून्य बचता है लेकिन इस स्थिति में 0 के स्थान पर 12 लिया जाता है। अन्य संख्या के शेषफल आने की स्थिति में, शेषफल की संख्या को ही राशि में लिखा जाता है।

मंण्डल शोधन के इस नियम को स्वर्गीय श्रीमति इन्दिरा गान्धी की उदाहरण जन्मपत्रिका से समझते हैं।

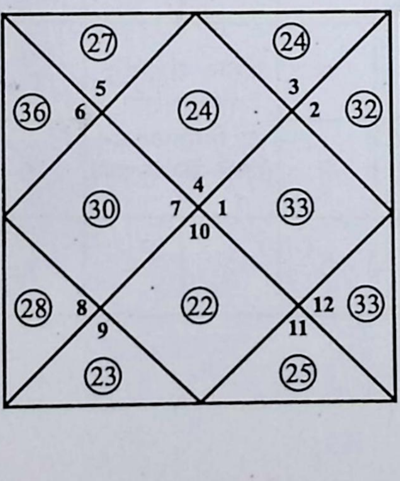

<table>
<tr><td>33</td><td>33</td><td>32</td><td>24</td></tr>
<tr><td>25</td><td colspan="2" rowspan="2">सर्वाष्टकवर्ग
के बिन्दु</td><td>लग्न
24</td></tr>
<tr><td>22</td><td>27</td></tr>
<tr><td>23</td><td>28</td><td>30</td><td>36</td></tr>
</table>

उदाहरण जन्मपत्रिका के सर्वाष्टक वर्ग के लग्न में 24 शुभ बिन्दु हैं जिन्हे 12 से भाग देने पर शेषफल 0 बचता है। 0 शेष रहने की स्थिति में, 0 के स्थान पर 12 लिखा जाऐगा। द्वितीय भाव मे 27 की संख्या है जिसकों 12 से भाग देने पर शेषफल 3 बचता है, अतः द्वितीय भाव में मण्डल शोधन के पश्चात 3 की संख्या लिखी जाएगी। इसी प्रकार अन्य भावों की संख्या का शोधन करना है। आगे तालिका संख्या 4.1 में प्रत्येक भाव की संख्या का शोधन करके दिखाया गया है।

तालिका संख्या 4.1

भाव संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
प्राप्त बिन्दु	24	27	36	30	28	23	22	25	33	33	32	24
भाजक	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12	12
शेषफल	0 अर्थात 12	3	0 अर्थात 12	6	4	11	10	1	9	9	8	0 अर्थात 12

मण्डल शोधन के पश्चात सर्वाष्टकवर्ग

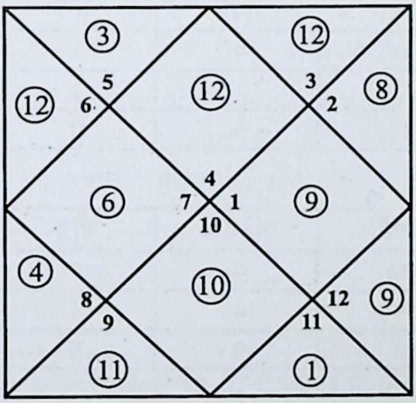

9	9	8	12
1	मण्डल शोधन के पश्चात् बिन्दु		लग्न 12
10			3
11	4	6	12

इस तरह मण्डल शोधन के पश्चात प्राप्त सर्वाष्टकवर्ग द्वितीय शोधन, त्रिकोण शोधन के लिए तैयार हो गया है।

II. त्रिकोण शोधनः

त्रिकोण शोधन, पूर्व में वर्णित राशि के तत्त्वों के आधार पर उसी प्रकार से किया जाता है, जिस प्रकार पहले के भिन्नाष्टक वर्ग में किया था।*

1. अग्नि तत्त्व राशियों का शोधन

	मेष	सिंह	धनु
प्राप्त बिन्दु	9	3	11
(–) निम्नतम अंक	3	3	3
शोधन के बाद प्राप्तांक	6	0	8

2. पृथ्वी तत्त्व राशियों का शोधन

	वृषभ	कन्या	मकर
प्राप्त बिन्दु	8	12	10
(–) निम्नतम अंक	8	8	8
शोधन के बाद प्राप्तांक	0	4	2

3. वायु तत्व राशियों का शोधन

	मिथुन	तुला	कुंभ
प्राप्त बिन्दु	12	6	1
(–) निम्नतम अंक	1	1	1
शोधन के बाद प्राप्तांक	11	5	0

4. जल तत्त्व राशियों का शोधन

	कर्क	वृश्चिक	मीन
प्राप्त बिन्दु	12	4	9
(–) निम्नतम अंक	4	4	4
शोधन के बाद प्राप्तांक	8	0	5

---

* नियम

1. यदि किसी भी तत्त्व की तीनों राशियों में प्राप्तांकों की संख्या एक समान नहीं है तो सबसे कम संख्या को तीनों संख्याओं से अलग–अलग घटायें। शेष बची संख्याओं को सम्बन्धित राशि वाले स्थान में लिखें।
2. यदि तीनों राशियों में से यदि किसी भी एक राशि को शून्य अंक प्राप्त हैं तो उस तत्त्व की राशियों का शोधन नहीं होगा।
3. यदि तीनों राशियों में से किन्ही दो राशियों के प्राप्तांक शून्य हैं तो तीसरी राशि का अंक भी समाप्त होकर शून्य ही हो जाएगा।
4. यदि तीनों राशियों के अंक समान हैं तो शोधन के पश्चात तीनों राशियों के अंक 0 हो जांएगे।

त्रिकोण शोधन के पश्चात सर्वाष्टक वर्ग के बिन्दु

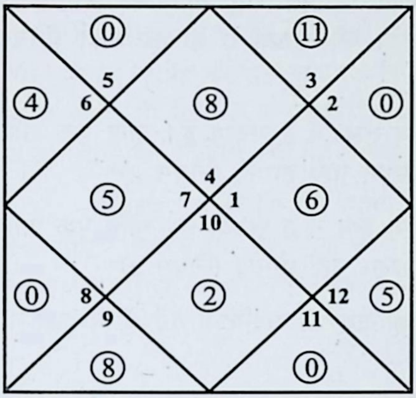

5	6	0	11
0	त्रिकोण शोधन के पश्चात् सर्वाष्टकवर्ग के बिन्दु		लग्न 8
2			0
8	0	5	4

III. एकाधिपत्य शोधन

1. चूंकि सूर्य एवं चन्द्रमा एक–एक राशि के स्वामी होते हैं अतः, कर्क और सिंह राशियों के अंको से कोई छेड़छाड़ नहीं करेंगे अर्थात उनमें यह शोधन नहीं होगा। (नियम 1)*

2. मंगल की राशियों में मेष राशि में 6 एवं वृश्चिक में 0 संख्या है। चूंकि एक राशि में पहले से ही 0 है अतः कोई शोधन नहीं होगा। (नियम 2)*

3. बुध की राशियों, मिथुन में 11 एवं कन्या में 4 की संख्या है और दोनों राशियाँ ग्रहरहित हैं। अतः मिथुन की संख्या कन्या के बराबर 4 हो जायेगी। (नियम 5–ब)*

---

* नियम

1. सूर्य एवं चन्द्रमा एक–एक राशि के ही स्वामी होने के कारण सिंह एवं कर्क राशि का यह शोधन नहीं किया जाता है।
2. यदि किसी ग्रह की दोनों राशियों में से एक भी राशि में पहले से ही 0 अंक है तो उस ग्रह की राशियों का शोधन नहीं होता है।
3. यदि किसी भी ग्रह की दोनों ही राशियों में, राहू–केतु को छोडकर, अन्य कोई भी ग्रह स्थित हो तो उन राशियों में यह शोधन नहीं होता है।
   यदि केवल राहू–केतु स्थित हैं तो शोधन होता है।
   किसी भी राशि में ग्रह की उपस्थिति राशि का बली बना देती है और वह बल ही उस राशि के शोधन को रोकता है।

(अगले पृष्ठ पर जारी)

4. बृहस्पति की राशियों में, धनु में 8 एवं मीन में 5 संख्या है और धनु राशि ग्रहयुत है जबकि मीन राशि ग्रहरहित। अतः धनु राशि की संख्या का शोधन नहीं होगा अपितु मीन राशि की संख्या 0 हो जायेगी। (नियम 4–स)*

5. शुक्र की राशियों में, वृषभ में 0 एवं तुला में 5 संख्या है। चूंकि एक राशि में पहले से ही 0 है अतः कोई शोधन नहीं होगा। (नियम 2)*

6. शनि की राशियों में, मकर में 2 एवं कुंभ में 0 संख्या है। चूंकि एक राशि में पहले से ही 0 है अतः कोई शोधन नहीं होगा। (नियम 2)*

इस प्रकार से एकाधिपत्य शोधन के बाद की सर्वाष्टक वर्ग में बिन्दुओं की स्थिति निम्न प्रकार से होगी।

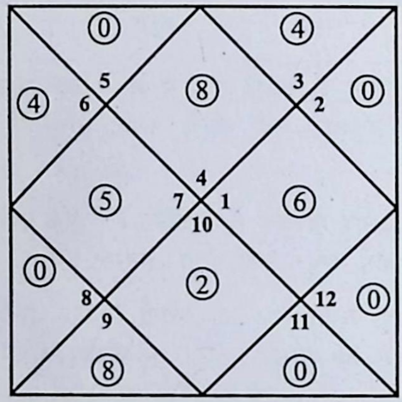

0	6	0	4
0	एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् सर्वाष्टकवर्ग के बिन्दु		लग्न 8
2			0
8	0	5	4

* नियम (पिछले पृष्ठ से जारी)

4. यदि किसी ग्रह की दोनों राशियों में से एक भी राशि में ग्रह है और किसी भी राशि में 0 नहीं है तो उसका शोधन इस प्रकार से होता हैः
दोनों राशियों के अंकों की तीन स्थितियां हो सकती हैं:
(अ) ग्रहरहित राशि के बिन्दु की संख्या, ग्रहयुत राशि के बिन्दुओं की संख्या से अधिक हो सकती है। ऐसी स्थिति में ग्रहरहित राशि की संख्या को ग्रहयुत राशि की संख्या के बराबर कर देते है। पुनः यह बात यहां सिद्ध होती है कि ग्रहयुत राशि बली होती है और उससे छेड़छाड़ नहीं करते हैं।
(ब) ग्रहरहित राशि के बिन्दुओं की संख्या, ग्रहयुत राशि के समान हो सकती है और
(स) ग्रहरहित राशि के बिन्दुओं की संख्या, ग्रहयुत राशि से कम हो सकती है। इन दोनों ही स्थितियों में ग्रहयुत राशि की संख्या में शोधन नहीं होगा जिससे उस संख्या में कोई भी बदलाव नहीं आयेगा लेकिन ग्रहरहित राशि के बिन्दुओं की संख्या 0 हो जाती है।

5. यदि किसी ग्रह की दोनों राशियों में कोई भी ग्रह ना हो और किसी भी राशि में बिन्दुओं की संख्या 0 ना हो तो शोधन इस प्रकार से होता हैः
(अ) यदि दोनों राशियों की संख्या समान है तो दोनों ही 0 हो जाएंगे।
(ब) यदि दोनों की संख्या समान नहीं है तो बडी संख्या को छोटी संख्या के बराबर कर देंगे अर्थात दोनों राशियों में समान संख्या ही आयेगी।

सर्वाष्टक वर्ग का शोध्य पिण्डः

भिन्नाष्टक वर्ग की तरह ही सर्वाष्टक वर्ग में शोधनों के पश्चात् प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को ग्रह गुणाकर एवं राशि गुणाकर से गुणा करके शोध्य पिण्ड प्राप्त करते हैं, जिसके अनुसार प्रत्येक भाव सम्बन्धित घटनाओं के साथ साथ आयु आदि का निश्चित फलित किया जा सके।

उदाहरण जन्मपत्रिका के सर्वाष्टक वर्ग में शोधनों के पश्चात प्राप्त बिन्दुओं को राशि गुणाकर एवं ग्रह गुणाकर से गुणा करके शोध्य पिण्ड प्राप्त करने की विधि को अगले अध्याय में समझाया गया है।

अध्याय 5

शोध्य पिण्ड

पिछले अध्यायों में वर्णित नियमों के अनुसार प्रत्येक ग्रह के भिन्नाष्टकवर्ग में दोनों शोधनों को करने के पश्चात्, शोध्य पिण्ड की गणना करनी पडती है। ग्रहों के शोध्य पिण्ड निकालने के लिए प्रत्येक ग्रह के भिन्नाष्टकवर्ग में प्रत्येक राशि में शेष बचे राशियों के बिन्दुओं की संख्या को राशि गुणाकर और जिन भावों में ग्रह स्थित हैं उन भावों के बिन्दुओं को ग्रह गुणाकर से गुणा करना पड़ता है। दोनों विधियों से प्राप्त ग्रहों के बिन्दुओं का योग करके उनका शोध्य पिण्ड प्राप्त किया जाता है।

इसी तरह से सर्वाष्टक वर्ग में तीनों शोधनों के पश्चात शेष शुभ बिन्दुओं की संख्या को राशि गुणाकर एवं ग्रह गुणाकर से गुणा करके सर्वाष्टक वर्ग का शोध्य पिण्ड प्राप्त किया जाता है। आइए सर्वप्रथम राशि गुणाकर एवं ग्रह गुणाकार को समझते हैं।

राशि गुणाकरः

प्रत्येक राशि को एक निश्चित इकाई, संख्या के रुप में दी गई है जो उस राशि विशेष की राशि गुणाकर कहलाती है। यह संख्या अपरिवर्तनीय है और प्रत्येक स्थिति में समान रहती है। राशियों के गुणाकर इस प्रकार हैं:

राशियों के लिए राशि गुणाकर

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुभं	मीन
गुणाकर	7	10	8	4	10	5	7	8	9	5	11	12

जन्मपत्रिका में राशि गुणाकर प्राप्त करने की विधि को स्वर्गीय श्रीमति इन्दिरा गान्धी की उदाहरण जन्मपत्रिका में प्राप्त करके समझते हैं।

उदाहरण जन्मपत्रिका में सूर्य के भिन्नाष्टक वर्ग में द्वितीय शोधन के बाद मेष राशि में शेष शुभ बिन्दुओं की संख्या 1 है। इसे मेष राशि के गुणाकर अर्थात 7 से गुणा करके गुणनफल प्राप्त करेंगे। इसी प्रकार वृषभ राशि में 2 अंक शेष है जिसको वृषभ राशि के गुणाकर अर्थात 10 से गुणा करके गुणनफल प्राप्त करेंगे। मिथुन राशि में शेष अंक 0 है इसको भी मिथुन राशि के गुणाकर अर्थात 8 से गुणा करेंगे जो 0 ही होगा।

इसी तरह सूर्य के भिन्नाष्टक वर्ग में सभी राशियों के द्वितीय शोधन के पश्चात शेष शुभ अंको को उनके राशि गुणाकर से गुणा करके गुणनफल प्राप्त करेंगे और प्राप्त गुणनफलों का योग करके सूर्य के भिन्नाष्टक वर्ग का राशि गुणाकर प्राप्त करेंगे।

इसी प्रक्रिया द्वारा अन्य सभी ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्गों के राशि गुणाकर प्राप्त करेंगे और सुविधाजनक प्रयोग के लिए उन्हें तालिकाबद्ध करेंगे। सभी ग्रहों के इस प्रकार से प्राप्त अंको को आगे *तालिका संख्या 5.1* में दर्शाया हुआ है।

ग्रह गुणाकरः

इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह को एक निश्चित इकाई, संख्या के रुप में दी गई है जो उस ग्रह विशेष की ग्रह गुणाकर कहलाती है। यह संख्या भी अपरिवर्तनीय और प्रत्येक स्थिति में समान रहती है। ग्रहों के गुणाकर इस प्रकार हैं:

ग्रहों के लिए ग्रह गुणाकर

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
गुणाकर	5	5	8	5	10	7	5

उदाहरण जन्मपत्रिका में सूर्य के भिन्नाष्टक वर्ग में सूर्य द्वारा गृहीत राशि वृश्चिक में 1 अंक शेष है उसको सूर्य के गुणाकर 5 से गुणा करके जो गुणनफल आयेगा वह सूर्य का ग्रह गुणाकर कहलायेगा। इसी प्रकार चन्द्रमा द्वारा गृहीत मकर राशि में 0 शेष है जिसको चन्द्रमा के गुणाकर 5 से गुणा करके जो गुणनफल प्राप्त होगा, वह चन्द्रमा का ग्रह गुणाकर कहलायेगा। इसी प्रकार से सभी ग्रहों के गुणाकर प्राप्त करके उनका योग करेगें। यही प्रक्रिया अन्य ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्गों में लगाकर सम्बन्धित भिन्नाष्टक वर्ग का ग्रह गुणाकर प्राप्त करके उनको तालिकाबद्ध करेंगें। आगे *तालिका संख्या 5.2* में सभी ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्ग में सभी ग्रहों के ग्रह गुणाकर प्राप्त करके दर्शाया गया है।

राशि गुणाकर, ग्रह गुणाकर एवं शोध्य पिण्डों को स्वर्गीय श्रीमति इन्दिरा गान्धी की उदाहरण जन्मपत्रिका में प्राप्त करके आगे तालिकाबद्ध करके दिखाया गया है।

उपरोक्त प्रक्रिया द्वारा प्राप्त प्रत्येक ग्रह के राशि गुणाकर एवं ग्रह गुणाकर की संख्या का योग करके प्रत्येक ग्रह का शोध्य पिण्ड प्राप्त किया जाता है। इसी प्रकार सर्वाष्टक वर्ग के शोध्य पिण्ड को भी ज्ञात किया जाता है। अब उदाहरण जन्मपत्रिका में ग्रहों के प्राप्त पिण्डों का योग करके शोध्य पिण्ड ज्ञात करते हैः

तालिका संख्या 5.1 – राशि गुणाकर तालिका

राशि	गुणा कर	सूर्य		चन्द्रमा		मंगल		बुध		बृहस्पति		शुक्र		शनि		सर्वाष्टक वर्ग	
		बिन्दु	कुल मान	बन्दु	कुल मान	बिन्दु	कुल मान	बिन्दु	कुल मान	बिन्दु	कुल मान	बिन्दु	कुल मान	बिन्दु	कुल मान	बिन्दु	कुल मान
मेष	7	1	7	0	0	4	28	5	35	0	0	2	14	0	0	6	42
वृषभ	10	2	20	2	20	1	10	0	0	3	30	0	0	4	40	0	0
मिथुन	8	0	0	0	0	0	0	0	0	2	16	0	0	3	24	4	32
कर्क	4	0	0	0	0	0	0	2	8	1	4	1	4	1	4	8	32
सिंह	10	2	20	0	0	1	10	3	30	3	30	0	0	0	0	0	0
कन्या	5	0	0	0	0	1	5	0	0	2	10	4	20	3	15	4	20
तुला	7	0	0	0	0	0	0	5	35	0	0	3	21	0	0	5	35
वृश्चिक	8	1	8	3	24	0	0	0	0	3	24	0	0	2	16	0	0
धनु	9	0	0	0	0	0	0	0	0	2	18	1	9	2	18	8	72
मकर	5	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2	10	0	0	2	10
कुंभ	11	0	0	0	0	1	11	3	33	3	33	2	22	0	0	0	0
मीन	12	2	24	3	36	3	36	3	36	0	0	1	12	0	0	0	0
			79		80		100		177		165		112		117		243

तालिका संख्या 5.2 – ग्रह गुणाकर तालिका

ग्रह युत राशि	ग्रह	गुणा कर	सूर्य		चन्द्रमा		मंगल		बुध		बृहस्पति		शुक्र		शनि		सर्वाष्टक वर्ग	
			बिन्दु	कुल मान	बन्दु	कुल मान	बिन्दु	कुल मान	बिन्दु	कुल मान	बिन्दु	कुल मान	बिन्दु	कुल मान	बिन्दु	कुल मान	बिन्दु	कुल मान
8	सूर्य	5	1	5	3	15	0	0	0	0	3	15	0	0	2	10	0	0
10	चन्द्रमा	5	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	2	10	0	0	2	10
5	मंगल	8	2	16	0	0	1	8	3	24	3	24	0	0	0	0	0	0
8	बुध	5	1	5	3	15	0	0	0	0	3	15	0	0	2	10	0	0
2	बृहस्पति	10	2	20	2	20	1	10	0	0	3	30	0	0	4	40	0	0
9	शुक्र	7	0	0	0	0	0	0	0	0	2	14	1	7	2	14	8	56
4	शनि	5	0	0	0	0	0	0	2	10	1	5	1	5	1	2	8	40
कुल ग्रह बल				46		50		18		34		103		22		79		106
कुल राशि बल				79		80		100		177		165		112		117		243
शोध्य पिण्ड				125		130		118		211		268		134		196		349

अध्याय 6

अष्टकवर्ग द्वारा जन्मपत्रिका का विवेचना

किसी भी जन्मपत्रिका की अष्टकवर्ग के सिद्धान्तों द्वारा विवेचना करके फलित करते समय सर्वप्रथम यह देखना चाहिए कि ग्रह ने कितने बिन्दुओं का अंशदान किया है और साथ ही साथ ग्रह द्वारा गृहीत राशि में कितने बिन्दु हैं। यदि कोई ग्रह अपने भिन्नाष्टकवर्ग में 5 से अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित होता है और सर्वाष्टकवर्ग में उसके द्वारा गृहीत राशि में 28 से अधिक बिन्दु होते हैं तो वह बहुत ही श्रेष्ठ एवं उत्तम परिणाम देता है। इसके साथ ही साथ ज्योतिष के सामान्य नियमों को भी लगाना चाहिए जैसे कि कोई ग्रह तब शुभ परिणाम देता है जब वह अस्त अथवा नीचस्थ और जन्मपत्रिका के 6, 8, 12 भावों में नहीं होता है। शुभ परिणाम देने के लिए ग्रह को पापकर्तरी योग और पापी ग्रहों से भी पीड़ित नहीं होना चाहिए। नैसर्गिक शुभ ग्रहों का केन्द्र एवं त्रिकोण में और नैसर्गिक क्रूर ग्रहों का 3, 6, 11 भावों में स्थित होना अच्छा होता है।

यहां तक की यदि कोई ग्रह किसी भाव में केवल 4 या इससे भी कम बिन्दु प्राप्त करता है और उसी भाव में उच्च का भी होता है तो भी अधिक शुभ परिणाम नहीं देता है। इसी प्रकार यदि कोई ग्रह अपनी शत्रु राशि अथवा नीच राशि में 4 से अधिक बिन्दु प्राप्त करता है तो वह शुभ परिणाम देने के लिए बाध्य होता है। हमें गोचरस्थ ग्रह के साथ–साथ शुभ दशा भी देखनी चाहिए। सामान्यतः गोचर विचारणीय/कल्पनीय होता है।

यदि गोचर में शनि ऐसी राशि से गुजरता है जिस राशि में सूर्यादि ग्रह अपने भिन्नाष्टकवर्ग में कोई भी बिन्दु नहीं देते हैं तो शनि का यह गोचर बिन्दु न देने वाले ग्रहों के कारकत्व के अनुसार बिमारी, मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट, दुर्घटना, हानि, आग लगना आदि का कारण बनता है। चूंकि सूर्य शरीर का इंगित करता है, शनि का ऐसी राशि में गोचर जिसमें सूर्य 0 बिन्दु प्रदान करता है, शाररिक समस्याओं को देता है। यदि सूर्य द्वारा गृहीत राशि और उससे नवम राशि में भी 0 बिन्दु है तो जिस समय शनि इस नवम भाव में गोचर करेगा, जातक के पिता की चिन्तायें बढ जायेंगी, स्वास्थ्य की हानि होगी और यदि अशुभ दशा चल रही हो तो मृत्यु भी हो सकती है।

चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में जब शनि ऐसी किसी राशि में गोचर करता है जिसमें चन्द्रमा कोई बिन्दु प्राप्त नहीं करता है तो इसका अर्थ होता है कि जातक की मां के लिए कष्ट, यदि मंगल की राशि हो तो भाई अथवा भाई–बहनों के लिए, यदि बुध तो चाचा–मामा अथवा सम्बन्धियों के लिए समस्यायें, यदि बृहस्पति तो यह सन्तति के विषय में होगा, यदि शुक्र तो जीवनसाथी होगा और यदि शनि तो जातक स्वयं परेशानियों से घिर जाएगा। शनि स्वयं और पूर्व कर्मो को इंगित करता है। यह तुला राशि अर्थात संतुलित करने वाली राशि में उच्च का होता है, अतः यह न्याय के लिए जाना जाता है और निश्चित ही वैसा फल देता है जैसा कि जातक के लिए उसकी योग्यता के अनुसार उचित होता है। यदि बृहस्पति इस पर गोचर करता है तो जातक रोग से विमुक्त होता है।

किसी भी भाव के बल को ज्ञात करने के लिए, उसके त्रिकोण भावों को भी अवश्य देखना चाहिए। यदि त्रिकोण भाव निर्बली होते हैं तो भाव से प्राप्त होने वाले परिणाम अनुकूल नहीं होते हैं। उसके बाद कारक पर आना चाहिए, जिसका बली होना आवश्यक है, तब हम उस भाव विशेष के स्वामी पर आते हैं। उसके बाद हम भावेश के स्वामी की विवेचना करते हैं।

किसी जातक के पास अपने वाहन नहीं हों, लेकिन उसको वाहन सुख हो सकता है। इसके लिए हम शुक्र से षष्टम एवं दशम भाव को देखते हैं जिनमें अधिक बिन्दु हो सकते हैं। इन भावों के बिन्दु जातक को वाहन सुख देगें। इस नियम को आयुर्दाय के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है। हम अष्टम भाव को आयुर्दाय के लिए, सप्तम भाव को मृत्यु के लिए और द्वितीय भाव को मृत्यु के दण्ड के लिए देखते हैं। यद्यपि मृत्यु को टाला नहीं जा सकता है लेकिन मृत्यु जैसी स्थितियों को ठीक ढंग से निपटाया जा सकता है जिससे कम से कम हानि हो।

जिस ग्रह के पास जितने अधिकतम बिन्दु होते हैं, उसका परिणाम भी उतना ही श्रेष्ठ होता है। उदाहरणतः यदि जन्मपत्रिका से किसी जातक की धन–सम्पति के स्तर का अनुमान लगाना हो तो जन्मपत्रिका के द्वितीय भाव के बिन्दुओं की संख्या, द्वितीयेश के अष्टकवर्ग में उसके बिन्दुओं की संख्या और द्वितीयेश जिस राशि में स्थित है उस राशि के बिन्दुओं की संख्या, इन तीनों को एक साथ देखकर ही विवेचना करनी चाहिए। यदि द्वितीयेश के पास 5 से अधिक बिन्दु हैं और उसकी राशि एवं द्वितीय भाव में 28 बिन्दु से अधिक हैं तो ऐसा जातक अवश्य ही धनवान होता है।

अष्टवर्ग पद्धति का यह नियम हमेशा याद रखना चाहिए कि, कोई भी ग्रह अपनी उच्च राशि अथवा स्वराशि में स्थित होने के उपरान्त भी, तब तक पूर्णरूप से शुभ फल देने की क्षमता नहीं रखता है जब तक कि अपने भिन्नाष्टकवर्ग में उसके पास पर्याप्त बिन्दु नहीं होते हैं।

सामान्यतः यदि किसी भी ग्रह के पास 4 से अधिक बिन्दु हैं तो वह ग्रह बलवान माना जाता है तथा प्राप्त होने वाले अधिकतम बिन्दुओं की संख्या के आध ाार पर ही श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम् शुभ फल देता है। किसी भी जन्मपत्रिका में सूर्य, चन्द्रमा अथवा मंगल जैसे ग्रह 6, 7 अथवा 8 बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर, जातक को प्राप्त होने वाले पद के उच्चस्तर को सुनिश्चित करते हैं। इसके विपरीत जन्मपत्रिका में ग्रह जितने निम्नतम बिन्दुओं के साथ स्थित होते हैं, उतना ही अनिष्टकारी फल प्रदान करते हैं।

किसी भी जन्मपत्रिका की विवेचना कहते समय ग्रहों के कारकत्व मुख्यरूप से विचारणीय होते है, अतः इनका विचार अवश्य करना चाहिए। ग्रहों के कारकत्व के अनुसार मुख्य विचारणीय प्राप्तियां इस प्रकार से हैं:

सूर्यः पिता की स्थिति और पद–प्रतिष्ठा, जातक के स्वास्थ्य की स्थिति, आध्यात्मिक परिपक्वता, उच्च पद और समाज में प्रभाव आदि।

चन्द्रमाः माता का स्वास्थ्य एवं सम्पन्नता, बौधिक क्षमता, बुद्धि की स्थिति, मानसिक स्थिति, समाज के प्रति सामान्य व्यवहार एवं विचार आदि।

मंगलः भू–सम्पति अर्थात जमीन–जायदाद, मकान, छोटे भाई–बहन, उच्चपद, पराक्रम, निडरता, काम करने की क्षमता, यौनशक्ति आदि।

बुधः वाणी, बुद्धि की सोचने–समझने की क्षमता, प्रभेद करके अर्थात अन्तर को समझकर किसी भी विचार को ग्रहण करने की क्षमता, शिक्षा का स्तर आदि।

बृहस्पतिः बौद्धिक क्षमता, ज्ञान, धन–सम्पति, सन्तति, यश–कीर्ति, उच्च विचारों का ज्ञान, उच्चपद और सामान्य समृद्धि आदि।

शुक्रः विवाह एवं वैवाहिक जीवन, शारीरिक सौन्दर्यता, कला के प्रति रुझान, वाहन, विपरीत लिंगियों के मध्य प्रसिद्धि, आकर्षक व्यक्तिव , धन–सम्पति, सभी प्रकार के भौतिक सुख आदि।

शनिः कठिन परिश्रम करने की क्षमता, भौतिक सुखों को त्यागने की क्षमता, बुद्धि की एकाग्रता, आयुर्दाय, दुःख का कारण एवं दुःखों की भुक्ति, जमीन, जनसमूह

पर प्रभाव आदि।

जन्मपत्रिका में किसी भाव की विवेचना करते समय सर्वप्रथम ज्योतिषशास्त्र के सामान्य सिद्धान्तों को अपनाया जाता है, जैसे कि यदि भाव अपने स्वामी से युत अथवा दृष्ट हो और साथ ही साथ, शुभ ग्रहों की युति अथवा दृष्टि से भी प्रभावित हो तो भाव की वृद्धि होती है। अर्थात वह भाव बली हो जाता है और जन्मपत्रिका के जातक को उस भाव से सम्बन्धित सभी शुभ फल प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त भावेश का बल भी प्राप्त होने वाले फलों के शुभाशुभ होने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, अतः भावेश की विवेचना भी आवश्यक होती है।

इस तरह से ज्योतिषशास्त्र के मूल सिद्धान्तों के आधार पर सभी ग्रहों के फलों का, अष्टकवर्ग के द्वारा प्राप्त ग्रहों के बिन्दुओं की संख्या के साथ समन्वय करके, आंकलन किया जाता है। दूसरे शब्दों में ग्रह की जन्मपत्रिका में स्थिति के साथ–साथ उसके द्वारा अपने भिन्नाष्टकवर्ग में प्राप्त बिन्दुओं और सर्वाष्टकवर्ग में ग्रह द्वारा गृहीत राशि में प्राप्त बिन्दुओं के आधार पर, ग्रह द्वारा प्राप्त होने वाले फलों की शुभाशुभता का निर्धारण किया जाता है।

यहां मुख्य ध्यान देने वाली बात यह है कि यदि कोई ग्रह अधिकतम बिन्दुओं के साथ अपनी उच्च राशि अथवा स्वराशि अथवा मित्र की राशि में स्थित होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट होता है तो वह सर्वश्रेष्ठ फल प्रदान करता है।

सभी ग्रह 0 से 3 बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर निर्बली माने जाते हैं।

4 बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर सामान्य अर्थात न बली और न निर्बली, माने जाते हैं।

5 से 8 बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर बली माना जाता है।

सूर्यः

किसी भी जन्मपत्रिका में सूर्य तभी बली माना जाता है जब वह अपने भिन्नाष्टकवर्ग में 5 से 8 बिन्दु तक प्राप्त करता है। जन्मपत्रिका का बली सूर्य, जातक की उच्च पद–प्रतिष्ठा, उत्तम स्वास्थ्य, समाज में मान–सम्मान, आध्यात्मिक परिपक्वता, सामान्य धन–समृद्धि आदि को सुनिश्चित करता है।

जबकि जन्मपत्रिका में निर्बली सूर्य का 1 से 4 बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर, इसके विपरीत परिणाम प्राप्त होते हैं। ऐसे निर्बली सूर्य के जितने कम बिन्दु होते हैं, प्राप्त होने वाले परिणाम भी उतने अधिक अशुभ होते हैं। सामान्यतः 4

बिन्दुओं के साथ स्थित सूर्य औसत अर्थात न अधिक शुभ, न अधिक अशुभ परिणाम देता है। परिणामों में अशुभता तब आती है जब सूर्य 1 से 3 बिन्दुओं के साथ स्थित होता है। ऐसी स्थिति में, जातक को सामान्यतः रोगी होना, लालची एवं लडाकू प्रवृति का होना, समाज के साथ मिलकर चलने में असमर्थ होना और निराशावादी दृष्टिकोण के साथ निचले स्तर का जीवन आदि, अशुभ फल प्राप्त होते हैं।

चन्द्रमाः

किसी भी जन्मपत्रिका में 4 बिन्दुओं के साथ स्थित चन्द्रमा शुभता लिए हुए औसत फल देता है। यदि चन्द्रमा 5 से 8 बिन्दुओं के साथ हो, तो राजसिक ग्रह होने के कारण यह उच्च पद–प्रतिष्ठा, धन–सम्पति, समृद्धि, बुद्धि एवं मन की आनन्दमयी स्थिति, समाज में प्रभाव, अच्छे भाग्य के साथ अद्‌भुत एवं दयालु प्रवृति और माता की दीर्घायु आदि अनेक शुभफल देता है।

इसके विपरीत यदि किसी जन्मपत्रिका में चन्द्रमा 1 से 3 बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो सम्बन्धित जातक मूढ एवं मन्द बुद्धि का ऐसा व्यक्ति होता है जो उन्माद, विषाद् एवं निराशावादी सोच से पीड़ित रहता है। ऐसे जातक की माता भी इसी प्रकार के दोषों से पीड़ित रहती है।

यदि चन्द्रमा जन्मपत्रिका के केन्द्र भाव में 6 से 8 बिन्दुओं के साथ स्थित होता है तो जातक को श्रेष्ठ बुद्धिमान, धनवान और समृद्धिवान बनाता है।

मंगलः

किसी भी जन्मपत्रिका में यदि मंगल 5 से 8 बिन्दुओं के साथ स्थित होता है तो उच्च पद, भूसम्पति अर्थात जमीन–जायदाद सम्बन्धित सुख–समृद्धि, नेतृत्व करने की प्रवीणता एवं समाज में प्रभुत्वशाली पद पाने की योग्यता, नवीन कार्यों के लिए पहल करने का साहस, निडरता, कार्य करने की क्षमता, उत्साह एवं दृढ विचार और सभी प्रकार की सामान्य समृद्धि आदि शुभ फल प्रदान करता है। यदि मंगल उच्च अथवा स्वराशि का होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित होता है तो उपरोक्त फलों में अधिक वृद्धि करता है। यदि मंगल जन्मपत्रिका में उच्च अथवा स्वगृही होकर लग्न, चतुर्थ, नवम अथवा दशम भाव में 7 या 8 बिन्दुओं के साथ स्थित होता है तो जातक को अत्याधिक धनवान एवं समृद्धिशाली बनाने और उच्च पदवी देने में समर्थ होता है।

इसके विपरीत 0 से 3 बिन्दुओं के साथ स्थित मंगल, निर्बली माना जाता है जो जातक को झगडालू प्रवृति एवं इससे विषाद, मान–प्रतिष्ठा एवं धन–सम्पति की हानि आदि अशुभ फल देता है।

बुध:

यदि जन्मपत्रिका में बुध 5 बिन्दुओं के साथ केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित होकर बृहस्पति अथवा शनि से दृष्ट हो तो ऐसा जातक उच्च स्तर का विद्वान और श्रेष्ठ एवं सशक्त वक्ता होता है।

जन्मपत्रिका में निर्बल बुध धन–सम्पति की हानि, बौद्धिक क्षमता में कमी और परिवार के सदस्यों एवं मित्रों के साथ सम्बन्धों में कटुता देता है। यदि 1 से 3 बिन्दुओं के साथ बुध, जन्मपत्रिका के षष्टम अथवा अष्टम भाव में शुभ ग्रहों की दृष्टि से अप्रभावित होकर स्थित होता है तो वह जातक को अविश्वसनीय और व्यवहार में धूर्त बनाता है।

बृहस्पति:

बली बृहस्पति, जातक को अच्छी बौद्धिक क्षमता, धन–सम्पदा, भाग्यशाली, उच्चपद एवं आशावादी विचारों से परिपूर्ण बनाता है। ऐसा बृहस्पति सन्तति, आध्यात्मिक उन्नति और जीवन में श्रेष्ठ चीजों के अनुशरण के लिए भी शुभ होता है।

इसके विपरीत निर्बल बृहस्पति, जातक के जीवन को धन–सम्पति, पद–प्रतिष्ठा, शिक्षा एवं ज्ञान से वंचित रखकर संघर्षपूर्ण और दुर्भाग्यपूर्ण बनाता है।

शुक्र:

बली शुक्र जातक को धन–सम्पति, स्त्री एवं वाहन सुख के साथ–साथ जीवन के सभी आनन्दों का सुख देता है। यह जातक के व्यक्तित्व को आकर्षक बनाता है और जातक को कलात्मक क्षमता भी प्रदान करता है।

इसके विपरीत निर्बल शुक्र, जातक के विवाह में परेशानी या देरी, विवाह होने के उपरान्त वैवाहिक जीवन में भार्या के साथ सम्बन्धों में कटुता एवं कई प्रकार की समस्यायें भी उत्पन्न करता है, मान–हानि करवाता है, दरिद्रता देता है और लक्ष्यहीन जीवन का कारण बनता है।

शनिः

किसी भी जन्मपत्रिका में 0 से 3 बिन्दुओं के साथ स्थित शनि निर्बल, 4 बिन्दुओं के साथ औसत बली और 5 से 8 बिन्दुओं के साथ बली माना जाता है। निर्बल शनि बाधायें, रोग–बिमारी, मृत्यु, निर्धनता और सभी कार्यों में देरी देता है।

इसके विपरीत बली शनि कठिन परिश्रम, मन एवं बुद्धि की एकाग्रता, पवित्र एवं कठोर जीवन, विश्वसनीयता, गहन अनुसंधान और आध्यात्मिक जीवन देता है।

अध्याय 7

सर्वाष्टकवर्ग द्वारा जन्मपत्रिका की विवेचना

सर्वाष्टकवर्ग अर्थात बिन्दुओं की कुल संख्या जन्मपत्रिका में प्रत्येक भाव के बल को दिखाने में मार्ग दर्शक होती है। भावों का यह बल, भाव में ग्रहों के गोचर के फल ज्ञात करने के लिए आवश्यक होता है। जब कोई ग्रह किसी बली भाव में गोचर करता है तो उस भाव सम्बन्धित शुभ फल देता है, भाव का बल कम होने से उस ग्रह विशेष की, फल को शुभ करने की क्षमता सीमित हो जाती है। चूंकि सभी बारह भावों के शुभ अंकों अर्थात बिन्दुओं की कुल संख्या 337 है अतः प्रत्येक भाव में औसतन् 28* बिन्दु आने चाहिए। यदि किसी भाव में 28 बिन्दुओं से कम बिन्दु आते हैं तो वह भाव निर्बली माना जाता है और किसी भी ग्रह का, निर्बली भाव में गोचर, अशुभ फल देता है। जिस भाव में जितने कम बिन्दु होंगे, वह भाव उतना ही निर्बली माना जाता है।

यह हमेशा याद रखना चाहिए कि प्रत्येक भाव में बिन्दुओं एवं रेखाओं** का कुल योग 56 होता हैं। यदि हम 56 से किसी भाव के बिन्दुओं की संख्या को घटाते हैं तो उस भाव की रेखाओं की संख्या प्राप्त करते हैं। अतः यदि किसी भी भाव में बिन्दुओं की संख्या 28 से अधिक है तो स्पष्टतः उस भाव में रेखाओं की संख्या कम होंगी। यदि रेखाओं की संख्या अधिक हो जाती है तो भाव कमजोर हो जाता है और अशुभ परिणाम देता है।

इन नियमों की व्याख्या शास्त्रीय ग्रन्थ प्रश्नमार्ग के निरुपण के अनुसार करनी चाहिए, जिसने प्रत्येक भाव के निम्नतम बिन्दुओं की संख्या का निर्धारण आगे तालिका संख्या 7.1 दिये गए अंको के अनुसार किया है और किसी भी भाव में बिन्दुओं की संख्या, उस भाव के लिए निर्धारित बिन्दुओं से कम होने की स्थिति में वह भाव निर्बली हो जाता है।

---

* 337 को 12 से भाग देने पर, आने वाले भागफल के लगभग।

** अर्थात शुभ एवं अशुभ अंक मिलाकर।

तालिका संख्या 7.1

लग्न अर्थात प्रथम भाव	25	पंचम भाव	25	नवम भाव	29
द्वितीय भाव	22	षष्टम भाव	34	दशम भाव	36
तृतीय भाव	29	सप्तम भाव	19	एकादश भाव	54
चतुर्थ भाव	24	अष्टम भाव	24	द्वादश भाव	16

अब इस नियम की विवेचना स्वतत्रं भारत की जन्मपत्रिका में करते हैं।

(दिनांक 15 अगस्त 1947, समय 00.01 घण्टे अर्धरात्रि)

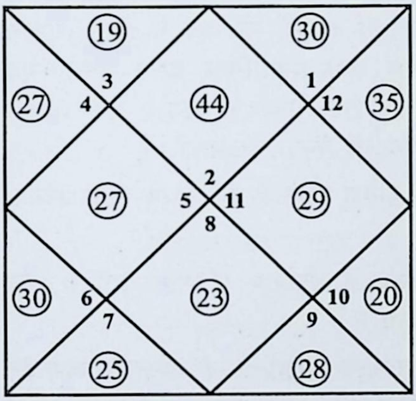

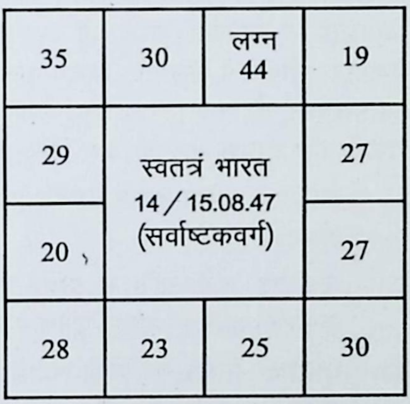

भारतवर्ष की जन्मपत्रिका के लग्न में 44 बिन्दु हैं अतः लग्न भाव बहुत बली है। लग्न बली होने के कारण, भारतवर्ष निरन्तर संकट के समय को झेलते हुए भी, विश्व के मानचित्र में अपनी पहचान बनाने में समर्थ रहा है। इस पत्रिका में द्वितीय भाव की मिथुन राशि एवं नवम भाव की मकर राशि, कम बिन्दुओं वाली होने के कारण अपेक्षाकृत निर्बली हैं। इन राशियों में बृहस्पति एवं शनि जैसे बडे ग्रहों का, गोचर, सामान्यतः भारतवर्ष के लिए शुभ नहीं होता है। इस बात की पुष्टि श्री के. एन. राव ने एस्ट्रोलोजिकल मैग्जीन में छपे अपने लेख **"डाट्स आफ डेस्टनी"** में भी की है।

ज्योतिषशास्त्र के शास्त्रीय ग्रन्थों में कहा गया है कि यदि किसी भाव में 44 बिन्दु होते हैं तो वह भाव सबसे श्रेष्ठ परिणाम देता है, जबकि 14 से कम बिन्दुओं वाला भाव अपना कारकत्व ही खो देता है। 28 बिन्दुओं वाला भाव औसत परिणाम देता है।

यहां यह बात याद रखनी आवश्यक है कि भाव के बिन्दुओं को देखने के साथ ही साथ ज्योतिषशास्त्र के सामान्य सिद्धान्तों को भी लगाना चाहिए। यदि भाव, भावेश से दृष्ट हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और भावेश बली हो तथा भाव का कारक भी शुभ स्थिति में हो तो भाव सम्बन्धित शुभ फलों में अत्याधिक बढ़ोतरी होती है।

यदि लग्न भाव में कम बिन्दु होते हैं तो जातक बिमारियों से ग्रस्त होता है एवं उसके जीवन में खुशियां नहीं होती हैं, द्वितीय भाव के कम बिन्दुओं का अर्थ है कि धनाभाव, तृतीय भाव के कम बिन्दु जातक को कमजोर बनाता है, चतुर्थ खुशियों में कमी करता है, पंचम बुद्धिमता का अभाव एवं दुष्ट बुद्धि, षष्टम बिमारियों से प्रतिरोध करने की अक्षमता एवं शत्रुओं के वश में होना, सप्तम वैवाहिक जीवन में अलगाव, अष्टम अल्पायु, नवम पापधर्मिता, दशम सम्मान एवं आत्मसम्मान की कमी अथवा अजीविका में खलल, एकादश आय में कमी अर्थात गरीबी और द्वादश भाव के कम बिन्दु व्यय की कमी दिखाते हैं।

1. लग्न की अपेक्षा षष्टम, अष्टम एवं द्वादश भावों में कम बिन्दु होना अधिक अच्छा है।
2. जब ग्रह बली राशि में गोचर करता है तो शुभ परिणाम देता है और कमजोर राशि में अशुभ परिणाम देता है।
3. उपरोक्त नियम को ज्योतिष के सामान्य सिद्धान्तों के अनुसार रूपान्तर करके लगाना चाहिए, जैसे कि ग्रह स्वगृही अथवा उच्च का होने पर अच्छे परिणाम देता है, आदि।
4. जिस भाव में 25 से लेकर 30 बिन्दु होते हैं वह भाव न बली होता है और न निर्बली होता है। यदि दशम भाव में बिन्दुओं की संख्या 36 से अधिक हो एवं भाव पापी ग्रहों से किसी भी प्रकार से सम्बन्धित नहीं हो तो, जातक अपने प्रयासों से अर्जित धन–सम्पदा द्वारा एक खुशहाल जीवन जीने की ओर अग्रसर होता है।
5. यदि दशम भाव की अपेक्षा एकादश भाव में अधिक बिन्दु होते हैं तो अधिक अर्जित करने के लिए भी जातक को अपेक्षाकृत कम संघर्ष करना पड़ता है। इसके विपरीत यदि दशम भाव में एकादश भाव की अपेक्षा अधिक बिन्दु होते हैं तो इसका यह अर्थ होता है कि जातक अधिक संघर्ष करने के उपरान्त भी अपेक्षाकृत कम अर्जित करता है अथवा उसको अवसर तो मिलते हैं लेकिन वह उनका सदुपयोग नहीं कर पाता है।

6. यदि दशम भाव 36 से अधिक बिन्दुओं वाला होकर अशुभ ग्रहों से अप्रभावित होता है तो ऐसा जातक अपने प्रयासों द्वारा अर्जित धन–सम्पदा के साथ एक सुखी जीवन यापन करता है।

7. **श्री के. एन. राव** के अनुसार जीवनवृत्त में उन्नति के दृष्टिकोण से लग्न, सूर्य, पदलग्न एवं कारकांश से दशम और एकादश भावों को अवश्य देखना चाहिए। दशम भाव उन्नति के स्वभाव अथवा प्रकृति को और एकादश भाव उन्नति की सीमा को बताता है।

सर्वाष्टकवर्ग की विवेचना करने में निम्नलिखित नियम भी लगाये जा सकते हैं:

(अ) लग्न से दशम एवं एकादश भाव के शुभ बिन्दुओं की संख्या को देखें। यदि एकादश भाव में अधिक बिन्दु हैं तो जातक की उन्नति भी अधिक होती है। बिन्दुओं में अन्तर जितना अधिक होता है, उन्नति भी उतनी अधिक होती है।

(ब) यदि दशम भाव 28 अथवा अधिक बिन्दुओं के कारण अधिक बली है लेकिन एकादश भाव कम बिन्दुओं के कारण कमजोर है, तो जीवन में उन्नति के कुछ स्तरों में स्थिरता अथवा ठहराव आता है।

(स) यदि एकादश भाव अधिक बिन्दुओं के कारण बली हो और दशम भाव बहुत कमजोर हो तो ऐसी स्थिति में दशम भाव का फल बुरा नहीं होता है क्योंकि, बली एकादश भाव, जातक के जीवन में उत्थान लाता है, अर्थात जातक कम मेहनत से भी बहुत अच्छी उन्नति प्राप्त करता है।

(द) उपरोक्त सभी नियमों का, परिणाम प्राप्ति की दशा–अन्तर्दशा एवं गोचर के साथ समन्वय करके फल कहना चाहिए।

अन्तरः

शनि व्यवसाय का नैसर्गिक कारक होता है अतः उपरोक्त नियमों को शनि से दशम एवं एकादश भावों में लगाकर निर्णय करना चाहिए। विशेषकर राजनेताओं के संदर्भ में और उन उच्च शासनाधिकारियों के संदर्भ में यह अतिआवश्यक है जिनको राजनेताओं से संरक्षण प्राप्त होता है।

जो जातक प्रशासनिक व्यवस्था से जुडे होते हैं और साथ ही साथ जिनके पिता एवं सास–ससुर उच्च पदाधिकारी होकर अधिक उंचाइयों को प्राप्त करने

की सही स्थिति में होते हैं, उनके लिए उनके लिए सूर्य से दशम एवं एकादश भावों को देखना चाहिए। इस संदर्भ में संजय गांधी की जन्मपत्रिका को देखें।

स्वर्गीय एन. टी. रामाराव की जन्मपत्रिका के सर्वाष्टकवर्ग में लग्न से दशम भाव में 35 और एकादश भाव में 34 बिन्दु हैं।

41	23 शुक्र	23 सूर्य बुध	21 मंगल
30 केतु	एन. टी. रामाराव 28.05.1923 16:43:00 गुडीवाडा, आन्ध्र प्रदेश		35
28			34 राहू
30	22	25 लग्न चन्द्रमा बृहस्पति	25 शनि

शनि से दशम भाव में 21 और एकादश भाव में 35 बिन्दु हैं।

यद्यपि दशम भाव में कम बिन्दु हैं लेकिन बली एकादश भाव ने दशम भाव को बल प्रदान करके ऊपर उठा दिया।

इसी प्रकार षष्टम भाव में 41 बिन्दु हैं जिन्होने उन्हे जीवन में संघर्ष करने का बल प्रदान किया।

8. द्वादश भाव के बिन्दुओं की संख्या, एकादश भाव के बिन्दुओं की संख्या से अधिक होने की स्थिति में (अ) जातक अपनी आय से अधिक व्यय करता है जिसके लिए वह ऋण भी लेता है (ब) जातक की आय विदेशी स्त्रोतों अथवा विदेश से होती है अथवा वह बहुराष्ट्रीय कम्पनी में कार्यरत होता है। कोई भी जातक तभी विदेश जाता है जब उसकी जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव एवं चतुर्थेश पीड़ित होकर द्वादश भाव अथवा द्वादशेश से सम्बन्ध बनाता है।

9. (अ) केन्द्र एवं त्रिकोण भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम एवं दशम भाव के बिन्दुओं की संख्या का योग करें। इन भावों का यह समूह जातक के ***आन्तरिक स्वरूप*** को बताता है।

   (ब) द्वितीय, तृतीय, षष्टम, अष्टम, एकादश एवं द्वादश भाव के बिन्दुओं

की संख्या का योग करें। इन भावों का समूह जातक के *बाह्य स्वरूप* का ज्ञान कराता है।

अब यह देखें कि किस समूह के बिन्दुओं का योग अधिक है। यदि *आन्तरिक स्वरूप* के बिन्दुओं का योग अधिक होता है तो जातक अपने अच्छे कर्मों, अनुभव एवं ज्ञान के बलबूते पर धन–सम्पदा अर्जित करके समृद्ध होता है। ऐसा जातक धनवान होने के साथ–साथ धर्मात्मा और दानी–दाता भी होता है।

यदि *बाह्य स्वरूप* के बिन्दुओं का योग अधिक हो तो जातक अतिलोभी, बहुभक्षी, धूर्त, कपटी, चिन्ताग्रस्त और ठग होता है। ऐसा जातक जीवनभर धन एकत्रित करने के लिए ललायित रहता है और इसके लिए वह अनैतिक कार्य करने में भी हिचकता नहीं है अथवा ऐसे जातक को किसी भी लक्ष्य प्राप्ति के लिए अधिक संघर्ष करना पड़ता है।

10. जन्मपत्रिका के सभी बारह भावों को निम्नलिखित चार समूहों अथवा खण्डों में बांटा गया है:

खण्ड	भाव		
बन्धु खण्ड	प्रथम	पंचम	नवम
सेवक खण्ड	द्वितीय	षष्टम	दशम
पोषक खण्ड	तृतीय	सप्तम	एकादश
घातक खण्ड	चतुर्थ	अष्टम	द्वादश

प्रत्येक खण्ड के भावों के बिन्दुओं की संख्या का योग करें।

यदि बन्धु खण्ड के बिन्दुओं की कुल संख्या, अन्य खण्डों के बिन्दुओं से अधिक होती है तो जातक अपनी आजीविका, बिना किसी अन्य के आधीन कार्य किये हुए, अपने ही स्त्रोतों से अर्जित करता है। ऐसा जातक धनी एवं धर्मात्मा होता है और अपना स्वयं का कारोबार स्थापित कर सकता है। यदि बन्धु खण्ड के बिन्दुओं की संख्या 88 अथवा इससे अधिक होती है तो जातक एक सफल व्यापारी होता है।

यदि सेवक खण्ड के बिन्दुओं की संख्या, अन्य खण्डों के बिन्दुओं से अधिक होती है तो जातक दूसरों के अधीन कार्य करके, उनके कार्यों को आगे बढ़ाने वाला होता है।

यदि पोषक खण्ड के बिन्दुओं की संख्या, अन्य खण्डों के बिन्दुओं की संख्या से अधिक होती है तो जातक धनवान होता है।

घातक खण्ड के बिन्दुओं की संख्या कभी भी 73 से अधिक नहीं होनी चाहिए। यदि यह संख्या 80 या इससे अधिक होती है तो जातक कभी भी शत्रुओं एवं ऋण से मुक्ति नहीं पाता है। ऐसा जातक दिखावटी होता है और उसको परिवारिक खुशियां भी प्राप्त नहीं होती हैं।

11. समृद्धि का समयः

राशियों के अनुसार, जन्मपत्रिका को निम्नलिखित तीन खण्डों अथवा समूहों में बांटा गया है।*

1.	मीन राशि से मिथुन राशि तक	बचपन का समय
2.	कर्क राशि से तुला राशि तक	युवास्था का समय
3.	वृश्चिक राशि से कुंभ राशि तक	वृद्धावस्था का समय

प्रत्येक समूह की राशियों में प्राप्त बिन्दुओं का योग करें। जिस समूह के बिन्दुओं की संख्या सबसे अधिक होती है, जातक अपने जीवन के उस समय में अधिक उन्नति–प्रगति प्राप्त करता है।

यदि तीनों समूहों के बिन्दुओं में अधिक अन्तर नहीं होता है तो ऐसा जातक अपने जीवन में अधिक उतार–चढ़ाव नहीं देखता और उसका जीवन शान्तिपूर्वक व्यतीत होता है।

मतान्तर से जीवन का प्रारम्भ लग्न से होता है, अतः

1. लग्न से चतुर्थ भाव, बचपन को दर्शाते हैं।
2. पंचम से अष्टम भाव, युवावस्था को दर्शाते हैं।
3. नवम से द्वादश भाव, वृद्धावस्था को दर्शाते हैं।

किसी भी जन्मपत्रिका के फलित करते समय यह अवश्य देखना चाहिए कि जीवन के किस अवस्था को दर्शाने वाले भावों के समूह में अधिकतम शुभ ग्रहों के साथ ही साथ अधिकतम शुभ बिन्दु हैं। जिस अवस्था के समूह में अधिकतम शुभ ग्रह होते हैं, जातक की वह अवस्था अधिक सुखमय होती है।

* इसका आधार आयुर्दाय के अल्पायु, मध्यायु अथवा पुर्णायु के समान है।

डाक्टर पी. एस. शास्त्री, इस विषय पर अपना अलग मत प्रस्तुत करते हैं। उनके मतानुसारः

1. प्रथम, चतुर्थ, सप्तम एवं दशम भावों के बिन्दुओं को जोड़ें। यह समूह बचपन कहलाता है।
2. द्वितीय, पंचम, अष्टम एवं एकादश भावों के बिन्दुओं को जोड़ें। यह समूह युवावस्था कहलाता है।
3. तृतीय, षष्टम, नवम एवं द्वादश भावों के बिन्दुओं को जोड़ें। यह समूह वृद्धावस्था कहलाता है।

अधिकतम बिन्दुओं वाले समूह द्वारा इंगित जीवन की अवस्था सबसे अधिक सुखमय होती है।

12. **समृद्धि की दिशाः**

विभिन्न राशियों द्वारा इंगित की जाने वाली दिशाओं के अनुसार, राशियों के चार समूह इस प्रकार से हैं:

मेष, सिंह और धनु	**पूर्व दिशा**
वृषभ, कन्या और मकर	**दक्षिण दिशा**
मिथुन, तुला और कुंभ	**पश्चिम दिशा**
कर्क, वृश्चिक और मीन	**उत्तर दिशा**

प्रत्येक समूह की राशियों में प्राप्त बिन्दुओं की संख्या का योग करें। जिस दिशा को इंगित करने वाले राशियों के समूह के बिन्दुओं की संख्या अधिकतम होती है एवं साथ ही साथ शुभ ग्रह भी अधिक होते हैं, उस दिशा में जातक की उन्नति–प्रगति अधिक होती है। अतः ऐसे अधिकतम बिन्दुओं वाले समूह द्वारा इंगित दिशा में कार्य करना, जातक के लिए अधिक लाभदायक होता है।

मतान्तर से ज्योतिष के कुछ ग्रन्थों में, निम्नलिखित प्रकार से राशि के स्थान पर भावों का प्रयोग करके दिशा निर्धारण बताया गया हैः

1. प्रथम, पंचम एवं नवम भाव के बिन्दुओं का योग करें। यह समूह पूर्व दिशा कहलाता है।

2. द्वितीय, षष्टम एवं दशम भाव के बिन्दुओं का योग करें। यह समूह दक्षिण दिशा कहलाता है।

3. तृतीय, सप्तम एवं एकादश भाव के बिन्दुओं का योग करें। यह समूह पश्चिम दिशा कहलाता है।

4. चतुर्थ, अष्टम एवं द्वादश भाव के बिन्दुओं का योग करें। यह समूह उत्तर दिशा कहलाता है।

13. जीवन स्तर में अचानक उन्नति (उछाल):

यदि जन्मपत्रिका के एक भाव से दूसरे भाव में बिन्दुओं की संख्या में अन्तर अधिक नहीं होता है तो यह स्थिति ही अधिक अच्छी होती है। बिन्दुओं में अधिक अन्तर, जीवनवृत्त एवं भाग्य में भी उतार–चढ़ाव दर्शाता है जबकि बिन्दुओं का समान रूप से सभी भावों में लगभग एक जैसी स्थिति में होना, जीवन की समरसता को दिखाता है। जीवन में अधिक उतार–चढ़ाव अधिक शुभ नहीं होते हैं क्योंकि एक तो ये अधिक समय तक नहीं रहते हैं और दूसरा एक बार उन्नति के शिखर पर पहुंचने के पश्चात्, अचानक रसातल में जाना जातक को शारीरिक एवं मानसिक, दोनों प्रकार से पीड़ित करता है तथा इस प्रकार की असमानता जातक के जीवन में विष घोलने का काम करती है। अष्टकवर्ग पद्धति में इसको बिन्दुओं के अन्तर से जाना जाता है।

इस संदर्भ में स्वर्गीय राजीव गांधी की जन्मपत्रिका एक ज्वलन्त उदाहरण है जिसमें एकादश भाव में 50 बिन्दु है जबकि दशम भाव में 31 बिन्दु हैं। इनके जीवन में तारे की तरह, अचानक उन्नति की चमक आई और जिस तेजी से चमक आई थी, उसी तेजी से ही अचानक उतार भी आया।

विशेषः यदि लग्न, दशम एवं एकादश भाव में 30 या अधिक बिन्दु होते हैं तो जातक 37वें वर्ष की आयु में उन्नति करेगा।

14. सन्ताप और पीड़ा का समयः

लग्न से शनि द्वारा गृहीत भाव तक के बिन्दुओं का योग करें। प्राप्त योग को 7 से गुणा करके, गुणनफल को 27 से भाग करें। प्राप्त भागफल उस आयु को दर्शाता है जिस आयु में जातक को किसी भी रूप में सन्ताप एवं पीड़ा की अनुभूति होती है।

कभी–कभी बिन्दुओं की गिनती शनि द्वारा गृहीत भाव से लग्न भाव तक भी

की जाती है। इसमें भी शनि द्वारा गृहीत राशि एवं लग्न, दोनों के बिन्दुओं को भी गिना जाता है तथा प्राप्त योग द्वारा उपरोक्त तरीके से ही आयु के वर्षों को प्राप्त किया जाता है।

कभी–कभी शनि द्वारा गृहीत राशि तक गिनने की अपेक्षा लग्न से मंगल एवं राहु अथवा मंगल एवं राहु से लग्न तक गिनती की जाती है।

सन्ताप और पीड़ा का समय ज्ञात करने के लिए एक अन्य तरीके से भी गणना की जाती है। लग्न से शनि द्वारा गृहीत राशि के बिन्दुओं के योग के साथ ही साथ मंगल एवं राहू तक के बिन्दुओं का योग किया जाता है। प्राप्त अंकों को अलग–अलग 7 से गुणा और गुणनफल को 27 से भाग किया जाता है। भाग करने पर शेषफल नक्षत्र की संख्या को इंगित करता है जिस पर और जिससे त्रिकाण के नक्षत्र पर पापी ग्रहों का गोचर चिन्ताओं एवं दुःख का कारण हो सकता है।

15. **खुशियों का समयः**

खुशियों और सुखमय समय को ज्ञात करने के लिए बृहस्पति, शुक्र एवं अन्य शुभ ग्रहों के संदर्भ में उपरोक्त तरीके से गणनायें की जा सकती हैं।

राजयोग प्राप्ति की स्थितिः

1. मंगल और शुक्र उच्च राशि में स्थित हों, शनि और बृहस्पति त्रिकोण में स्थित हों तथा लग्न में 40 अथवा अधिक बिन्दु हों।
2. यदि लग्न, चन्द्र लग्न एवं सूर्य लग्न, तीनों लग्नों में 30 बिन्दु हों, तो जातक अपने प्रयासों से उन्नति प्राप्त करता है।
3. यदि सूर्य एवं बृहस्पति, अपनी–अपनी उच्च राशियों में 30 बिन्दुओं के साथ स्थित हों और लग्न के बिन्दुओं की संख्या, अन्य भावों के बिन्दुओं से अधिक हो, तो जातक राजा के समान जीवन यापन करता है।
4. चतुर्थ एवं एकादश, दोनों भावों में 30–30 बिन्दु हों, तो जातक 40 वर्ष की आयु में समृद्ध होता है।
5. यदि लग्न, चन्द्रराशि, दशम एवं एकादश भाव, प्रत्येक में 30–30 बिन्दु हों और लग्न अथवा चन्द्रमा बृहस्पति से दृष्ट हो, तो जातक राजा के समान जीवन जीता है।

6. मंगल एवं शुक्र, अपनी–अपनी उच्च राशियों में, शनि कुंभ राशि में और बृहस्पति धनु राशि में 40 बिन्दुओं के साथ लग्न में स्थित हों।

7. उच्च का सूर्य लग्न में और चतुर्थ भाव में बृहस्पति 40 बिन्दुओं के साथ हो।

8. यदि पापी ग्रह शनि, राहु अथवा मंगल, जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित हों तो इनसे सम्बन्धित सर्वाष्टक वर्ग के भाव में प्राप्त बिन्दुओं की संख्या के समान अर्थात सर्वाष्टक वर्ग के अष्टम भाव में प्राप्त बिन्दुओं की संख्या के समान आयु में, जातक का अशुभ समय होगा।

9. इसी प्रकार से यदि शुभ ग्रह केन्द्र अथवा त्रिकोण में हों तो उनसे सम्बन्धित सर्वाष्टकवर्ग के भाव में प्राप्त बिन्दुओं की संख्या द्वारा इंगित आयु का समय, जातक के लिए अच्छा समय होता है।

10. पति–पत्नी की जन्मपत्रिकाओं में, एक–दूसरे की चन्द्रराशि में 28 बिन्दु से अधिक होने की स्थिति में उनका वैवाहिक जीवन सुखमय होता है।

11. लग्न जातक एवं सप्तम भाव उसका जीवनसाथी है। दोनों भावों के बिन्दुओं की संख्याओं को देखकर यह ज्ञात करें कि कौन सा भाव बली है। इन दोनों में से जो बली होता है वह अपने जीवन साथी को अपने वश में रखता है।

प्राचीन शास्त्रीय ग्रन्थ मानसागरी के अनुसार यदि किसी भी भाव में प्राप्त बिन्दुओं की संख्या निम्नलिखित होती है तो उस भाव के परिणाम को इस प्रकार से होते हैंः

बिन्दु	परिणाम
14 बिन्दु	कष्टकारी, मृत्युभय
15 बिन्दु	शासन अर्थात सरकार से डर
16 बिन्दु	दुर्गति, दुर्भाग्य
17 बिन्दु	बिमारी अथवा स्थान हानि
18 बिन्दु	धन की हानि
19 बिन्दु	सगे–सम्बन्धियों से लडाई–झगडा
20 बिन्दु	अधिक व्यय, कुकर्मों में लिप्ति

बिन्दु	परिणाम
21 बिन्दु	बिमारी, धनहानि
22 बिन्दु	स्मरण–शक्ति अथवा विवेक की हानि, कमजोरी और सगे–सम्बन्धियों से परेशानियां
23 बिन्दु	चिन्तायें, कष्ट, हानि
24 बिन्दु	अचानक हानि अथवा अतिव्ययता से धनहानि
25 बिन्दु	दुर्भाग्य
26 बिन्दु	परेशानियां, स्थिलता, अस्थिर स्वभाव
27 बिन्दु	अधिक व्यय, चिन्तायें, व्याकुलता और अस्पष्ट विचार एवं दुविधाजनक दिमाग
28 बिन्दु	धनलाभ लेकिन सन्तुष्टी नहीं
29 बिन्दु	जातक सम्मान पाता है
30 बिन्दु	पवित्र एवं शुद्ध फल, यश–कीर्ति और धन प्राप्ति
31 से 33 बिन्दु	अच्छा प्रयास या चेष्टा, मान–सम्मान
34 से 40 बिन्दु	जातक सभी भौतिक सुख–समृद्धियां प्राप्त करता है
41 बिन्दु	उत्तम धन–सम्पदा और कई स्रोतों से आय
42 बिन्दु	भौतिक सुख–समृद्धि, धर्मात्मा, धनवान, प्रेम एवं सम्मान की प्राप्ति
43 बिन्दु	धन–सम्पदा और खुशियां
44 से 45 बिन्दु	कई स्रोतों से धनलाभ, मान–सम्मान की प्राप्ति
46 से 47 बिन्दु	जातक सभी शुभ गुणों से युत होकर पवित्र एवं श्रेष्ठ कार्य करता है

यदि किसी भाव में 48 अथवा अधिक बिन्दु होते हैं तो जातक एक राजा के समान सभी शुभ गुणों से युत होता है जैसे कि वह सभी के प्रति दया दिखाता है, सबसे मान–सम्मान पाता है, धर्म से युत होता है, आदि।

जब हम किसी भी भाव की विवेचना करते हैं तो हमें कालपुरुष की जन्मपत्रिका में उस भाव के नैसर्गिक स्वामी का बल और उसके द्वारा अपने से समान भाव आगे प्रदत्त किये गए बिन्दुओं की संख्या को भी अवश्य देखना चाहिए। किसी भी ग्रह का अपना भिन्नाष्टक वर्ग उस ग्रह एवं उस ग्रह के स्वामित्व वाले भावों का बल ज्ञात करने के लिए बहुत उपयोगी है।

उदाहरणतः कन्या लग्न की जन्मपत्रिका में बृहस्पति, चतुर्थ एवं सप्तम भावों का स्वामी होता है, तो इस जन्मपत्रिका में वह अपने भिन्नाष्टकवर्ग में इन दोनों भावों में बिन्दु प्रदान करने वाला हो सकता है। इसके अतिरिक्त कालपुरुष की जन्मपत्रिका में बृहस्पति नवम एवं द्वादश भावों का स्वामी होने के कारण इन भावों का स्थिर कारक है। अतः जब हम नवम भाव के बल का आंकलन करेंगे तो हम आवश्यक रुप से बृहस्पति के भिन्नाष्टक वर्ग में धनु राशि, बृहस्पति एवं उससे नवम भाव का बल भी देखेंगे।

इसी प्रकार षष्टम भाव की विवेचना के लिए हम षष्टम भाव और षष्टेश द्वारा इस भाव में प्रदान किये गये बिन्दुओं को तो देखेंगे ही लेकिन इसके अतिरिक्त कालपुरुष की षष्टम भाव की राशि कन्या, षष्टेश बुध और बुध से षष्टम भाव को भी देखेंगे। इसलिए लग्न की विवेचना करते समय हम केवल जन्मपत्रिका के लग्न को ही नहीं देखेंगे अपितु मेष राशि और इसके स्वामी मंगल को भी देखेंगे।

सर्वाष्टक वर्ग द्वारा फलित–जीवन का कौन सा भाग सुखमय होगाः

जीवनवृत्त को चार आश्रमों में बांटा गया हैः 1.ब्रह्मचर्य 2. गृहस्थ 3.वानप्रस्थ 4. सन्यास।

जन्मपत्रिका में प्रथम से चतुर्थ भाव प्रारम्भिक जीवन, चतुर्थ से सप्तम भाव युवावस्था, सप्तम से दशम भाव मध्यावस्था और दशम से द्वादश भाव अन्तिम अर्थात वृद्धावस्था को इंगित करते हैं। इस प्रकार से अवस्था इंगित करने वाले भावों के जिस समूह में अधिकतम बिन्दु होते हैं जातक की वह अवस्था, दूसरी अवस्थाओं की अपेक्षा अधिक सुखमय होती है। यहां एक अन्य विचारधारा के मतानुयायी भी हैं जो जीवनवृत्त को तीन भागों में बांटते हैं, 1 से 33 साल तक अल्पायु, 33 से 66 साल तक मध्यायु और 66 से 100 साल तक पूर्णायु। इसके लिए क्रमशः प्रथम से चतुर्थ भाव तक, पंचम से अष्टम भाव तक और नवम से द्वादश भाव तक के बिन्दुओं की गणना की जाती है। जिन भावों के समूह में

अधिकतम बिन्दु होते हैं, उस समूह द्वारा इंगित आयुखण्ड अधिकतम सुखमय होता है। ऐसा माना जाता है कि नवम से द्वादश भाव तक का समूह धन–सम्पति के साथ–साथ अध्यात्मिक सुख पाने के लिए भी श्रेष्ठ होता है, अतः अन्य दो खण्डों की अपेक्षा इस इस खण्ड में अधिकतम बिन्दु होना अधिक अच्छा है। यह भी माना जाता है कि धन, धर्म और पुण्य इसी खण्ड में आते हैं जो वानप्रस्थ के साथ ही साथ सन्यास आश्रम से सम्बन्धित होता है। यदि इस खण्ड में अधिकतम बिन्दु हैं तो शेष जीवन आसान हो जाता है।

अन्य मिश्रित नियमः

सर्वाष्टक वर्ग में षष्टम, अष्टम एवं द्वादश भाव की अपेक्षा लग्न बली होना चाहिए।

द्वादश भाव की अपेक्षा एकादश भाव में अधिक बिन्दु होने चाहिए। विपरीत स्थिति होने पर आय की अपेक्षा व्यय अधिक होता है।

एकादश भाव के बिन्दुओं की संख्या, द्वितीय भाव के बिन्दुओं की संख्या के समान अथवा अधिक होनी चाहिए। सामान्यतः समान होना भी अधिक अच्छा नहीं माना जाता है क्योंकि एकादश भाव प्राप्ति का भाव है और द्वितीय भाव संचित सम्पति का भाव है। यदि दोनों समान होते हैं तो ऐसी स्थिति में जातक के पास सम्पति संग्रह करने की शक्ति नहीं होती है।

एकादश भाव, षष्टम भाव की अपेक्षा अधिक बली होना चाहिए अन्यथा शत्रुओं द्वारा धन का हरण होता है।

सामान्यतः 28 से कम बिन्दुओं वाला भाव निर्बली होता है लेकिन यदि बिन्दुओं की संख्या 23 से भी कम होती है तो भाव पूर्णरूप से बलहीन हो जाता है। किसी भी भाव में, भाव सम्बन्धित फलों को संग्रह करने की क्षमता होने के लिए उससे त्रिकोण के भावों में, उस भाव से अधिक नहीं तो कम से कम उस भाव के समान बिन्दु होने आवश्यक होते हैं।

एकादश भाव के बिन्दुओं की संख्या तृतीय एवं षष्टम भाव के बिन्दुओं की संख्या की तुलना में अधिक होना आवश्यक है, अन्यथा धन–सम्पति का सगे–सम्बन्धियों अथवा अन्य लोगों के द्वारा हरण हो जाता है। अतः इस दृष्टिकोण से एकादश भाव का बली होना आवश्यक है।

जन्मपत्रिका में दशम भाव हमेशा ही बली होना चाहिए लेकिन एकादश भाव से अधिक नहीं। यद्यपि ***वेंकटेश*** के मतानुसार दशम भाव सबसे अधिक बली होना चाहिए क्योंकि यह सबसे अधिक बली केन्द्र होता है और हमारे कर्मों को दर्शाता है। हमारे कर्मों का स्तर कभी भी नीचे नहीं गिरना चाहिए, अन्यथा हमारे सारे कर्म एवं निर्णय श्रेष्ठता लिए नहीं होगें।

दशम भाव को अष्टम भाव, जो कि अस्थायी आनन्द, गुप्त कार्यों एवं अचानक किसी बात पर उत्तेजित होने के कारण किये गए अविध्वंसी कर्म को दर्शाता है, की अपेक्षा बली होना चाहिए।

किसी भी जातक की आयुर्दाय के लिए अष्टम भाव के बिन्दुओं को देखा जाता है जो लग्न भाव की तुलना में कम होने चाहिए। सप्तम भाव के बिन्दुओं को भी लग्न के बिन्दुओं से कम होना चाहिए अन्यथा जातक का जीवन दुःखमय अथवा बिमारियों से त्रस्त होता है। ऐसा जातक अपनी भार्या द्वारा शासित होता है अथवा उसकी भार्या जातक की अपेक्षा अच्छी स्थिति में होती है। साथ ही साथ यदि बिन्दुओं में अत्याधिक अन्तर होता है तो ऐसा जातक अल्पायु भी हो सकता है। यदि लग्न जन्म है तो सप्तम भाव मृत्यु को इंगित करता है, अशुभ ग्रह की दशा–अन्तर्दशा में जीवन को मृत्यु अपने आवेश में समा सकती है।

सेवाओं अर्थात नौकरी आदि के लिए षष्टम भाव के बिन्दुओं की संख्या दशम भाव की तुलना में अधिक नहीं होनी चाहिए। यदि षष्टम भाव में अधिक बिन्दु होते हैं तो ऐसा जातक सदैव दूसरों की सेवा में लगा रहता है अथवा उसमें निर्णय लेने में निश्चित्ता का अभाव और नेतृत्व के गुणों की कमी होती है।

जन्मपत्रिका में पंचम भाव पूर्वपुण्य कर्मों को इंगित करता है। इसमें 33 से कम बिन्दु नहीं होने चाहिए। यह लग्न भाव से बली अथवा कम से कम उसके समान बली लेकिन तृतीय, षष्टम एवं अष्टम भावों से अधिक बली होना चाहिए। जब पंचम भाव एवं द्वादश भावों के बिन्दुओं की संख्या समान होती है तो अध्यात्मिक उन्नति तेजी से होती है।

चतुर्थ भाव के बिन्दुओं की संख्या लग्न, दशम भाव और नवम भाव से कम नहीं होनी चाहिए क्योंकि चतुर्थ भाव सुख एवं आनन्द भोगने के सामर्थ्य को दर्शाता है। जातक इतना समर्थ होना चाहिए कि वह कर्मों के फल एवं भाग्य का आनन्द ले सके। भौतिक सुख के लिए चतुर्थ भाव एवं द्वितीय भाव समान बली होने चाहिए। अर्जित धन–सम्पति का आनन्द लेने के लिए चतुर्थ भाव को एकादश भाव से बली होना चाहिए। यह स्थिति होने पर जातक अपने से बडों

की सहायता करने में भी समर्थ होता है।

तृतीय भाव पौरुषता, जीवनशक्ति या प्राणत्व और साहस के लिए देखा जाता है। यदि यह भाव बली होता है तो जातक दमदार व्यक्तिव का स्वामी होता है और यहां तक कि वह एक राजनेता अथवा अच्छा खिलाडी हो सकता है।

द्वितीय भाव को द्वादश, षष्टम एवं अष्टम भावों की अपेक्षा बली होना चाहिए। यदि द्वितीय भाव, सप्तम भाव की अपेक्षा अधिक बली है तो यह बहुविवाह को इंगित करता है। वैवाहिक खुशियों के लिए द्वितीय भाव के बिन्दुओं की संख्या सप्तम भाव के बिन्दुओं की संख्या से कम होनी चाहिए।

वाहन के लिए सर्वाष्टक वर्ग में चतुर्थ भाव और उसके बाद चतुर्थ से त्रिकोण भावों अर्थात अष्टम एवं द्वादश भावों के बिन्दुओं को देखें। यदि इन भावों में अच्छी संख्या में बिन्दु हों और शुक्र भी बली हो तो ऐसे जातक के पास कई वाहन होते हैं।

सर्वाष्टक वर्ग में किसी एक भाव में अच्छी संख्या में बिन्दु हो सकते हैं, माना कि 31 बिन्दु हैं और कोई एक ग्रह, उस भाव में 0 बिन्दु प्रदान करता है।* यदि यह अशुभ भाव अथवा ग्रह होता है तो यह स्थिति शुभ होती है।

हम लग्न भाव से ही जीवन के सभी क्षेत्रों को नहीं देखते हैं। यदि किसी भी ग्रह (कारक की तरह भी) से पंचम भाव अच्छी स्थिति में अर्थात शुभ नहीं है तो उसके अशुभ परिणामों को कम करने एवं शुभ परिणामों को बढ़ाने के लिए उसके परिहार के उपाय किये जा सकते हैं। इसका कारण यह है कि जीवन में किसी भी प्रकार का सुख प्राप्त करने के लिए उससे सम्बन्धित पूर्वपुण्यों का होना आवश्यक है और साथ ही साथ प्राप्त होने वाले सुख को भोगने के लिए भाग्य का बली होना भी आवश्यक है अर्थात उस ग्रह से नवम भाव भी बली होना चाहिए। यदि किसी भी भाव में कोई ग्रह 0 बिन्दु देता है तो उसका योग 27 से अधिक नहीं हो सकता है क्योंकि यह संभव नहीं है। केवल जब किसी जन्मपत्रिका में नीचभंग राजयोग होता है तो इस प्रकार की असंगत्तायें पाई जाती है जैसे कि 3 या 4 ग्रह अधिकतम बिन्दु प्रदान करते है और दूसरे ग्रह निम्नतम अथवा 0 बिन्दु प्रदान करते हैं। यही कारण है कि नीच भंग राजयोग जातक को सफलता की अत्याधिक उंचाइयों में ले जाता है और अचानक नीचे गिरा देता है।

---

* यह स्थिति होने की बहुत ही कम संभावनायें होती हैं अथवा यह अपने आप में अतिविशिष्ट स्थिति होएगी क्योंकि यदि सर्वाष्टक वर्ग में कोई भाव इतना बली होता है तो प्रत्येक ग्रह उसमें कम से कम 1 या 2 बिन्दु अवश्य ही प्रदान करता है।

नौकरी में पदोन्नतिः

सर्वाष्टक वर्ग में लग्न से दशम एवं षष्टम भाव के बिन्दुओं का योग करें। प्राप्त योग को जन्म नक्षत्र की संख्या से भाग करें और शेषफल को लग्न से दशम भाव के बिन्दुओं में योग कर दें। यदि इस प्रकार से प्राप्त संख्या 27 से अधिक है तो उसमें से 27 घटा दें और यदि नहीं है तो इस संख्या के बराबर जन्म नक्षत्र से आगे नक्षत्र गिनें। प्राप्त नक्षत्र पर सूर्य अथवा दशमेश के गोचर का समय जातक के लिए नौकरी में उन्नति का समय होता है।

बिमारी का समयः

स्वयं की बिमारी का समय ज्ञात करने के लिए सर्वाष्टक वर्ग में लग्न से अष्टमेश और सूर्य से अष्टमेश के बिन्दुओं का योग करके जन्म नक्षत्र की संख्या से भाग करें। प्राप्त शेषफल को लग्न से अष्टम भाव के बिन्दुओं से योग करें और उसमें से 27 को घटायें। जो शेष बचेगा उसको जन्म नक्षत्र की संख्या में जोड़ दें तो इस प्रकार जो नक्षत्र आयेगा उस पर अशुभ ग्रहों का गोचर जातक की बिमारी का समय सूचित करेगा जबकि शुभ ग्रहों का गोचर, विशेषकर बृहस्पति का गोचर रोग से विमुक्त होने का समय सूचित करेगा।

मंत्र सिद्धि अथवा अध्यात्मिक प्राप्तियों के लिए लग्न से पंचम एवं सूर्य से नवम भाव के बिन्दुओं को लेकर उपरोक्त प्रक्रिया से नक्षत्र ज्ञात किया जाता है। इस प्रकार प्राप्त नक्षत्र अथवा राशि में बृहस्पति के गोचर का समय मंत्र सिद्धि अथवा अध्यात्मिक प्राप्तियों में सफलता के लिए सही समय को इंगित करता है।

अध्याय 8

सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा फलित

सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा, जन्मपत्रिका के जातक को सूर्य द्वारा प्राप्त होने वाले शुभाशुभ परिणामों की विवेचना की जाती है। सूर्य को ग्रहों का राजा माना जाता है और पृथ्वी सहित सौरमण्डल के सभी ग्रह इसकी परिक्रमा करते हैं। पृथ्वी में जो जीवन है उसका मुख्य आधार सूर्य ही है, अतः जन्मपत्रिका में भी यह पिता का, राजा का, जड चेतना का, आत्मा का एवं आरोग्य का कारक ग्रह होता है। जन्मपत्रिका में सूर्य का बली होकर अधिकतम बिन्दुओं के साथ स्थित होना अत्यन्त शुभ फलदायक होता है। ज्योतिषशास्त्र के विभिन्न शास्त्रीय ग्रन्थों के मतानुसार, सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग में 0 से 8 बिन्दु प्राप्त करने वाले भावों में, सूर्य का गोचर निम्नलिखित फल देता है।

0 बिन्दु	मृत्यु अथवा मृत्युतुल्य कष्ट
1 बिन्दु	चिन्तायें, दुःख, बिमारियां
2 बिन्दु	धन–सम्पति की हानि, चोरी, शासन से विवाद
3 बिन्दु	व्यर्थ में भटकना, बुद्धि खराब होना
4 बिन्दु	अधिक शुभ अथवा अशुभ फल नहीं अर्थात मिले–जुले फल
5 बिन्दु	उच्च स्तर के ज्ञान की शिक्षा, पुण्यात्मा अर्थात धार्मिक लोगों से मुलाकात
6 बिन्दु	धन–दौलत, उच्च स्थिति, दबंग व्यक्तिव
7 बिन्दु	अधिकार सम्पन्न उच्च पद, सम्मान
8 बिन्दु	मंत्री, श्रेष्ठ गौरव एवं प्रतिष्ठा

यद्यपि अन्य सभी ग्रहों के संदर्भ में भी इसी प्रकार के फल कहे गये हैं लेकिन इनको यथावत नहीं लेना चाहिए अपितु प्राप्त होने वाले फल के निर्णय के लिए ज्योतिष के आधारभूत सिद्धान्तों की भी विवेचना करनी चाहिए। कोई भी ग्रह तभी शुभ फलदायक होता है जब वह स्वयं भी बली होता है, अर्थात

जन्मपत्रिका में उच्चराशि में स्थित हो, स्वराशि में हो, शुभकर्तरी योग में हो, वर्ग कुण्डलियों में बली हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और अपने भिन्नाष्टकवर्ग में 5 से अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित हो आदि। अन्य स्थितियों में होने से उसके फलों में अन्तर आ जाता है।

जन्मपत्रिका में सूर्य की विभिन्न भावों एवं राशियों में स्थिति और प्राप्त बिन्दुओं के आधार पर जातक को प्राप्त होने वाले परिणाम इस प्रकार हैं:

1. अपने भिन्नाष्टकवर्ग में 4 से कम बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर सूर्य, बलहीन माना जाता है, परिणामस्वरूप वह विपरीत फल देता है। यह देखा गया है कि यदि ये बिन्दु 3 से कम हैं और सूर्य निर्बली है अर्थात नीच राशि में स्थित है, शत्रु राशि में स्थित है, पापी ग्रहों के प्रभाव में है, पापकर्तरी योग में है, षष्टम–अष्टम या द्वादश भाव में है, तो इस पीड़ित स्थिति में ही यह अशुभ परिणाम देता है।

2. यदि सूर्य अधिकतम बिन्दुओं के साथ लग्न में और शुभ स्थिति, जैसे कि उच्च, स्वग्रही आदि में हो, तो जन्मपत्रिका के जातक को अच्छा व्यक्तिव एवं स्वास्थ्य देता है। 6 से अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर यह सूर्य जातक को जन्म से ही नेतृत्व करने की क्षमता देता है, अर्थात ऐसा जातक जन्म से ही नेतृत्व करने के गुणों से सम्पन्न होता है।

3. यदि सूर्य लग्न भाव में नीच राशि अथवा वृषभ अथवा मकर राशि में, 3 या कम बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो यह अपनी अन्तर्दशा और अपने राशीश अथवा नवमांशेश अथवा लग्न के नवमांशेश अथवा अपने नवमांश में स्थित ग्रह की दशा में, हृदय सम्बन्धित समस्यायें, जैसे कि हृदय का दौरा आदि देता है।

4. जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित होने पर सूर्य को पूर्ण दिशाबल होता है। यदि इस बली स्थिति के साथ ही साथ यह 5 से अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो राजयोग देता है।

5. जन्मपत्रिका के पंचम भाव में अधिकतम बिन्दुओं के साथ स्थित बली सूर्य, जातक को मंत्री अथवा राजदूत बनाता है, जबकि बलहीन सूर्य सन्तान के लिए अधिक शुभ नहीं होता है।

6. सामान्यतः तृतीय, षष्टम, दशम एवं एकादश भावगत सूर्य यदि पीड़ित स्थिति में नहीं हो तो बहुत ही श्रेष्ठ परिणाम देता है। इसका कारण यह

है कि ये सभी भाव उपचय* स्थान अर्थात वृद्धि के भाव हैं जहां स्थित होने पर सूर्य के सकारात्मक गुणों में वृद्धि होती है।

7. यदि सूर्य केन्द्र अथवा त्रिकोण अथवा द्वितीय भाव में 5 से अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित होकर, जन्म कुण्डली अथवा नवमांश कुण्डली में, मंगल अथवा राहू से युति करे अथवा दृष्ट हो तो, जातक अथवा उसके पिता की मृत्यु आग, दुर्घटना अथवा उंचे स्थान से गिरकर होने की संभावनायें होती हैं।

8. यदि किसी बच्चे का जन्म अश्लेषा के अन्तिम चरण अथवा मूल के प्रथम चरण में हो और सूर्य लग्न अथवा पंचम भाव में 2 या कम बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो उसके पिता की मृत्यु हो जाती है, अर्थात यह स्थिति पिता के आयुष्य के लिए शुभ नहीं होती है।

   यदि किसी बच्चे का जन्म रेवती अथवा अश्विनी नक्षत्र के 2 या 3 चरण में हो अथवा अश्लेषा या ज्येष्ठा के अन्तिम चरण में हो, तो उस बच्चे का अपने पिता से प्रथम मिलन सामान्य तरीके से नहीं होता है।

9. सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग में जो कक्ष्या बिन्दुहीन होती है, उस कक्ष्या में सूर्य का गोचर, जातक के लिए दिमागी तनाव, दरिद्रता, बिमारी एवं शासन से असन्तोष का कारण बनता है।

10. जिस जातक के लग्न में बलहीन सूर्य 3 से कम बिन्दुओं के साथ स्थित होता है, उस जातक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होता है और वह बिमारियों की चपेट में आसानी से आ जाता है।

11. ज्योतिष के शास्त्रीय ग्रन्थों में यह कहा गया है कि 5 से अधिक बिन्दुओं के साथ केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित सूर्य, जातक के पिता की आयुष्य के लिए शुभ नहीं होता है अर्थात पिता की आयु कम होती है।**

12. सूर्य के भिन्नाष्टक वर्ग में लग्न एवं चन्द्रमा द्वारा गृहीत राशि में कम बिन्दु नहीं होने चाहिए, अन्यथा यह स्थिति पिता के लिए शुभ नहीं होती है।

13. सर्वाष्टक वर्ग में यदि लग्न अथवा सूर्य से पंचम एवं नवम भाव में कम बिन्दु हैं तो यह जातक के पिता के लिए अरिष्ट दिखाता है। इन भावों में राहु

---

* किसी भी जन्मपत्रिका में तृतीय, षष्टम, दशम एवं एकादश भाव उपचय स्थान कहलाते हैं। किसी भी ग्रह का इन स्थानों में, शुभ स्थिति में बैठने पर उस ग्रह से सम्बन्धित भावों एवं कारकत्त्वों की वृद्धि होती है।

** यदि सूर्य पीड़ित नहीं हो तो हमेशा अशुभ नहीं होता है। यदि सूर्य स्वराशि अथवा मित्र राशि का होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो यह पिता के आयुष्य के लिए एक अनमोल निधि के तुल्य होता है।

एवं शनि का गोचर पिता के लिए शुभ नहीं होता है। यदि इस योग में बुध भी शामिल होता है तो इस अरिष्ट का अर्थ लकवा हो सकता है क्योंकि बुध नाड़ियों से सम्बन्धित होता है। वक्री ग्रह का गोचर भी सांघातिक सिद्ध हो सकता है।

14. यदि जन्मपत्रिका में सूर्य तीन से अधिक ग्रहों, जैसे कि बुध, शनि, बृहस्पति से युति करे और 5 से अधिक शुभ बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो अतिश्रेष्ठ परिणाम देता है।

15. जब सूर्य ऐसी किसी भी राशि में गोचर करता है जिसमें वह कोई भी बिन्दु प्रदान नहीं करता है तो उस सौर माह में कोई भी नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

16. प्रत्येक राशि एवं उससे त्रिकोण की राशियों* में प्राप्त बिन्दुओं का योग करके यह देखें कि राशियों के किस समूह का योग अधिकतम है और ग्रह अधिकतम बिन्दु प्रदान कर रहे हैं। वास्तुशास्त्रानुसार प्रार्थना कक्ष अधिकतम बली ग्रह द्वारा इंगित दिशा में होना चाहिए।

17. स्वयं की बिमारी का समय ज्ञात करने के लिए सर्वाष्टक वर्ग में लग्न से अष्टमेश और सूर्य से अष्टमेश के बिन्दुओं का योग करके जन्म नक्षत्र की संख्या से भाग करें। प्राप्त शेषफल में लग्न से अष्टम भाव के बिन्दुओं का योग करें और उसमें से 27 को घटायें। जो शेष बचेगा उसको जन्म नक्षत्र की संख्या में जोड़ दें तो इस प्रकार जो नक्षत्र आयेगा उस पर अशुभ ग्रहों का गोचर जातक की बिमारी का समय सूचित करेगा जबकि शुभ ग्रहों का गोचर, विशेषकर बृहस्पति का गोचर रोग से विमुक्त होने का समय सूचित करेगा।

    मंत्र सिद्धि अथवा अध्यात्मिक प्राप्तियों के लिए लग्न से पंचम एवं सूर्य से नवम भाव के बिन्दुओं को लेकर उपरोक्त प्रक्रिया से नक्षत्र ज्ञात किया जाता है। इस प्रकार प्राप्त नक्षत्र अथवा राशि में बृहस्पति के गोचर का समय मंत्र सिद्धि अथवा अध्यात्मिक प्राप्तियों में सफलता के लिए सही समय को इंगित करता है।

18. यदि सूर्य, लग्न से द्वितीय अथवा पंचम भाव में 3 से कम बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो जातक के पिता की मृत्यु कम आयु में होती है। हम द्वितीय

* मेष, सिंह एवं धनु/ वृषभ, कन्या एवं मकर/ मिथुन, तुला एवं कुंभ/ कर्क, वृश्चिक एवं मीन, क्रमशः एक–दूसरे से त्रिकोण की राशियाँ होती हैं।

एवं पंचम भाव को इस लिए लेते हैं क्योंकि द्वितीय भाव मारक भाव के साथ–साथ पिता के भाव से, पिता की बिमारी इंगित करने वाला भाव अर्थात षष्टम भाव होता है और पंचम भाव नवम से नवम अर्थात नवम का भावत्–भावम् होता है।

19. सूर्य के भिन्नाष्टक वर्ग में लग्न से दशम भाव और सूर्य से नवम भाव के बिन्दुओं का योग करें। इस प्रकार से प्राप्त संख्या 27 से अधिक है तो उसमें से 27 घटा दें और यदि नहीं है तो इस संख्या के बराबर अश्विनी नक्षत्र से आगे नक्षत्र गिनें। प्राप्त नक्षत्र पर अथवा उससे त्रिकोण के नक्षत्र पर जब शनि गोचर करता है, उस समय जातक के पिता की मृत्यु हो सकती है।

सूर्य से अजीविका:

सूर्य शासन, औषधि, स्वर्ण आदि का प्रतिनिधित्व करता है। सूर्य के भिन्नाष्टक वर्ग में अग्नि तत्त्व राशियों* अर्थात मेष, सिंह एवं धनु राशियों के बिन्दुओं का योग करके प्राप्त संख्या को सूर्य द्वारा गृहीत राशि के बिन्दुओं से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 12 अथवा 8 से भाग करें।**

यदि भागफल सूर्य से दशम भाव के बिन्दुओं के बराबर आता है जो जातक शासन सम्बन्धित कार्य करता है। यह भागफल यदि सूर्य के भिन्नाष्टक वर्ग में मंगल से दशम भाव के बिन्दुओं के बराबर अथवा समान आता है तो जातक एक चिकित्सक/सर्जन बनता है।

सूर्य के भिन्नाष्टक वर्ग में लग्न अथवा सूर्य से चतुर्थ भाव में सूर्य द्वारा प्रदान किये बिन्दुओं को देखें। यदि सूर्य 5 या अधिक बिन्दु प्रदान करता है तो जातक का रुझान चिकित्सा विज्ञान के विषयों की ओर होता है।

जिस भाव में बुध स्थित है उस भाव में यदि सूर्य 4 या अधिक बिन्दु प्रदान करता है तो जातक मेहनत से कार्य करने वाला होता है। जहां मंगल स्थित है उस भाव में यदि सूर्य 5 या अधिक बिन्दु प्रदान करता है तो जातक चिकित्सक होता है अथवा चिकित्सा से सम्बन्धित कार्यों को करता है। (कभी–कभी फलित सटीक नहीं भी होता है।)

---

* अग्नि तत्त्व राशियाँ : मेष, सिंह एवं धनु — पृथ्वी तत्त्व राशियाँ : वृषभ, कन्या एवं मकर
वायु तत्त्व राशियाँ : मिथुन, तुला एवं कुभं — जल तत्व राशियाँ : कर्क, वृश्चिक एवं मीन

** चूंकि किसी भी भाव में ग्रह एवं लग्न द्वारा प्रदान किये जाने वाले अधिकतम बिन्दुओं की संख्या 8 होती है।

नौकरी में पदोन्नतिः

सर्वाष्टक वर्ग में लग्न से दशम एवं षष्टम भाव के बिन्दुओं का योग करें। प्राप्त योग को जन्म नक्षत्र की संख्या से भाग करें और शेषफल को लग्न से दशम भाव के बिन्दुओं में योग कर दें। यदि इस प्रकार से प्राप्त संख्या 27 से अधिक है तो उसमें से 27 घटा दें और यदि नहीं है तो इस संख्या के बराबर जन्म नक्षत्र से आगे नक्षत्र गिनें। प्राप्त नक्षत्र पर सूर्य अथवा दशमेश के गोचर का समय जातक के लिए नौकरी में उन्नति का समय होता है।

सूर्य और पिता की मृत्युः

1. सूर्य का शोध्य पिण्ड एवं शनि के गोचर का उपयोगः

सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग में, सूर्य से नवम भाव में प्राप्त शोधन से पूर्व के बिन्दुओं की संख्या को सूर्य के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग देकर शेषफल प्राप्त करें। यह संख्या नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है। इस संख्या के बराबर, अश्विनी नक्षत्र अथवा जन्म के शनि के नक्षत्र से गिनकर, नक्षत्र प्राप्त करें।

इस प्रकार से प्राप्त नक्षत्र अथवा इससे त्रिकोण के नक्षत्र पर जब शनि गोचर करता है तो वह समय विशेष, जातक के पिता के आयुष्य के लिए शुभ समय नहीं होता है और संघातिक समय भी साबित हो सकता है।

इस नियम को स्वर्गीय श्रीमति इन्दिरा गांधी की जन्मपत्रिका के उदाहरण से समझते हैं:

सूर्य का शोध्य पिण्ड : 125 सूर्य से नवम भाव के बिन्दु : 3

अतः 125 x 3 = 375,

375 को 27 से भाग देने पर शेषफल 24 बचता है। अश्विनी नक्षत्र से 24 नक्षत्र आगे गिनने पर शतभिषज नक्षत्र आता है।

स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरु की मृत्यु 27 मई 1964 को हुई उस समय शनि शतभिषज नक्षत्र में गोचर कर रहा था।

2. सूर्य का शोध्य पिण्ड एवं बृहस्पति के गोचर का उपयोगः

सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग में, बृहस्पति से सप्तम भाव में प्राप्त शोधन से पूर्व के बिन्दुओं की संख्या को सूर्य के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग देकर शेषफल प्राप्त करें। यह संख्या नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है। इस संख्या के बराबर, अश्विनी नक्षत्र अथवा जन्म के बृहस्पति के नक्षत्र से गिनकर, नक्षत्र प्राप्त करें।

इस प्रकार से प्राप्त नक्षत्र अथवा इससे त्रिकोण के नक्षत्र पर जब बृहस्पति गोचर करता है तो वह समय विशेष, जातक के पिता के आयुष्य के लिए शुभ समय नहीं होता है और संघातिक समय भी साबित हो सकता है।

3. सूर्य के शोध्य पिण्ड एवं सूर्य के गोचर का उपयोगः

सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग में, सूर्य से सप्तम भाव में प्राप्त शोधन से पूर्व के बिन्दुओं की संख्या को सूर्य के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग देकर शेषफल प्राप्त करें। यह संख्या नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है। इस संख्या के बराबर, अश्विनी नक्षत्र अथवा जन्मकालीन सूर्य के नक्षत्र से गिनकर, नक्षत्र प्राप्त करें।

इस नक्षत्र अथवा इससे त्रिकोण के नक्षत्र पर जब–जब सूर्य गोचर करता है तो वह–वह समय विशेष, जातक के पिता के आयुष्य के लिए शुभ समय नहीं होता है और संघातिक समय भी साबित हो सकता है।

इस नियम को भी स्वर्गीय श्रीमति इन्दिरा गांधी की उदाहरण जन्मपत्रिका से समझते हैं।

सूर्य का शोध्य पिण्ड	= 125
सूर्य से सप्तम भाव के बिन्दुओं की संख्या	= 5
अतः, 125 x 5	= 625

625 को 27 से भाग देने पर शेष 4 बचता है। अश्विनी नक्षत्र से 4 नक्षत्र आगे गिनने पर रोहणी नक्षत्र आता है।

जब स्वर्गीय श्री जवाहर लाल नेहरु की मृत्यु हुई थी उस समय सूर्य रोहणी नक्षत्र में गोचर कर रहा था।

स्वयं की मृत्यु का समयः

सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग में, सूर्य से अष्टम भाव में प्राप्त शोधन से पूर्व के बिन्दुओं की संख्या को सूर्य के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग देकर शेषफल प्राप्त करें। यह संख्या नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है। इस संख्या के बराबर, अश्विनी नक्षत्र अथवा जन्म के सूर्य के नक्षत्र से गिनकर, नक्षत्र प्राप्त करें।

इस प्रकार से प्राप्त नक्षत्र अथवा इससे त्रिकोण के नक्षत्र पर जब शनि अथवा सूर्य गोचर करता है तो वह समय विशेष, जातक के लिए संघातिक समय हो सकता है।

इस नियम को भी उदाहरण जन्मपत्रिका से समझते हैं।

सूर्य का शोध्य पिण्ड	= 125
सूर्य से अष्टम भाव के बिन्दुओं की संख्या	= 5
अतः, 125 x 5	= 625,

625 को 27 से भाग देने पर शेष 4 बचता है। अश्विनी नक्षत्र से 4 नक्षत्र आगे गिनने पर रोहणी नक्षत्र आता है।

31 अक्टूबर 1984 को जब श्रीमति इन्दिरा गांधी की मृत्यु हुई तो शनि विशाखा नक्षत्र पर गोचर कर रहा था, जो कि रोहणी नक्षत्र से त्रिकोण में आता है।

शोध्य पिण्ड का उपयोग किये बिना पिता की मृत्यु के समय का ज्ञानः

1. सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग में दोनों शोधनों के पश्चात शेष बचे बिन्दुओं का योग करें और इस योग को सूर्य से नवम भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या से गुना करके, 27 से भाग देकर शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या के बराबर, अश्विनी नक्षत्र से गिनने पर जो नक्षत्र प्राप्त होता है, उस नक्षत्र अथवा उससे त्रिकोण के नक्षत्र पर जब शनि गोचर करता है तो वह समय विशेष, जातक के पिता के आयुष्य के लिए शुभ समय नहीं होता है और संघातिक समय भी साबित हो सकता है।

इस नियम को भी उदाहरण जन्मपत्रिका से समझते हैं।

दोनों शोधनों के पश्चात,

सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग में शेष बिन्दुओं की कुल संख्या = 8

शोधनों से पूर्व, सूर्य से 9वें भाव में प्राप्त बिन्दुओं की संख्या = 3

अतः 8 x 3 = 24

चूंकि प्राप्त संख्या 27 से कम है अतः 27 से भाग देने की आवश्यकता नहीं है।

24वां नक्षत्र शतभिषज नक्षत्र है और नेहरु की मृत्यु के समय शनि शतभिषज नक्षत्र में गोचर कर रहा था।

2. सूर्य के अष्टकवर्ग में, सूर्य से नवम भाव में शोधनों से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को सूर्य के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। गुणनफल को 12 से भाग देने पर जो संख्या शेष बचती है, वह संख्या राशि की संख्या को दर्शाती है।

इस राशि पर जब–जब बृहस्पति अथवा सूर्य का गोचर करता है तो वह–वह समय विशेष जातक के पिता के आयुष्य के लिए शुभ समय नहीं होता है और सांघातिक समय भी साबित हो सकता है।

अध्याय 9

चन्द्रमा का भिन्नाष्टकवर्ग

चन्द्रमा के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा, जन्मपत्रिका के जातक को चन्द्रमा से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ परिणामों की विवेचना की जाती है। चन्द्रमा मन एवं विचार का कारक ग्रह है और जन्मपत्रिका में 4 बिन्दुओं के साथ स्थित चन्द्रमा, शुभता लिए हुए औसत दर्जे के परिणाम देने वाला होता है।

लेकिन यदि यह 5 से 8 बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो, राजसी ग्रह होने के कारण, ऐसा चन्द्रमा जातक को जीवन में उच्च पद, धन–सम्पदा, सुख–समृद्धि और अपने प्रसन्नचित्त स्वभाव एवं बुद्धि से समाज को सुप्रभावित करने की सक्षमता देता है। यह जातक को अद्‌भुत क्षमतावान, सौभाग्यशाली एवं दयावान बनाता है और जातक की माता को भी लम्बी आयु देता है।

जन्मपत्रिका में चन्द्रमा का 0 से 3 बिन्दुओं के साथ स्थित होना उसके निर्बली होने को दर्शाता है। चन्द्रमा के निर्बली होने की स्थिति में जातक मंद एवं कम बुद्धिवाला होता है और दिमागी उन्माद, विषादपूर्ण स्वभाव तथा नकारात्मक सोच से पीड़ित रहता है। ऐसे जातक की माता भी इसी प्रकार पीड़ित होती है। जन्मपत्रिका में चन्द्रमा की विभिन्न भावों एवं राशियों में स्थिति और प्राप्त बिन्दुओं के आधार पर जातक को प्राप्त होने वाले परिणाम इस प्रकार हैं:

1. चन्द्रमा, 6 से 8 बिन्दुओं के साथ केन्द्र में स्थित होने पर, जातक को बहुत बुद्धिमान, धनवान और समृद्धिवान बनाता है।
2. यदि चन्द्रमा 3 या 3 से भी कम बिन्दुओं के साथ, बृहस्पति से षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में स्थित हो तो जातक विषाद, ऋण, रोग और शत्रुओं का शिकार होता है।
3. चन्द्रमा के भिन्नाष्टकवर्ग में जिस राशि में अधिकतम बिन्दु होते हैं, उस लग्न अथवा चन्द्रराशि के व्यक्ति, जातक के लिए अधिकतम लाभकारी सिद्ध होते हैं। जातक को ऐसे व्यक्तियों से बचना चाहिए जिनका लग्न अथवा चन्द्रराशि वह राशियाँ हों जिन राशियों में जातक की जन्मपत्रिका में चन्द्रमा निम्नतम बिन्दु प्राप्त करता है।

4. लेखकों, कवियों, ग्रन्थकारों, कलाकारों और संगीतकारों की जन्मपत्रिका में बली चन्द्रमा अधिकतम बिन्दुओं के साथ स्थित होना, उनके जीवन में प्राप्तियों के लिए बहुत बडी निधि है। सुश्री लता मंगेश्कर की जन्मपत्रिका में चन्द्रमा 5 बिन्दुओं के साथ तृतीय भाव अर्थात कला की क्षमता के भाव में स्थित है। अपने काल की सुप्रसिद्ध अभिनेत्री नरगिस दत्त की जन्म पत्रिका में चन्द्रमा दशम भाव में 7 बिन्दुओं के साथ स्थित है।

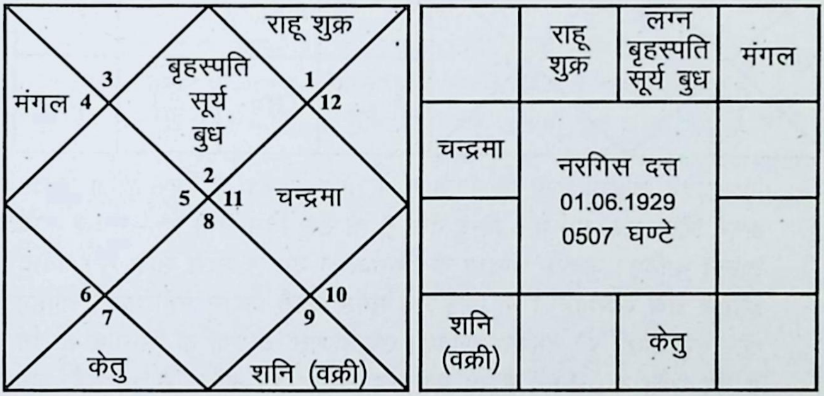

5. जन्मपत्रिका में बलवान चन्द्रमा, अधिकतम बिन्दुओं के साथ स्थित होने से जातक की प्रसिद्धि और मानववादी व्यक्तिव को प्रतिपादित करता है। उदाहरणतः महात्मा गांधी की जन्मपत्रिका में चन्द्रमा दशम भाव में 8 बिन्दुओं के साथ और जवाहर लाल नेहरु की जन्मपत्रिका में चन्द्रमा स्वराशि का होकर लग्न में 5 बिन्दुओं के साथ था।

6. जिस जातक के जन्म के समय चन्द्रमा केन्द्र अथवा त्रिकोण में 6 से 8 बिन्दुओं के साथ स्थित होता है, वह जातक अपने जीवनकाल में उच्च स्तर का शिक्षाविद्, ऐश्वर्यवान और अधिकार सम्पन्न व्यक्ति बनता है।

7. ऐश्वर्य एवं धन–सम्पदा अर्जित करने के लिए चन्द्रमा का शुभ होना अतिआवश्यक है। इसके लिए चन्द्रमा पर बृहस्पति एवं मंगल की दृष्टि भी शुभ होती हैं।

8. नीच राशिगत चन्द्रमा 0 से 3 बिन्दुओं के साथ जिस भाव में भी स्थित होता है, उस भाव के नैसर्गिक कारकत्वों को नष्ट अथवा पतित कर देता है। उदाहरणतः लग्न में स्थित होने पर यह कमजोर व्यक्तिव देता है और चतुर्थ भाव में सम्पति एवं माता के लिए शुभ नहीं होता है।

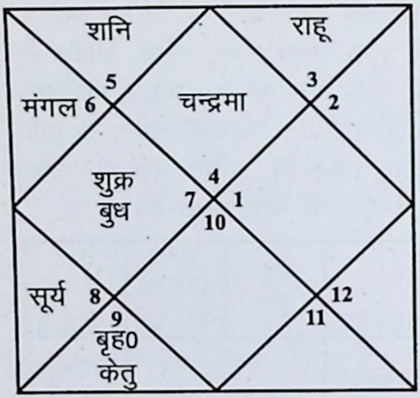

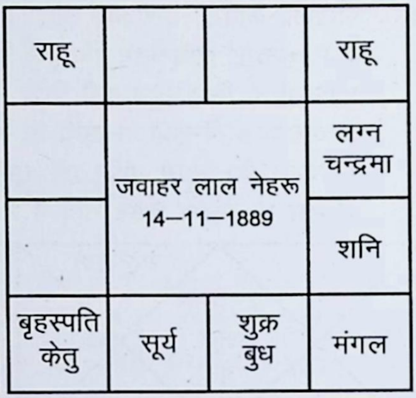

9. जिस दिन चन्द्रमा ऐसी किसी राशि में गोचर करता है जिस राशि में वह अपने भिन्नाष्टक वर्ग में 0 बिन्दु देता है तो उस दिन सभी शुभ–मंगल कार्य टालने चाहिए। जबकि चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में जिस राशि में 0 बिन्दु होते हैं उस सौरमाह में भी कोई नये मंगल कार्य प्रारम्भ नहीं करने चाहिए और ऐसे कार्यो को टालना चाहिए। उदाहरणतः चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में मेष राशि में 0 बिन्दु हैं तो मेष माह अर्थात 13 अप्रेल से 13 मई, जब सूर्य मेष राशि में गोचर करता है तो नये मंगल कार्य प्रारम्भ नहीं करने चाहिए। इसी प्रकार जब चन्द्रमा 0 बिन्दु वाली राशि से त्रिकोण की राशि में गोचर करता है तो मकान में कब्जा, विवाह प्रस्ताव का निर्णय, नये मकान का क्रय अथवा नये कपडों का क्रय, नाखुन एवं बाल काटना आदि कार्य टालने चाहिए।

10. यदि जन्मपत्रिका में चन्द्रमा अपने भिन्नाष्टक वर्ग में 3 अथवा कम बिन्दुओं के साथ स्थित होता है तो ऐसे जातक को स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्यायें, दिमागी व्याकुलता एवं शक्तिहीनता आदि परेशानियां होती हैं। यह जातक के आयुर्दाय के लिए भी अच्छा नहीं होता है।

11. यदि कृष्ण पक्ष चन्द्रमा अपनी नीच राशि वृश्चिक अथवा शत्रु राशियों, मिथुन या कन्या का होकर जन्मपत्रिका के केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो और अपने भिन्नाष्टक वर्ग में केवल 2 या 3 बिन्दुओं के साथ हो तो चन्द्रमा द्वारा गृहीत भाव का बल नष्ट हो जाता है। यदि यह स्थिति पंचम भाव में बनती हो (कर्क लग्न में) तो यह बालारिष्ट योग अर्थात बालावस्था में मृत्यु का कारण बनता है क्योंकि लग्नेश का पंचम भाव में कम बिन्दुओं के साथ नीच होने का अर्थ है कि पूर्वपुण्यों की हानि। इसके विपरीत यदि

शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा उच्चस्थ अथवा स्वगृही अथवा मित्र राशि का होकर 4 या अधिक बिन्दुओं के साथ जन्मपत्रिका के केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो उस भाव के बल में अनेक रूपों में वृद्धि होती है और अतिविशिष्ट शुभ परिणाम देता है।

12. यदि चन्द्रमा अपने भिन्नाष्टक वर्ग में 8 शुभ बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो ऐसा जातक प्रसिद्ध होता है अथवा राजा के समान बन सकता है। यदि 8 बिन्दुओं के साथ चन्द्रमा अपनी उच्च राशि में स्थित हो और जातक राज–परिवार में जन्मा हो तो वह चक्रवर्ती राजा अर्थात राजाओं का भी राजा बनता है। उसकी प्रसिद्धि और समृद्धि में दस गुणा वृद्धि होती है। अतः जातक कोई भी हो, 8 बिन्दु होने पर उसको दस गुणा अधिक लाभ मिलता है। यदि चन्द्रमा की अपनी स्थिति अच्छी हो और चन्द्रमा की राशि भी बली होती है तो जातक अपने वर्तमान स्तर से 10 से 20 गुणा अधिक उच्च स्तर तक उठता है।

13. चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में प्रत्येक राशि एवं उससे त्रिकोण की राशियों* में प्राप्त बिन्दुओं का योग करके यह देखें कि कौन सा समूह सबसे बली है अर्थात राशियों के किस समूह का योग अधिकतम है। जिस समूह में अधिकतम बिन्दु हों उस समूह द्वारा इंगित दिशा में स्नानघर होना चाहिए।

14. चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में चन्द्रमा से अष्टम भाव के बिन्दुओं की संख्या को चन्द्रमा के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। गुणनफल को 27 से भाग देकर शेषफल प्राप्त करें। अश्विनी नक्षत्र से शेषफल के बराबर गिनकर नक्षत्र प्राप्त करें। इस नक्षत्र और इससे त्रिकोण के नक्षत्र पर चन्द्रमा का गोचर जातक को क्रोध, लडाई–झगडा, मन को दुःख, निराशावाद आदि देता है।

15. चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में चतुर्थ भाव के शुभ बिन्दु जातक की माता के भाई–बहनों की संख्या सूचित करते हैं। लेकिन कुछ ज्योतिषाचार्यों का मत है कि केवल लग्न से चतुर्थ भाव से यह देखना चाहिए। शुभ बिन्दु माता के भाई–बहनों का प्रतिनिधित्व करते हैं। पुरुष ग्रह द्वारा प्रदान किये गये बिन्दुओं का अर्थ है भाई और स्त्री ग्रहों द्वारा प्रदान किये गये बिन्दुओं का अर्थ बहन होता है। यदि जन्मपत्रिका में शुक्लपक्ष का चन्द्रमा हो तो चन्द्रमा से और कृष्णपक्ष का चन्द्रमा हो तो लग्न से देखना चाहिए।

---

* मेष, सिंह एवं धनु/ वृषभ, कन्या एवं मकर/ मिथुन, तुला एवं कुंभ/ कर्क, वृश्चिक एवं मीन, क्रमशः एक–दूसरे से त्रिकोण की राशियाँ होती हैं और राशियों का यह समूह क्रमशः पूर्व, दक्षिण, पश्चिम एवं उत्तर दिशा को इंगित करता है।

16. यदि चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में चन्द्रमा अथवा लग्नेश द्वारा गृहीत भाव में 4 या अधिक बिन्दु हैं और यह भाव शुभ प्रभाव में है तो जातक की माता दीर्घायु होती है।

माता से अलगावः

जन्मपत्रिका में चन्द्रमा माता का कारक ग्रह होता है और चन्द्रमा से चतुर्थ भाव को, माता के भाव के रूप में लिया जाता है। निर्बली चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में कम बिन्दुओं के साथ मंगल का स्थित होना जातक की माता की आयुर्दाय के लिए शुभ नहीं होता है। निर्बली चन्द्रमा पर मंगल की अष्टम दृष्टि भी, मां की आयु का हनन करती है।

इसी प्रकार चन्द्रमा कम बिन्दुओं के साथ और द्वितीय स्थान, जो कि कुटुम्ब स्थान है, उसमें राहु बैठा हो तो यह स्थिति जातक की माता की अस्वस्थता को दिखाती है।

माता की मृत्यु का समय निर्धारणः

(1) चन्द्रमा के अष्टकवर्ग में, चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में प्राप्त शोधन से पूर्व के बिन्दुओं की संख्या को, चन्द्रमा के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग करके शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है। उस नक्षत्र अथवा उससे त्रिकोण के नक्षत्र पर, जब–जब शनि गोचर करता है तो वह समय विशेष में जातक की मां के लिए शुभ समय नहीं होता है।

इस नियम को स्वर्गीय इन्दिरा गांधी की उदाहरण जन्मपत्रिका में देखते हैं:

स्वर्गीय इन्दिरा गांधी की माता स्वर्गीय कमला नेहरु 1934 में बिमार पडीं और फरवरी 1936 में उनकी मृत्यु हुई। इस समय शनि 25वें नक्षत्र, पूर्वभाद्रपद में गोचर कर रहा था।

चन्द्रमा का शोध्य पिण्ड	= 130
चन्द्रमा से चतुर्थ भाव के बिन्दु	= 5
अतः 130 x 5	= 650

650 को 27 से भाग देने पर शेषफल 2 बचता है जो भरणी नक्षत्र को दिखता है और पूर्वभाद्रपद नक्षत्र इससे त्रिकोण में आता है।

(2) चन्द्रमा के अष्टकवर्ग में, बृहस्पति से सप्तम भाव में प्राप्त शोधन से पूर्व के बिन्दुओं की संख्या को, चन्द्रमा के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग करके शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है। उस नक्षत्र पर बृहस्पति अथवा उससे त्रिकोण के नक्षत्र पर शनि जब–जब गोचर करता हैं तो वह समय विशेष जातक की माता के लिए शुभ समय नहीं होता है। कभी–कभी शेषफल की संख्या के बराबर नक्षत्र की गणना बृहस्पति के नक्षत्र से भी की जाती है।

(3) कभी–कभी सूर्य से सप्तम भाव में प्राप्त बिन्दुओं की संख्या की उपरोक्त विधि अनुसार गणना करके सूर्य के गोचर को देखा जाता है।

(4) **राशि में गोचर :** ऊपर वर्णित गणना के अनुसार प्राप्त गुणनफल की संख्या को 27 से भाग देने के स्थान पर 12 से भाग देने पर जो संख्या शेषफल बनती है वह संख्या, राशि की संख्या को दर्शाती है। इस राशि के ऊपर बृहस्पति अथवा सूर्य के गोचर का समय जातक की माता के लिए प्राणघातक समय होता है।

मामा और मौसियों की संख्याः

जातक के मामा एवं मौसियों की संख्या का ज्ञान चन्द्रमा के अष्टकवर्ग में, चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में प्राप्त बिन्दुओं की संख्या से होता है लेकिन नीच एवं शत्रु ग्रह द्वारा प्रदत्त बिन्दुओं को नहीं गिनते हैं। पुरुष ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दु मामाओं की संख्या और स्त्री ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दु मौसियों की संख्या को दर्शाते हैं।

मानसिक तनावः

जन्म चन्द्रमा से अष्टमेश के नक्षत्र पर, जब–जब चन्द्रमा गोचर करता है तो वह–वह समय विशेष जातक की मानसिक प्रसन्नता के लिए शुभ नहीं होता है अर्थात जातक को मानसिक तनाव होता है।

चन्द्रमा से अजीविकाः

यह ज्ञात करने के लिए कि कोई जातक समुद्री जहाज का इंजीनियर है अथवा उसका आयात–निर्यात का व्यवसाय है अथवा वह समुद्री जहाज या नेवी से जुडा हुआ है अथवा इसी प्रकार के जल से जुडे कार्यों से सम्बन्धित है तो चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में जल तत्त्व राशियों के बिन्दुओं का योग करके चन्द्रमा द्वारा गृहीत भाव के बिन्दुओं से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 12 से भाग करके शेषफल प्राप्त करें। यदि शेषफल चन्द्रमा से दशम भाव के बिन्दुओं की संख्या के समान अथवा अधिक हो तो ऐसे जातक का मोती अथवा जलीय वस्तुओं, दूध की वस्तुओं आदि का व्यापार हो सकता है।

लेकिन यदि शेषफल लग्न से दशम भाव के बिन्दुओं के बराबर अथवा उससे अधिक होता है तो ऐसा जातक कपडों, कपड़ों के बुनने में प्रयोग होने वाले धागों अथवा अन्य सम्बन्धित वस्तुओं, अथवा लकडी या लकडी से तैयार होने वाली वस्तुओं के व्यवसास आदि से सम्बन्धित हो सकता है।

यदि उपरोक्त शेषफल सूर्य से दशम भाव के बिन्दुओं के बराबर अथवा उससे अधिक होता है तो जातक दूध अथवा दूध के उत्पादकों से सम्बन्धित व्यापार से जुडा हो सकता है।

यदि शेषफल बृहस्पति से दशम भाव के बिन्दुओं के समान अथवा अधिक होता है तो ऐसा जातक अध्यापन के कार्य से जुडा हो सकता है।

विशेषः उपरोक्त नियम हमेशा ही सही परिणाम नहीं दे सकते हैं।

अध्याय 10

मंगल का भिन्नाष्टकवर्ग

मंगल के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा, जन्मपत्रिका के जातक को मंगल से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ परिणामों की विवेचना की जाती है। मंगल की जन्मपत्रिका के विभिन्न भावों एवं राशियों में स्थिति और प्राप्त बिन्दुओं के आधार पर जातक को प्राप्त होने वाले परिणाम इस प्रकार होते हैं:

1. किसी भी जन्मपत्रिका में मंगल का 0 से 3 बिन्दुओं के साथ स्थित होना उसके निर्बली होने को दर्शाता है। मंगल शारीरिक बल का कारक ग्रह है और जन्मपत्रिका में निर्बली होने पर झगडा, शारीरिक अक्षमता एवं नकारात्मक सोच, पद, भूमि, सम्पति एवं धन–सम्पदा की हानि देता है।

   जन्मपत्रिका में 4 बिन्दुओं के साथ स्थित मंगल औसत फल देता है जबकि 5 से 8 बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर जातक को उच्च पद, जमीन–जायदाद, सामान्य उन्नति, नेतृत्व करने की क्षमता और समाज में अधिकारों से पूर्ण, प्रभावशाली स्थित देता है। ऐसा मंगल जातक को प्रभावशाली व्यक्तिव, नये कार्य सजृन की क्षमता एवं कार्य करने का सामर्थ्य देता है और जातक को दिमागी रूप से भी सशक्त बनाता है।

   यदि मंगल 7 या 8 बिन्दुओं के साथ अपनी उच्च राशि अथवा स्वराशि का होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो, तो मंगल द्वारा प्राप्त होने वाले परिणामों में अधिक प्रबलता आ जाती है और जातक अतुल्य धनवान एवं समृद्धिवान होता है। ऐसा जातक जीवन में उच्च पद भी प्राप्त करता है।

2. यदि जन्म के समय मंगल उच्च का अथवा स्वराशि का होकर 8 बिन्दुओं के साथ, प्रथम, चतुर्थ, नवम अथवा दशम भाव में स्थित हो तो जातक करोड़पति बनता है। यदि मंगल 4 बिन्दुओं के साथ मेष, सिंह, वृश्चिक, धनु अथवा मकर राशि का होकर लग्न में स्थित हो तो जातक शासक बनता है।*

---

* मंगल उच्च अथवा स्वराशि का होकर लग्न अथवा चन्द्रमा से केन्द्र में होने पर रुचम नामक महापुरुष योग बनाता है जो जातक का अच्छा स्वास्थ्य, धन–सम्पति, समृद्धि और उच्च पद देता है।

3. मंगल 4 बिन्दुओं के साथ लग्न, नवम, पंचम, चतुर्थ अथवा दशम भाव में स्थित होने पर भी अतिश्रेष्ठ फल देता है और यदि इन भावों में 7 या 8 बिन्दुओं के साथ स्थित हो, तो जातक को उच्च स्तर का जीवन देता है। यदि 8 बिन्दुओं के साथ मेष, वृश्चिक अथवा मकर राशि का होकर लग्न में स्थित हो तो जातक राजा बनता है।

4. मंगल 4 बिन्दुओं के साथ लग्न में स्थित हो तो जातक बहुत–सी भूसम्पदा का स्वामी होता है।

5. जातक देशमार्ग के मतानुसार, जब मंगल ऐसी किसी राशि विशेष में गोचर करता है, जिसमें 8 या अधिक बिन्दु हो तो जातक को भूमि, धन, सोना आदि का लाभ होता है और वह पवित्र एवं धार्मिक कार्य करता है। उस राशि विशेष द्वारा इंगित दिशा विशेष में जातक को भूमि का लाभ होता है और शत्रु पराजित होते हैं।

6. मंगल के भिन्नाष्टक वर्ग में

   अ. लग्न से मंगल तक के बिन्दुओं को गिने

   ब. मंगल से लग्न तक के बिन्दुओं को गिने

   स. दोनों को जोड़ें

   उपरोक्त तीनों चरणों में एक–एक संख्या प्राप्त होती है। ये संख्यायें, जातक की उस आयु विशेष को दर्शाती हैं, जिस–जिस आयु में जातक दुर्घटना, हथियार और अग्नि से पीड़ित होता है अथवा उसको पीड़ित होने का भय होता है।

   यहां यह भी याद रखना आवश्यक है कि यदि उस समय विशेष में विंशोतरी दशा भी जातक के लिए अशुभ समय दर्शाती है तभी जातक को आयु के इन वर्षों में ऐसे परिणाम प्राप्त होते हैं अन्यथा नहीं। चूंकि मंगल के बिन्दुओं का कुल योग 39 होता है तो इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि प्रत्येक जातक के लिए आयु का 39वां साल अशुभ होता है।

7. जब मंगल अधिकतम बिन्दु वाली राशि में गोचर करता है तो वह समय जमीन–जायदाद खरीदने के सबसे अच्छा समय होता है।

8. बिन्दुहीन कक्ष्या में मंगल का गोचर, स्वास्थ्य और व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए शुभ नहीं होता है। इसके विपरीत जिस कक्ष्या में यह बिन्दु प्रदत्त करता है,

उस कक्ष्या में इसका गोचर, जमीन–जायदाद बनाने के लिए और धन–सम्पदा अर्जित के लिए श्रेष्ठ होता है।

9. मंगल 8 बिन्दुओं के साथ प्रथम, चतुर्थ, नवम अथवा दशम भाव में स्थित होने पर जातक को समृद्धि देता है।*

10. यद्यपि चतुर्थ भाव में स्थित मंगल धन–सम्पदा के लिए अशुभ नहीं माना जाता है लेकिन यह स्थिर सम्पति में विवाद, भू–सम्पति में गैरकानूनी आचरण आदि देता है और ऐसे जातक को कृषि उत्पादन से भी आय नहीं हो सकती है। जबकि चतुर्थ भाव का मंगल 8 बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो जातक को धनवान बनाता है।

11. यदि मंगल अधिक शुभ बिन्दुओं के साथ चतुर्थ, अष्टम अथवा दशम भाव में स्थित हो तो जातक को धनवान बनाता है और यदि मंगल उच्च का होकर 8 बिन्दुओं के साथ स्थित तो जातक *भूपति* होता है। यदि मंगल लग्न से त्रिकोण अथवा अष्टम या दशम भाव में 4 या अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित हो जातक राजा बनता है अथवा जातक राजा के समान होता है और उसकी आय भी बहुत अच्छी होती है। हम यहां अष्टम एवं दशम भाव को भी ले रहे हैं क्योंकि अष्टम भाव, चतुर्थ भाव का त्रिकोण भाव है और यहां से वह द्वितीय एवं तृतीय भाव को दृष्ट करता है। तृतीय भाव स्वयं के प्रयासों से मिली सफलता से सम्बन्धित है जिसके लिए मंगल का सम्बन्ध आना आवश्यक है।

12. मंगल के भिन्नाष्टक वर्ग में दिशाओं के आधार वर्गीकृत राशियों** के बिन्दुओं का योग करके यह देखें कि किस दिशा की राशियों के समूह का योग अधिक है। यदि जातक का रसोईघर अधिकतम योग वाले समूह द्वारा इंगित दिशा में स्थित हो तो इसमें पकाया जाने वाला भोजन जातक के लिए श्रेष्ठ होता है जो उसको बिमारियों से दूर रखते हुए, उसके आयुर्दाय के लिए भी शुभकारी होता है।

13. मंगल के भिन्नाष्टक वर्ग में जिस राशि में 0 बिन्दु होते हैं, उस राशि में शनि का गोचर जातक के भाईयों के लिए मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट,

* महार्षि पराशर के अनुसार स्वराशि का मंगल, लग्न में, बुध, शुक्र एवं सूर्य से युति अथवा दृष्टि से प्रभावित हो तो जातक बहुत धनवान व्यक्ति होता है।

** मेष, सिंह एवं धनु पूर्व दिशा को, वृषभ, कन्या एवं मकर दक्षिण दिशा को, मिथुन, तुला एवं कुंभ पश्चिम दिशा को और कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशि उत्तर दिशा को इंगित करती हैं।

बीमारी, शत्रुता, भू–सम्पति सम्बन्धित विवाद, अदालती मुकदमे आदि अशुभ फल लाता है। इस समय को सम्बन्धित जातक की दशा/अन्तर्दशा से जोड़कर देखना चाहिए। यदि दशा शुभ है और केवल गोचर ही प्रतिकूल है तो यह केवल धन–सम्पति की ही हानि देता है। यदि दोनों ही अशुभ हों तो जातक के भाईयों की मृत्यु भी हो सकती है। कुछ ज्योतिषाचार्यों का मत है कि छोटे भाई–बहनों के लिए तृतीय भाव और बडे भाई–बहनों के लिए एकादश भाव देखना चाहिए।

14. भूमिपुत्र होने के कारण धन–सम्पति, प्रसिद्धि आदि किसी भी चीज को धारण करने की क्षमता मंगल पर ही निर्भर होती है इसलिए इनकी प्राप्ति में मंगल का अंशदान होना आवश्यक है। यदि यह लग्न, पंचम, नवम आदि भावों में शुभ बिन्दु प्रदान नहीं करता है तो यह शुभ स्थिति नहीं होती है।

15. जातक के छोटे भाई–बहनों के जीवन स्तर का ज्ञान करने के लिए लग्न से तृतीय एवं मंगल से भी तृतीय भाव के बिन्दुओं को गुणा करें।

    अ. यदि गुणनफल लग्न एवं दशम भाव के बिन्दुओं के योग के बराबर अथवा अधिक होता है तो जातक के छोटे भाई–बहन जातक से अधिक अच्छी स्थिति में होते हैं।

    ब. यदि गुणनफल नवम एवं पंचम भाव के बिन्दुओं के योग के बराबर अथवा अधिक होता है तो जातक के छोटे भाई–बहन पिता से अधिक अच्छी स्थिति में होते हैं।

    स. यदि गुणनफल षष्टम एवं द्वितीय भाव के बिन्दुओं के योग के बराबर अथवा अधिक होता है तो जातक के छोटे भाई–बहन, चाचा–मामा से अधिक अच्छी स्थिति में होते हैं।

    द. यदि गुणनफल एकादश एवं अष्टम भाव के बिन्दुओं के योग के बराबर अथवा अधिक होता है तो जातक के छोटे भाई–बहन अपने बडे भाइयों से अधिक अच्छी स्थिति में होते हैं।

16. यदि सर्वाष्टक वर्ग में चन्द्रमा एवं मंगल द्वारा गृहीत भाव और दशम भाव के बिन्दुओं का योग, लग्न, षष्टम एवं एकादश भाव के बिन्दुओं के योग के बराबर होता है तो जातक का शल्य–चिकित्सासम्बन्धित औजारों का अथवा अस्पताल में प्रयोग होने वाली अन्य वस्तुओं का व्यापार हो सकता है। इसी प्रकार यदि शनि, सूर्य एवं मंगल द्वारा प्रदान किये बिन्दुओं का योग, तृतीय, अष्टम एवं द्वादश भाव के बिन्दुओं के बराबर होता है तो

जातक चोर अथवा असमाजिक कार्यों में लिप्त होता है।

17. यदि जन्मपत्रिका में अधिकतम बिन्दुओं के साथ स्थित मंगल, राहू से युति करता है या राहू के नक्षत्र में होता है अथवा राहू या मंगल के नक्षत्र में शनि होता है तो ऐसा जातक प्रशासनिक अधिकारी (आई.ए.एस.) अथवा पुलिस या सेना में उच्च अधिकारी होता है।

18. यदि लग्न एवं मंगल से चतुर्थ भाव के बिन्दुओं का योग, लग्न एवं अष्टम भाव अथवा मंगल से अष्टम भाव के बिन्दुओं के योग से अधिक होता है तो जातक के पास भू–सम्पति होगी अथवा वह पैतृक सम्पति प्राप्त कर सकता है।

19. पिता से पैतृक धन–सम्पति प्राप्ति के लिए मंगल से अष्टम भाव को देखें। मंगल से अष्टम भाव में प्राप्त बिन्दुओं के योग को अष्टमेश के बिन्दुओं से गुणा करें और प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग करें। इस प्रक्रिया में प्राप्त शेषफल के बराबर अश्विनी/धनिष्ठा नक्षत्र से गिनने पर जो नक्षत्र आता है उस पर जब कभी बृहस्पति गोचर करता है तो वह समय विशेष पैतृक सम्पदा प्राप्त करने का समय होता है। पैतृक सम्पति प्राप्त करने के लिए मंगल एवं अष्टमेश का शामिल होना आवश्यक है।

मंगल या कुजा दोषः

जन्मपत्रिका में मंगल या कुजा दोष लग्न, चन्द्रमा और शुक्र से देखा जाता है। यदि मंगल, लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में स्थित होता है तो यह मंगल दोष माना जाता है। दक्षिण भारत में द्वितीय भाव अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है और यहां का मंगल भी, मंगल दोष के रुप में लिया जाता है। प्राचीन समय में सभी जगह इसका ही अनुशरण किया जाता था। प्राचीन समय में मंगल दोष शुक्र से सबसे अधिक अशुभ माना जाता था, उसके बाद लग्न से और सबसे कम अशुभ चन्द्रमा से माना जाता था, लेकिन आजकल यह केवल लग्न से ही देखा जाता है।

कालपुरुष की जन्मपत्रिका में अष्टम भाव का स्वामी होने के कारण मंगल अष्टम भाव का स्थिर कारक है इसलिए मैथुन सुख एवं गुप्तांगो का कारक भी होता है। यदि मंगल लग्न अथवा शुक्र से अष्टम भाव में होता है तो जातक के जीवन में मैथुन सुख के प्रति आसक्ति अधिक होती है। अतः पति–पत्नी के

मध्य कोई तनाव न हो इसके लिए इसका मिलान समान रुप से करना चाहिए, क्योंकि यौनसुख में बाधा वैवाहिक जीवन में समस्या होने का मुख्य कारण हो सकता है। यदि मंगल अष्टम भाव में हो तो मंगल की इस स्थिति के कारण ऐसे जातक में कई प्रकार की गुप्त इच्छायें अथवा दोष देखे जा सकते हैं। यदि इस दोष का मिलान दोनों जन्मपत्रिकाओं में उचित प्रकार से नहीं हुआ हो अथवा दोनों में समान न हो तो ऐसे जातक की दुष्टता अथवा दूसरे पर प्रभाव कई रूपों में होता है। अतः इस प्रकार का अशुभ प्रभाव न हो इसके लिए दोनों की जन्मपत्रिकाओं में यह दोष समान रूप से होना आवश्यक है।

इन भावों में से भी सप्तम एवं अष्टम भाव का मंगल अधिक अशुभ माना जाता है। यदि किसी जातक की जन्मपत्रिका में मंगल, लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम या अष्टम भाव में स्थित हो तो उसकी जन्मपत्रिका का मिलान ऐसी जातिका की जन्मपत्रिका से करनी चाहिए जिसका मंगल भी लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम अथवा अष्टम भाव में ही हो। कुछ ज्योतिषाचार्यों का मत है कि यदि लग्न से अष्टम भाव में मंगल होना किसी भी प्रकार से दोषपूर्ण नहीं है और यदि है तो बहुत कम हैं। अष्टम भाव आयुष्य से सम्बन्धित होता है और स्त्री की जन्मपत्रिका में अष्टम भाव सौभाग्य स्थान कहलाता है क्योंकि यह उसके पति की आयु का स्थान होता है। यदि यहां मंगल स्थित होता है तो वह जीवनसाथी की आयु को प्रभावित करता है अथवा उसे असाध्य बिमारियां दे सकता है। यदि दोनों में से एक दीर्घायु है और दूसरे के अष्टम भाव में मंगल है तो विवाह के पश्चात पहला हमेशा बीमार रहेगा।

अष्टकवर्ग पद्धति में मंगल दोष देखने के लिए लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम और द्वादश भाव की रेखाओं अर्थात अशुभ रेखाओं को देखा जाता है। यदि मंगल के भिन्नाष्टक वर्ग में, इन भावों में लग्न, चन्द्रमा एवं शुक्र द्वारा प्रदत्त रेखायें, शुभ बिन्दुओं से अधिक हैं तो मंगल दोष प्रबल होता है। यदि मंगल लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में स्थित होता है और लग्न, चन्द्रमा एवं शुक्र द्वारा प्रदत्त अशुभ रेखाओं से शुभ बिन्दु कम हैं तो मंगल दोष निश्चित ही होता है और ऐसी स्थिति में मंगल दोष अधिक प्रबल होता है। बिन्दुओं की स्थिति को प्रस्तारक चक्र से देखा जा सकता है। यहां भी सप्तम एवं अष्टम भाव को अधिक महत्व देते हुए देखा जाना चाहिए। यदि इन भावों में भी लग्न, चन्द्रमा एवं शुक्र द्वारा कम शुभ बिन्दु प्रदान किये जाते हैं तो जातक को वियोग अथवा विधवा/वैधव्य, वीर्यस्खलन और यौन रोग होता है। यदि मंगल से द्वितीय भाव में लग्न, चन्द्रमा, शुक्र एवं द्वितीयेश शुभ बिन्दुओं की अपेक्षा अशुभ

रेखाएं अधिक देते हैं तो जातक की एक से अधिक भार्या होती है और उसके वैवाहिक जीवन में समस्यायें होती हैं। ऐसे जातक की भार्या, जातक पर शासन करती है।

यदि मंगल के भिन्नाष्टक वर्ग में, चतुर्थ भाव में लग्न, चन्द्रमा, शुक्र, चतुर्थेश एवं मंगल, इन पांचों द्वारा अशुभ रेखायें अधिक प्रदान की जाती हैं तो ऐसा जातक अपनी माता के प्रति शत्रुता का व्यवहार रखता है अथवा उसको पैतृक सम्पति प्राप्त नहीं होती है। इसी प्रकार यदि द्वादश भाव में लग्न, चन्द्रमा, शुक्र एवं द्वादशेश का अशुभ रेखाओं का अंशदान अधिक होता है तो यह मैथुन सुख की कमी का कारण बनता है।

मंगल–शनि युतिः

यदि 5 बिन्दुओं के साथ मंगल, शनि से युति करे अथवा दृष्टि सम्बन्ध बनाता है तो मंगल राजयोग देता है।*

मंगल–बुध युतिः

सामान्यतः जन्मपत्रिका में कम बिन्दुओं के साथ स्थित निर्बली मंगल, आर्थिक समृद्धी और स्वस्थ यौन सम्बन्धों के लिए शुभ नहीं होता है। ऐसा मंगल यदि बुध से युति करता है तो जातक की शिक्षा में व्यवधान डालकर खण्डित करता है। इसी प्रकार बुध से द्वितीय भाव में स्थित होने पर ऐसा मंगल, जातक की शिक्षा को सुचारु रूप से नहीं चलने देता है।

भाई–बहनों की संख्याः

मंगल के भिन्नाष्टक वर्ग में, मंगल से तृतीय भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या से जातक के भाई–बहनों की संख्या का ज्ञान होता है लेकिन इस संख्या में शत्रु ग्रहों एवं नीच ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दुओं को नहीं गिना जाता है। पुरुष ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दु भाईयों की संख्या को और स्त्री ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दु बहनों की संख्या को बताते हैं।

* सामान्यतः मंगल–शनि की युति शुभ नहीं होती है।

भाईयों का न होनाः

ज्योतिषशास्त्र के शास्त्रीय ग्रन्थों के अनुसार यदि जन्मपत्रिका में मंगल 6 बिन्दुओं के साथ तृतीय, षष्टम, अष्टम, एकादश अथवा द्वादश भाव में, शुभ ग्रहों की दृष्टि से अप्रभावित होकर बैठा हो तो, मंगल की यह स्थिति जातक के भाईयों के लिए शुभ नहीं होती है। जन्मपत्रिका में मंगल की यह स्थिति, जातक के भाईयों की शारीरिक पीड़ा, बिमारी की स्थिति अथवा मृत्यु को दर्शाती है।

भाइयों के लिए बीमारी, मृत्यु अथवा अशुभ समयः

1. मंगल के अष्टकवर्ग में, मंगल से तृतीय भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को मंगल के शोध्य पिण्ड से गुना करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग देकर, शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है। उस नक्षत्र अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण के नक्षत्र पर जब–जब शनि गोचर करता है तो वह समय विशेष जातक के भाइयों के लिए शुभ समय नहीं होता है।

2. मंगल के अष्टकवर्ग में, बृहस्पति से सप्तम भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को मंगल के शोध्य पिण्ड से गुना करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग देकर, शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है। उस नक्षत्र पर अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण के नक्षत्र पर जब–जब बृहस्पति गोचर करता है तो वह समय विशेष जातक के भाइयों के लिए शुभ समय नहीं होता है। मतान्तर से, जन्मपत्रिका में बृहस्पति की स्थिति से, शेषफल की संख्या के समान भाव में स्थित राशि एवं उस राशि से त्रिकोण की राशि में बृहस्पति का गोचर भाइयों के लिए शुभ नहीं माना जाता है।

3. कभी–कभी सूर्य से सप्तम भाव में प्राप्त बिन्दुओं की संख्या की उपरोक्त विधि अनुसार गणना करके सूर्य के गोचर को देखा जाता है।

4. **राशि में गोचरः** ऊपर वर्णित गणना के अनुसार प्राप्त गुणनफल की संख्या को 27 से भाग देने के स्थान पर 12 से भाग देने पर जो संख्या शेषफल बनती है वह संख्या राशि की संख्या को दर्शाती है। इस राशि के ऊपर बृहस्पति अथवा सूर्य के गोचर का समय भाइयों के लिए प्राणघातक समय हो सकता है।

भाइयों के लिए समृद्धि का समयः

मंगल के अष्टकवर्ग में, मंगल से तृतीय भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को मंगल के शोध्य पिण्ड से गुना करें। प्राप्त गुणनफल को 12 से भाग देकर, शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, राशि विशेष की संख्या को दर्शाती है। उस राशि विशेष पर जब–जब बृहस्पति गोचर करता है तो वह समय विशेष जातक के भाइयों की समृद्धि एवं उन्नति के लिए शुभ समय होता है।

इस समय विशेष में जातक के किस भाई की समृद्धि एवं उन्नति होगी, इस बारे में शास्त्र में कुछ भी इंगित नहीं किया गया है, अतः इसका निर्णय करने के लिए जातक के भाइयों की जन्मपत्रिकाओं की विवेचना करना आवश्यक होता है।

शोध्य पिण्ड उपयोग किये बिना, भाइयों की बिमारी अथवा मृत्यु का निर्णयः

मंगल के अष्टकवर्ग में दोनों शोधनों के पश्चात् शेष बचे बिन्दुओं का योग करें। योग की इस संख्या को, मंगल से तृतीय भाव में प्राप्त बिन्दुओं की संख्या से गुना करके, प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग दें। इस प्रक्रिया में शेषफल के रूप में जो संख्या आती है, उस संख्या के बराबर, अश्विनी नक्षत्र से क्रमशः आगे गिनने पर जो नक्षत्र आता है, उस नक्षत्र पर अथवा उससे त्रिकोण के नक्षत्र पर जब–जब शनि गोचर करता है, तो वह समय विशेष जातक के भाइयों के लिए शुभ नहीं होता है।

अध्याय 11

बुध का भिन्नाष्टकवर्ग

बुध के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा, जन्मपत्रिका के जातक को बुध से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ परिणामों की विवेचना की जाती है। किसी भी जन्मपत्रिका में 0 से 3 बिन्दुओं के साथ स्थित बुध निर्बली होता है जो जातक को सम्पति की हानि, बुद्धिमता की कमजोरी और परिवार एवं मित्रों के साथ सम्बन्धों में कटुता आदि देता है। यदि यह बुध जन्मपत्रिका के षष्टम अथवा अष्टम भाव में स्थित हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि से अप्रभावित भी हो तो, जातक स्वभावश अविश्वसनीय और कुटिल होता है। जबकि 5 से 8 बिन्दुओं के साथ केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित, बृहस्पति अथवा शनि से दृष्ट बुध जातक को उच्च श्रेणी का विद्वान और सशक्त वक्ता बनाता है। 4 बिन्दुओं के साथ बुध औसत स्तर का माना जाता है जो न बली होता है और न निर्बली।

बुध की जन्मपत्रिका के विभिन्न भावों एवं राशियों में स्थिति और प्राप्त बिन्दुओं के आधार पर जातक को प्राप्त होने वाले परिणाम इस प्रकार होते हैं:

1. यदि बुध 4 बिन्दुओं के साथ मंगल की राशि एवं शुक्र के नवांश में स्थित होकर बृहस्पति से दृष्ट हो तो यह जातक को लेखक, कवि, नाटककार अथवा साहित्य से सम्बन्धित व्यक्ति बनाता है।

2. बुध 5 बिन्दुओं के साथ केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित होकर बृहस्पति अथवा शनि से दृष्ट हो तो यह जातक को धर्म शास्त्रों का ज्ञाता एवं विद्वान बनाता है।

3. बुध 5 बिन्दुओं के साथ, बृहस्पति अथवा मंगल से युति करे तो जातक को वैज्ञानिक बनाता है।

4. बुध 4 अथवा अधिक बिन्दुओं के साथ मंगल की राशि एवं शुक्र के नवांश में स्थित होकर बृहस्पति से दृष्ट हो तो यह जातक को साहित्यशास्त्री बनाता है।

5. बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में बुध से द्वितीय भाव में 4 अथवा अधिक बिन्दु हों तो बुध जातक को श्रेष्ठ वक्ता बनाता है।

6. बुध से द्वितीय भाव में 7 अथवा अधिक बिन्दु हों तो बुध जातक को एक कवि और बहुत बडा व्याख्याकार बनाता है।

7. बुध से द्वितीय भाव में ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दुओं द्वारा यह ज्ञात करना संभव है कि जातक किस प्रवृति का वक्ता है। अशुभ ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दु जातक को अहंकारी एवं झूठे वादे करने वाला बनाते हैं, जबकि बृहस्पति द्वारा प्रदत्त बिन्दु महानुभाव बनाते हैं और ऐसा जातक श्रेष्ठ आध्यात्मिक वक्ता होता है। शुक्र द्वारा प्रदत्त बिन्दुओं से जातक कलात्मक, बुध से रसिक एवं हंसी–मजाक वाला और चन्द्रमा से अद्‌भुत एवं अतिआनन्दनीय वक्ता होता है। शनि द्वारा प्रदत्त बिन्दु जातक को झूठा, सूर्य द्वारा प्रदत्त बिन्दु कुटिल वक्ता और मंगल द्वारा प्रदत्त बिन्दु निष्ठुर, गुस्सैल, गाली–गलौच करने वाला तथा आत्मश्लाघी बनाते हैं।

8. विद्वता की प्राप्तियों को बुध से पंचम भाव से देखना चाहिए। यहां जितने अधिक बिन्दु होंगे, जातक उतना ही विद्वता की प्राप्ति करके, नाम, यश एवं कीर्ति पाता है। उदाहरणतः स्वामी विवेकानन्द की जन्मपत्रिका में, बुध के अष्टकवर्ग में, बुध से पंचम भाव में 7 बिन्दु हैं।

9. अशुभ ग्रहों से युत बुध 4 अथवा अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित होकर, नवमांश में नीच का हो तो जातक को नृत्य, नाटक एवं संगीत में प्रवीणता देता है।

बुध का राशीशः

यदि बुध द्वारा गृहीत राशि का स्वामी केन्द्र अथवा त्रिकोण में अधिकतम बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो ऐसा जातक अपने जीवन में नाम कमाकर प्रसिद्धि पाता है और समृद्ध होता है। यदि बुध का राशीश षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में होता है तो जातक की शिक्षा में अवरोध डालता है।

ज्योतिषी होने के योगः

1. बुध से द्वितीय भाव पर बृहस्पति की दृष्टि,

2. बुध की 5 बिन्दुओं के साथ शनि से चतुर्थ, षष्टम अथवा दशम भाव में स्थिति,
3. बुध के अष्टकवर्ग में केतु 3 बिन्दुओं के साथ बुध से पंचम भाव में अथवा पंचमेश के साथ स्थित हो।

जन्मपत्रिका में उपरोक्त स्थितियां होने पर जातक ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता होता है और उसकी अर्न्तप्रज्ञा भी श्रेष्ठ होती है।

आजीविका में व्यवधानः

बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, बुध से दशम भाव में प्राप्त शोधन से पूर्व के बिन्दुओं की संख्या को, बुध के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग देकर, शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है। उस नक्षत्र अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण के नक्षत्र पर जब–जब शनि गोचर करता है तो वह समय विशेष, जातक की आजीविका के क्षेत्र में व्यवधान और कष्ट का समय होता है।

मानसिक परेशानियों का कालः

बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, बुध से चतुर्थ भाव में प्राप्त शोधन से पूर्व के बिन्दुओं की संख्या को, बुध के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग देकर, शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है। उस नक्षत्र अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण के नक्षत्र पर जब–जब शनि गोचर करता है तो वह समय विशेष, जातक मानसिक पेशानियों से ग्रस्त होने का समय होता है, अर्थात उस समय जातक मानसिक परेशानियों से पीड़ित होता है।

शिक्षा एवं मित्रता के लिए शुभ कालः

बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, बुध से दशम भाव में प्राप्त शोधन से पूर्व के बिन्दुओं की संख्या को, बुध के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 12 से भाग देकर, शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, राशि संख्या को दर्शाती है। उस राशि अथवा राशि से त्रिकोण की राशि पर जब–जब बृहस्पति गोचर करता है तो वह समय विशेष जातक की शिक्षा एवं मित्रता के लिए वर्धक सिद्ध होता है।

यदि बुध जन्मपत्रिका में 8 बिन्दुओं के साथ केन्द्र अथवा त्रिकोण में होता है तो ऐसा जातक पारिवारिक संस्कारों में रचा–बसा, भाग्यवान व्यक्ति होता है और अपने परम्परागत पारिवारिक व्यवसाय में उंचाइयों को छूता है।

बुध शिक्षा का कारक होता है। अतः बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में जिस राशि में अधिकतम बिन्दु होते हैं उस राशि से सम्बन्धित सौरमाह, शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए सबसे शुभ माह सिद्ध होता है।

जिस राशि में बुध कोई भी शुभ बिन्दु प्रदान नहीं करता है उस राशि में शनि के गोचर के समय जातक को धन–सम्पति की हानि होती है।

बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में प्रत्येक राशि और उससे त्रिकोण की राशियों के बिन्दुओं का योग करें। राशियों का प्रत्येक समूह एक दिशा विशेष को इंगित करता है। जिस समूह में अधिकतम बिन्दु होते हैं उस समूह द्वारा इंगित दिशा में जातक का खेल का मैदान अथवा अध्ययन कक्ष होना चाहिए।

यदि बुध द्वारा गृहीत भाव से त्रिकोण भावों में 5 से अधिक शुभ बिन्दु होते हैं तो जातक अच्छा पढा–लिखा व्यक्ति होगा। ऐसे जातक की सोचने–समझने की शक्ति भी अच्छी होगी और यदि यह बृहस्पति द्वारा दृष्ट भी हो तो जातक शिक्षा के क्षेत्र में उन्नति करता है।

यदि बुध से द्वितीय भाव में 5 से अधिक शुभ बिन्दु हों और द्वितीयेश भी अशुभ प्रभाव में न हो तो जातक हस्त निर्माण एवं कला में प्रवीण अथवा गणितज्ञ बनता है।

यदि बुध का राशीश त्रिकोण में हो और बुध 5 या अधिक बिन्दुओं के साथ हो तो जातक बुद्धिमान, ज्ञानी एवं सुप्रशासक होता है।

विवाह के लिए बुध पर अशुभ प्रभाव अच्छा नहीं होता है। निर्बली बुध का सप्तम भाव अथवा सप्तमेश अथवा सप्तमेश के राशीश से सम्बन्ध ऐसे जातक को इंगित करता है जिसकी भार्या भाग जाएगी अथवा उसका साथ छोड देगी अथवा जिसकी भार्या का व्यवहार उसके प्रति उदासीन होगा।

स्त्री जातिकाओं की जन्मपत्रिका में बुध की स्थिति का बडी सूक्ष्मता से विचार करना चाहिए। यदि बुध बिन्दुहीन होकर अशुभ प्रभाव में होता है तो ऐसी जातिका सहानुभूति एवं दया की भावना से रिक्त होती है। यहां तक की वह अपने प्रेमी के प्रयोजन हेतु अपने पति अथवा बच्चों की हत्या तक कर सकती है।

बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में लग्न एवं शुक्र, दोनों से ही सप्तम भाव में शुभ बिन्दुओं की अधिकता होनी चाहिए, अन्यथा जीवनसाथी में सहानुभूति की भावना नहीं होती है।

यदि जन्मपत्रिका में मंगल एवं शनि की युति लग्न या द्वादश या अष्टम अथवा तृतीय भाव में होती है तो ऐसा जातक अपराधी प्रवृति का होता है। यदि बुध भी अशुभ प्रभाव अथवा कम बिन्दुओं के साथ इन भावों में स्थित होता है तो यह स्थिति जातक को अपराधी बनाती है।

बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में बुध से द्वितीय, पंचम एवं दशम भाव के बिन्दुओं का योग करें और इसकी लग्न, नवम एवं एकादश भाव के बिन्दुओं के योग से तुलना करें। यह दोनों का योग समान्न होता है तो ऐसे जातक की आय अथवा चित्तवृत्ति लेखन कार्यों, भगवान की स्तुति अर्थात धार्मिक कृत्यों के प्रति अथवा आत्माओं से सम्बन्ध बनाने की ओर होती है।

अध्याय 12

बृहस्पति का भिन्नाष्टकवर्ग

बृहस्पति के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा, जन्मपत्रिका के जातक को बृहस्पति द्वारा प्राप्त होने वाले शुभाशुभ परिणामों की विवेचना की जाती है। बृहस्पति सभी ग्रहों में सर्वाधिक शुभ ग्रह के रूप में जाना जाता है और ज्ञान एवं विवेक के साथ–साथ धन का कारक ग्रह होता है। जन्मपत्रिका में बृहस्पति का अधिकतम बिन्दुओं के साथ बली होकर स्थित होना जातक के श्रेष्ठ ज्ञान एवं विवेक को दर्शाता है। किसी भी जन्मपत्रिका में बृहस्पति का 0 से 3 बिन्दुओं के साथ स्थित होना उसके निर्बली होने को दर्शाता है।

बृहस्पति के अष्टकवर्ग में 3 बिन्दुओं से कम बिन्दु प्राप्त करने वाली राशि में बृहस्पति का गोचर शुभ नहीं होता है। ऐसी राशि में बृहस्पति का गोचर, धन–सम्पति की हानि, स्वास्थ्य की हानि, सगे–सम्बन्धियों के लिए परेशानियां और शासन से समस्यायें देता है।

बृहस्पति के अष्टकवर्ग में जिस राशि में 4 बिन्दु होते हैं उस राशि में बृहस्पति का गोचर औसत फल देता है जबकि 5 से 6 बिन्दु वाली राशि में सफलता और धन–सम्पति में वृद्धि देता है।

बृहस्पति जब 7 से 8 बिन्दु वाली राशि में गोचर करता तो उस समय विशेष में जातक प्रसिद्धि, खुशियां और धन–दौलत प्राप्त करता है।

जन्मपत्रिका में बृहस्पति की अच्छी स्थिति एक प्रकार से जातक की वह अमूल्य निधि होती है जो उसे जीवन के प्रत्येक क्षैत्र में यश–कीर्ति एवं सफलता दिलाने में सक्षम होती है। यहां तक कि यदि बृहस्पति जन्मपत्रिका के षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में भी 5 अथवा अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित है तो भी यह जातक को धन–सम्पति, लम्बी आयु और शत्रुओं पर विजय देने में सक्षम होता है।

यदि बृहस्पति षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में 6 से अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो यह जातक को राजा अथवा राजा के समान जीवन यापन करने वाला बनाता है।

यदि केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में बृहस्पति 7 अथवा 8 बिन्दुओं के साथ, बुध एवं शुक्र को छोडकर, किसी ऐसे ग्रह के साथ युति में हो जो नीच अथवा अस्त न हो, तो यह बृहस्पति जातक को अधिक स्त्रियां अर्थात एक से अधिक स्त्रियों से सुख एवं सन्तान दायक होता है।

सामान्यतः जिस ग्रह के पास 5 बिन्दुओं से अधिक बिन्दु होते हैं वह ग्रह अपनी दशा/अन्तर्दशा अथवा गोचर में योगकारी ग्रह का फल देता है। यह नियम बृहस्पति पर भी लागू होता है। एक अन्य स्थिति विशेष में, बृहस्पति का षष्टेश होकर अष्टम में स्थित होना बहुत श्रेष्ठ फलदायक होता है और ऐसी स्थिति में बृहस्पति, जातक बहुत अधिक धन–सम्पति देता है।

बृहस्पति के भिन्नाष्टक वर्ग में जिस राशि में अधिकतम बिन्दु होते हैं, अथवा जिस राशि समूह के बिन्दुओं का योग अधिकतम होता है, उस समूह द्वारा इंगित दिशा में जातक को अपना खजाना या तिजोरी, आभूषण, अनाज आदि रखने चाहिए।

बृहस्पति के भिन्नाष्टक वर्ग में यदि सूर्य कम बिन्दु प्राप्त करता है तो ऐसी स्थिति में यदि जातक अपनी उन्नति के लिए किसी भी नये साहसिक कार्य का प्रारम्भ करता है तो उसमें रुकावटें आती हैं।

बृहस्पति जन्मपत्रिका के षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में 5 अथवा अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर भी जातक को पूर्णआयु देगा, धन–सम्पति देगा, खुशियां देगा और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने की सक्षमता देगा। लग्न से षष्टम, सप्तम अथवा अष्टम भाव में स्थित बृहस्पति लग्नाधियोग बनाता है। यदि बृहस्पति षष्टम भाव में स्थित हो तो जातक के अन्दर दूसरों पर विजय की क्षमता होगी, यदि सप्तम भाव में हो तो जातक को अच्छी सामाजिक छवि देगा और यदि अष्टम में हो तो दीर्घायु देगा। इसी प्रकार के परिणाम तब भी प्राप्त होगें जब तीनों शुभ ग्रह अर्थात बृहस्पति, शुक्र एवं बुध चन्द्रमा से षष्टम, सप्तम अथवा अष्टम भाव में स्थित होंगे।

किसी भी ग्रह द्वारा प्राप्त परिणामों में अधिक से अधिक शुभता हो, इसके लिए उनका भावत्–भावम् भी हमेशा बली होना चाहिए। अतः यदि बृहस्पति द्वारा गृहीत राशि से पंचम भाव में भी 5 अथवा अधिक शुभ बिन्दु हैं तो बृहस्पति को बल प्राप्त होता है। ऐसा जातक चुम्बकीय व्यक्तिव का स्वामी होता है, उसके अन्दर नेतृत्व के गुण होते हैं और वह समृद्ध, दीर्घायु एवं धनवान भी होता है।

अशुभ प्रभाव से मुक्त एवं 8 बिन्दुओं से युक्त बृहस्पति यदि चन्द्रमा के साथ युति में होता है अथवा चन्द्रमा से केन्द्र में स्थित होता है तो जातक को आकर्षक व्यक्तिव का स्वामी बनाता है, जातक समृद्धशाली होता है और उसकी सन्तान भी योग्य होती है। यदि अशुभ प्रभाव से मुक्त बृहस्पति 6 बिन्दुओं के साथ चन्द्रमा से युति में होता है अथवा चन्द्रमा से केन्द्र में स्थित होता है तो ऐसा जातक धनवान होता है और उसके पास कई वाहन होते हैं।

बृहस्पति का राशीशः

बृहस्पति द्वारा प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फलों में बृहस्पति का स्वामी ग्रह महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अर्थात बृहस्पति जिस राशि में स्थित है उस राशि का स्वामी ग्रह जन्मपत्रिका में किस स्थिति में है, इसके ऊपर भी बृहस्पति द्वारा प्राप्त होने वाले फल निर्भर होते हैं। यदि बृहस्पति का राशीश जन्मपत्रिका में उच्च अथवा स्वराशि का होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में 4 या अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित हो और अस्त न हो तो बृहस्पति द्वारा प्राप्त होने वाले शुभ फलों में गुणवता एवं श्रेष्ठता आ जाती है। यह स्थिति जातक को अत्याधिक धन–सम्पदा का स्वामित्व देती है।

सन्तान के जन्म का समय निर्धारणः

I. बृहस्पति के भिन्नाष्टकवर्ग में, बृहस्पति से पंचम भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या से बृहस्पति के शोध्य पिण्ड को गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग करके शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है।

   उस नक्षत्र अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण के नक्षत्र पर बृहस्पति के गोचर का समय, जातक की सन्तान के जन्म के लिए शुभ समय होता है।

II. निम्नलिखित राशियों में बृहस्पति के गोचर का समय विशेष गर्भाधान का समय होता हैः

   1. बृहस्पति के भिन्नाष्टकवर्ग में जिस राशि में अधिकतम बिन्दु होते हैं,
   2. राशि अथवा नवमांश वर्ग में लग्न, चन्द्रमा अथवा बृहस्पति से पंचमेश की राशि में,
   3. गुलिक की राशि अथवा नवमांश में,

4. बृहस्पति के अष्टकवर्ग में अधिकतम बिन्दु वाली राशि में जब सूर्य गोचर करता है, तब भी गर्भाधान होता है।

5. जिस समय बृहस्पति के अष्टकवर्ग में सबसे अधिक बिन्दु प्राप्त करने वाली राशि उदय होती है तो वह समय विशेष गर्भाधान के लिए समागम करने एवं पुत्र सन्तान के जन्म के लिए शुभ होता है।

सत्पुत्र* अर्थात सदाचारी पुत्र का योगः

यदि अपने भिन्नाष्टक वर्ग में बृहस्पति 4 या अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित होकर जन्मपत्रिका के पंचमेश के राशीश** से सम्बन्धित होता है तो एक योग्य पुत्र का जन्म होता है।

कृतघ्न*** सन्तान एवं पोते–पोतियों के जन्म के योगः

1. यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश का सम्बन्ध अष्टमेश से हो और यह सम्बन्ध बृहस्पति की दृष्टि से अप्रभावित हो तो यह योग कृतघ्न सन्तान के जन्म का योग है।

2. यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव एवं पंचमेश अशुभ ग्रहों से प्रभावित हो और बृहस्पति, 3 से कम बिन्दुओं के साथ पापकर्त्री योग में स्थित हो तो यह योग कृतघ्न सन्तान के जन्म का योग है।

जन्मपत्रिका में पंचम भाव से संतति को देखा जाता है जिसको बृहस्पति नियंत्रित करता है। बृहस्पति द्वारा गृहीत राशि और बृहस्पति के भिन्नाष्टक वर्ग में जो राशि अधिकतम बिन्दु प्राप्त करती है, वह राशि सन्तान के लिंग को इंगित करते हैं। उदाहरणतः माना कि बृहस्पति के भिन्नाष्टक वर्ग में मिथुन राशि में अधिकतम बिन्दु हैं या 7 बिन्दु हैं। इन 7 बिन्दुओं के कारण जब कभी भी पुरुष या स्त्री ग्रह जैसे कि सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, शुक्र या स्वयं बृहस्पति, नवम भाव से सम्बन्ध बनाते हुए मिथुन राशि में गोचर करते हैं तो वह समय विशेष सन्तान के गर्भाधान अथवा जन्म के समय को इंगित करेगा। यहां नवम भाव का सम्बन्ध इसलिए आवश्यक है कि नवम भाव भाग्य को सूचित करता है। यदि पुरुष ग्रह इस राशि में गोचर करते हैं तो वह पुत्र सन्तान को और यदि स्त्री ग्रह गोचर

* शास्त्रानुसार सत पुत्र वह होता है जो धर्मात्मा एवं सदाचारी होता है और धर्मानुसार आचरण करता है।

** पंचम भाव का स्वामी जिस राशि में स्थित हो, उस राशि का अधिपति पंचमेश का राशीश कहलायेगा।

*** कृतघ्न सन्तान उसे कहते हैं जो अपने माता–पिता के प्रति आदरभाव नहीं रखती है।

करते हैं तो वह कन्या सन्तान को इंगित करते हैं। यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि शनि एवं बुध नपुंसक ग्रह हैं।

किसी भी राशि में शनि लगभग अढाई वर्षों तक गोचर करता है और इन अढाई वर्षों में यह आवश्यक नहीं है कि वह नवम भाव से सम्बन्ध बनाये। अर्थात सम्बन्ध नहीं भी बना सकता है। इसलिए शनि का विचार उसके द्वारा गृहीत नक्षत्र के अनुसार करना चाहिए। प्रत्येक नक्षत्र पर शनि का गोचर अलग–अलग परिणाम देता है।

सन्तान के जन्म लेने का माहः

बृहस्पति के शोध्य पिण्ड को 4 से गुना करके प्राप्त गुणनफल को 12 से भाग करें। जो शेषफल बचेगा वह राशि की संख्या को दर्शाता है। गोचर में सूर्य जिस सौर माह इस संख्या की राशि में गोचर करता है उस माह में जातक की सन्तान का जन्म होता है।

सन्तान की संख्याः

बृहस्पति से पंचम और पंचमेश से पंचम भाव सन्तान की संख्या के विषय में इशारा करते हैं।

बृहस्पति के भिन्नाष्टकवर्ग में, बृहस्पति से पंचम भाव में शोधन के पश्चात शेष बिन्दुओं की संख्या सन्तान की संख्या को दर्शाती है। बिन्दु प्रदत्त करने वाले ग्रहों के नैसर्गिक स्वभाव अनुसार ही सन्तान का व्यवहार एवं स्वभाव भी होता है।

कई बार शोधन के पश्चात की संख्या इतना अच्छा परिणाम नहीं देती है जितना की शोधन से पूर्व की संख्या देती है। अर्थात बृहस्पति से पंचम भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या अधिक सटीक परिणाम देती है।

बृहस्पति के भिन्नाष्टकवर्ग, में बृहस्पति से पंचम भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या में से अस्त, नीच अथवा शत्रुराशि में स्थित ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दुओं को घटा दें और इसी प्रकार वक्री, उच्च राशि में स्थित एवं अपनी राशियों में स्थित ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दुओं की संख्या को दुगना कर दें। इस प्रकार की प्रक्रिया करने के पश्चात जो संख्या प्राप्त होती है वह सन्तान की संख्या को दर्शाती है। इसमें पुरुष ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दु पुरुष सन्तान और स्त्री ग्रहों द्वारा प्रदत्त बिन्दु स्त्री सन्तान को बताते हैं।

विशेषः सन्तान की संख्या के विचार से पहले यह देख लेना आवश्यक है कि जन्मपत्रिका में सन्तान योग है भी अथवा नहीं है।

बृहस्पति और आजीविकाः

चूंकि बृहस्पति राजग्रह है अतः यह सरकारी अथवा उच्च्य अधिकारों वाली निजी संस्थानों की नौकरी और स्वर्ण एवं रजत के आभूषणों, रत्नों आदि के व्यवसाय को इंगित करता है। यह कानून एवं न्याय व्यवस्था तथा धार्मिक पुस्तकों की छपाई* एवं प्रकाशन को भी इंगित करता है।

बृहस्पति के भिन्नाष्टक वर्ग में बृहस्पति द्वारा गृहीत राशि के बिन्दुओं को बृहस्पति से द्वितीय भाव के बिन्दुओं से गुणा करें और प्राप्त गुणनफल में दशम भाव के बिन्दुओं का योग करें। इस प्रकार से प्राप्त संख्या यदि सर्वाष्टक वर्ग में एकादश भाव के बिन्दुओं की संख्या के बराबर होती है तो ऐसा जातक अपने कारोबार से लाभ भी कमाता है। यदि यह संख्या सर्वाष्टक वर्ग के दशम भाव के बिन्दुओं के बराबर होती है तो जातक केवल कारोबार ही करता है, अर्थात उसका लाभ नगण्य होता है।

विशेषः प्रभावशाली रूप से ग्रह को अस्त करने के लिए सूर्य को हमेशा ग्रह के पीछे होना चाहिए। अर्थात यदि सूर्य किसी भी ग्रह से पीछे स्थित हो और दोनों की अंशीय दूरी कम हो तो ही ग्रह को प्रभावशाली रूप से अस्त करता है।**

आध्यात्मकिता और बृहस्पति का भिन्नाष्टक वर्गः

जन्मपत्रिका में बुध एवं केतु का बृहस्पति से सम्बन्ध आध्यात्मिक जीवन और सिद्धि प्राप्त करने के लिए बहुत अच्छा होता है। सिद्धि प्राप्त करने का अर्थ है कि अपने आन्तरिक रूप को वश में करना और आत्मा, जीवात्मा एवं परमात्मा से एकाकार होना। इस अवस्था के लिए बृहस्पति का योगदान बहुत महत्वपूर्ण होता है। बृहस्पति के भिन्नाष्टक वर्ग में यदि बृहस्पति, लग्न से पंचम अथवा

---

* सामान्यतः पुस्तकों की छपाई अथवा प्रकाशन शुक्र, बुध एवं चन्द्रमा से देखा जाता है। उपन्यास एवं कलात्मक पुस्तकों के लिए बुध, माडलिंग, सांस्कृतिक आदि के लिए शुक्र और खान–पान आदि के लिए चन्द्रमा से देखा जाता है। मिथुन राशि, छपाई अथवा प्रकाशन के कार्यों से सम्बन्धित राशि है।

** यह तर्क दिया जाता है कि जब सूर्य किसी ग्रह की ओर अग्रसर होता है तो यह शुभ नहीं माना जाता है क्योंकि ग्रह अस्त होने की ओर होता है लेकिन जब वह ग्रह को पीछे छोडते हुए आगे बढ़ता है तो अशुभ नहीं माना जाता है क्योंकि ऐसी स्थिति में ग्रह उदय होने की ओर अग्रसर होता है।

अपने से पंचम अथवा जन्मपत्रिका में केतु*** द्वारा गृहीत भाव में 5 या अधिक बिन्दुओं का अंशदान करता है तो ऐसे जातक को मंत्र सिद्धि होती है। यदि यह भाव सूर्य द्वारा युत अथवा गृहीत हो अथवा इस भाव में सूर्य अथवा बृहस्पति अथवा शुक्र की राशियाँ हो तो जातक को सौम्य देवाताओं के मंत्र की सिद्धि होती है।

बृहस्पति के भिन्नाष्टक वर्ग में लग्न से पंचम भाव, पंचमेश, बृहस्पति से पंचम भाव और बृहस्पति स्वयं, सभी को 5 या अधिक बिन्दु प्राप्त करने चाहिए। यदि सर्वाष्टक वर्ग में भी लग्न से पंचम अथवा बृहस्पति से पंचम भाव में 25 से अधिक बिन्दु होते हैं तो जातक का रुझान मंत्र सिद्धि की ओर होता है। यदि 30 से अधिक बिन्दु होते हैं तो ऐसा जातक यंत्र की सहायता से मंत्र सिद्धि करता है। यदि 35 से अधिक बिन्दु होते हैं तो ऐसे जातक के पास मंत्र सिद्धि द्वारा दूसरों को रोगों से मुक्त करने की अतिविशिष्ट शक्ति होती है।

यदि अधिकतम बिन्दु शनि की राशि अथवा मंगल की नकारात्मक राशि में हो तो जातक को निम्न स्तर अथवा शूद्र देवताओं की मंत्र सिद्धि होती है। यदि यहां राहु अथवा पीड़ित शनि भी स्थित हो तो जातक अपनी मंत्र सिद्धि को अशुभ अथवा घृणित कार्यों जैसे कि मारण, जादू–टोना आदि का प्रयोग करता है।

गुरुः

गुरु बनने अथवा किसी को अपना गुरु बनाने के लिए बृहस्पति के भिन्नाष्टक वर्ग में बृहस्पति, लग्न एवं सूर्य से नवम भाव में कम से कम 4 बिन्दु होने चाहिए। यदि इन भावों का सम्बन्ध लग्न अथवा बुध से भी आता है तो जातक स्वयं ही गुरु होता है। लग्नेश एवं बृहस्पति, लग्नेश एवं बुध का सम्बन्ध अथवा लग्नेश, नवम भाव में हो और यदि इन भावों का सम्बन्ध शुक्र या लग्नेश से आता है तो ऐसा जातक गुरु धारण करता है।

जातक विशेष के लिए देवी–देवताः

कोई जातक किस देवी या देवता की अराधना करे जो उसके लिए अधिक सार्थक हो, इसके लिए जन्मपत्रिका के पंचम भाव को देखा जाता है। कोई भी

*** यद्यपि अष्टकवर्ग में केतु को ग्रह के रूप में नहीं लिया जाता है लेकिन फलित करने के लिए केतु की स्थिति का विचार किया जा सकता है।

ऐसा ग्रह जो स्वयं बली होकर पंचम भाव को अधिकतम प्रभावित करता है और अपने भिन्नाष्टक वर्ग में जन्मपत्रिका के पंचम भाव में 5 या अधिक बिन्दु प्रदत्त करता है, वह उस देवी या देवता को इंगित करेगा जिसकी उपासना करना जातक के लिए अधिक सार्थक होगी।

ग्रहों के अधि देवी–देवता इस प्रकार से हैंः–

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
रुद्र अथवा सूर्य	गौरी	कार्तिकेय अथवा हनुमान	विष्णु या विष्णु के अवतार	भगवान शिव, विष्णु, ब्रहमा अथवा दत्तात्रेय	महालक्ष्मी अथवा सरस्वती	भगवान शिव अथवा भैरव	महाशक्ति अथवा सर्प	गणपति

अधि देवी–देवताओं का निर्णय करने के लिए निम्नलिखित स्थितियों का अवलोकन करना चाहिएः

1. उस ग्रह को जो पंचम भाव को सबसे अधिक बली होकर प्रभावित करता है।
2. यदि जन्मपत्रिका में उस ग्रह के पास स्वाभाविक बल है।
3. अपने भिन्नाष्टक वर्ग में उस ग्रह विशेष का जन्मपत्रिका के पंचम भाव में अंशदान 5 बिन्दु अथवा इससे अधिक होना चाहिए।
4. यदि जन्मपत्रिका में कोई भी ग्रह पंचम भाव को दृष्ट नहीं करता है अर्थात प्रभावित नहीं करता है तो यह देखना चाहिए कि पंचमेश कहां स्थित है।
5. यदि पंचमेश भी पंचम भाव को दृष्ट नहीं करता है और किसी भी प्रकार से सम्बन्धित नहीं है तो हमें सर्वप्रथम पंचमेश को देखना चाहिए। पंचमेश के भिन्नाष्टक वर्ग में लग्न से पंचम भाव में प्राप्त बिन्दुओं को देखना चाहिए। दूसरा, यह देखना चाहिए कि पंचमेश कहां स्थित है और तीसरा पंचमेश से पंचम भाव को देखना चाहिए। इन सभी में अधिक समानता नहीं होनी चाहिए और किसी भी स्थिति में इनके पास 5 से अधिक बिन्दु होने चाहिए।
6. अन्त में हम पंचमेश के राशीश को लेते हैं और यह पता लगाते हैं कि पंचमेश एवं उसके राशीश में से कौन अधिक बली है।

पढ़ाई से लाभः

यदि लग्न से केन्द्र भाव, बृहस्पति से त्रिकोण अथवा उपचय स्थान होते हैं और 4 से अधिक बिन्दु प्राप्त करते हैं तो यह जातक की पढ़ाई में स्थिरता एवं निरतंरता को इंगित करता है। किसी भी जन्मपत्रिका में केन्द्र आधार स्तंभ होते हैं जिनको बली होना चाहिए। इसी प्रकार यदि लग्न से त्रिकोण भाव, बृहस्पति से केन्द्र के भाव बनते हैं और 5 या अधिक बिन्दु प्राप्त करते हैं तो भी जातक को अपनी पढ़ाई से लाभ मिलता है। पढाई के लिए बुध की स्थिति भी देखनी चाहिए। अच्छी पढाई के लिए अपने भिन्नाष्टक वर्ग में बुध को बृहस्पति से केन्द्र भावों में 4 से कम बिन्दु प्रदत्त नहीं करने चाहिए।

अध्याय 13

शुक्र का भिन्नाष्टकवर्ग

शुक्र के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा, जन्मपत्रिका के जातक को शुक्र से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ परिणामों की विवेचना की जाती है। शुक्र सुख, ऐश्वर्य, आनन्द–प्रमोद एवं विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह है। यदि जन्मपत्रिका में शुक्र 0 से 3 बिन्दुओं के साथ, अस्त, नीच और षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में स्थित होकर पापी ग्रहों से दृष्ट हो तो, ऐसा शुक्र जातक के जीवन की सभी प्रकार की परेशानियों का कारण बनता है। ऐसा शुक्र जातक की बिमारियों, सम्पति के नुकसान, भार्या के साथ विवाद, स्त्रियों के साथ अप्रसिद्धि, उच्च अधिकारियों के साथ शत्रुता और पडोसियों एवं मित्रों के साथ झगडे–फसाद का कारण भी बनता है।

जन्मपत्रिका में शुक्र 4 बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर औसत स्तर का होता है अर्थात न शुभ और न ही अशुभ तथा सम होकर मिले–जुले परिणाम देता है। जबकि 5 से 8 बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर यह शुभ हो जाता है और जन्मपत्रिका के जातक को सम्पति, जमीन–जायदाद, स्त्री, वाहन, घर, शयनसुख, कला, संगीत, आनन्द और समृद्धि देता है।

शुक्र की जन्म पत्रिका के विभिन्न भावों एवं राशियों में स्थिति और प्राप्त बिन्दुओं के आधार पर जातक को प्राप्त होने वाले परिणाम इस प्रकार होते हैं:

1. शुक्र, 4 या अधिक बिन्दुओं के साथ उच्च के नवमांश में स्थित होकर, मंगल से दृष्ट हो तो जातक वृद्ध अवस्था तक भी जीवनशक्ति से पूर्ण होता है।
2. शुक्र, षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में 3 से कम बिन्दुओं के साथ स्थित होने पर, जातक के लिए बलात्कार और अप्राकृतिक यौन दुष्कर्मों के अपराध का कारण बनता है।
3. शुक्र, 5 से 8 बिन्दुओं के साथ केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित होने पर जातक को सेना का प्रमुख बनाता है। ऐसे जातक के पास अपने वाहन होते हैं और वह धनवान होता है।

4. जातक देशमार्ग के मतानुसार, शुक्र जब अधिकतम बिन्दुओं वाली किसी राशि में गोचर करता है, तो जातक को शयनकक्ष के लिए साज्जो–सामान, संगीत का ज्ञान, विवाह का होना, इन्द्रियों का सुख, अधिकतम समृद्धि आदि शुभ परिणाम देता है।
5. जन्मपत्रिका में अशुभ ग्रहों से अप्रभावित एवं अधिकतम बिन्दुओं के साथ स्थित शुक्र, सुखी वैवाहिक जीवन के लिए बहुत बडी निधि होती है।
6. यदि शुक्र का राशीश* 5 या अधिक बिन्दुओं के साथ हो तो यह सभी प्रकार की सम्पति, खुशियां और सुख साधन देता है।
7. मंगल की राशि में स्थित शुक्र यदि 5 अथवा अधिक बिन्दुओं के साथ हो तो जातक को बहुत सम्पति देता है।
8. शुक्र के अष्टकवर्ग में, अधिकतम बिन्दु वाली कक्ष्या में जब–जब शुक्र गोचर करता है तो उस–उस समय विशेष में, जातक की प्रतिष्ठा में तेजी से वृद्धि होती है, उसके घर में कन्या का जन्म होता है, पुरुष होने पर स्त्री वर्ग में एवं स्त्री होने पर पुरुष वर्ग में प्रसिद्धि होती है, वह सम्पति अर्जित करता है और क्रीडा आदि में भी प्रसिद्ध होता है।
9. 5 से अधिक बिन्दुओं के साथ लग्न में शुक्र स्थित होने पर जातक को रमणीय अर्थात मोहित करने वाला व्यक्तित्त्व देता है।
10. यदि शुक्र अधिकतम बिन्दुओं के साथ केन्द्र में सुस्थित हो, तो जातक आकर्षक व्यक्तिव का स्वामी होकर, कला और संगीत का रसिया होता है।

विवाह का समयः

शुक्र के अष्टकवर्ग में शुक्र से सप्तम भाव में प्राप्त, शोधन से पूर्व के बिन्दुओं की संख्या को शुक्र के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग करके शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, नक्षत्र विशेष की संख्या को दर्शाती है।

उस नक्षत्र एवं उस नक्षत्र से त्रिकोण के नक्षत्र पर, जब–जब बृहस्पति गोचर करता है तो उस समय विशेष में जातक के विवाह की संभावनायें प्रबल होती हैं।

श्रीमति इन्दिरा गांधी का विवाह 25 मार्च 1942 को हुआ था।

* ग्रह द्वारा गृहीत राशि का स्वामी ग्रह, उस ग्रह का राशीश होता है।

विवाह का मासः

शुक्र के अष्टकवर्ग में सूर्य से सप्तम भाव में प्राप्त, शोधन से पूर्व के बिन्दुओं की संख्या को शुक्र के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 12 से भाग करके शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, राशि की संख्या को दर्शाती है।

उस राशि अथवा उस राशि से त्रिकोण की राशि पर सूर्य जिस महीने में गोचर करता है, उस मास विशेष में यदि दशा/अन्तर्दशा अनुकूल हो तो विवाह होने की संभावनायें होती हैं।

जीवन साथी की मृत्यु अथवा अन्त काल का समयः

शुक्र के अष्टकवर्ग में शुक्र से सप्तम भाव में प्राप्त, शोधन से पूर्व के बिन्दुओं की संख्या को शुक्र के शोध्य पिण्ड से गुणा करें। प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग करके शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है।

उस नक्षत्र अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण के नक्षत्र पर जब शनि गोचर करता है तो वह समय विशेष जातक की भार्या की आयु के दृष्टिकोण से कठिन समय होता है। यदि उसकी अशुभ ग्रह की दशा भी चल रही हो तो ऐसी स्थिति में उसकी मृत्यु भी हो सकती है।

शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग द्वारा अन्य फलितः

केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में 8 बिन्दुओं के साथ शुक्र स्थित होने से जातक योद्धा अथवा सशत्र सेना प्रमुख होता है। वायु तत्त्व राशियों में स्थित होने पर यह जातक को वायुसेना में ले जाता है और जातक वायु सेना प्रमुख हो सकता है जबकि अग्नि तत्त्व राशि में होने पर जातक थल सेना का प्रमुख हो सकता है। जल तत्त्व राशि में होने से जातक जल सेना प्रमुख हो सकता है।

शुक्र बली होने पर जातक के अधिकार में कई वाहन हो सकते हैं क्योंकि शुक्र वाहन का कारक है। केतु के नक्षत्र अथवा केतु की युति में होना दुपहिया वाहन इंगित करता है।

यदि शुक्र 7 शुभ बिन्दुओं के साथ केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में हो तो यह जातक की दीर्घायु को इंगित करता है। यहां शुक्र से आयु को लिया गया है क्योंकि कालपुरुष की जन्मपत्रिका में यह द्वितीयेश एवं सप्तमेश होता है और *असुर गुरु* भी होने के कारण शुक्र में मारक गुण होते हैं। अतः शुक्र पूर्णरूप से शुभ नहीं होता है अपितु केवल तीन चौथाई ही शुभ होता है। यह नैसर्गिक मारक ग्रह होता है। यदि शुक्र 7 शुभ बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो जातक आडम्बरी

होता है और कंजूस भी हो सकता है। यदि शुक्र नीच राशि में हो अथवा सप्तम या अष्टम या द्वादश भाव में 7 या 8 बिन्दुओं के साथ हो तो शुक्र की यह स्थिति शुभ नहीं मानी जाती है।

शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग में अधिकतम बिन्दु वाली राशि द्वारा इंगित दिशा में जातक का शयनकक्ष होना आवश्यक है। भार्या को नियत्रंण में रखने और उत्तम मैथुन आनन्द के लिए अधिकतम बिन्दु होना आवश्यक है। यदि एक से अधिक भावों में अधिकतम बिन्दु हैं तो शोधन के बाद शेष बचे बिन्दुओं को लेना चाहिए। जो कोई भी भाव अधिकतम बल प्राप्त करता है और जिस किसी भी भाव में अधिकतम बिन्दु होते हैं, अच्छी नींद एवं सुखमय वैवाहिक जीवन के लिए उस दिशा में शयन कक्ष होना चाहिए। यही कारण है कि शुक्र के अधिकतम बिन्दु और लग्न की अपेक्षा सप्तम भाव में कम बिन्दु होने चाहिए, अन्यथा जातक स्त्रियों द्वारा नियत्रित होता है। यदि ऐसे शुक्र पर मंगल का प्रभाव भी हो तो जातक रसिक भी होता है।

प्रत्येक राशि और उसकी त्रिकोण की राशियों के बिन्दुओं का योग करें। जिस राशियों के समूह के पास अधिकतम बिन्दु होते हैं उस समूह द्वारा इंगित दिशा में जातक का शयनकक्ष स्थित होना चाहिए। वास्तु शास्त्रानुसार शयनकक्ष उत्तर–पश्चिम दिशा में होना चाहिए लेकिन यदि किसी कारणवश यह संभव न हो तो जातक का पंलग, घर अथवा कमरे के दक्षिण–पश्चिम दिशा में होना चाहिए।

शुक्र का अपने भिन्नाष्टक वर्ग में अधिकतम बिन्दु वाली राशि में गोचर, जातक को स्त्रियों से समागम, भूमि का क्रय, सम्पदा और आनन्द एवं उपभोग देता है।

यदि भिन्नाष्टक वर्ग में किसी ग्रह के पास 4 बिन्दु हैं तो हानि एवं लाभ, साथ–साथ होता है जिसमें खुशियां और धन–सम्पदा की प्राप्ति भी शामिल है। यदि शुक्र लग्न से चतुर्थ भाव में 4 बिन्दु प्रदत्त करता है तो शुक्र की दशा एवं शुक्र से चतुर्थेश की अन्तर्दशा जातक को वाहन सुख देती है लेकिन यह दुर्घटना का कारण भी हो सकती है। किसी भी भाव अथवा कारक के लिए हमें भावत्–भावम् भी अवश्य देखना चाहिए क्योंकि यह भाव की छाया होती है जो शुभ अथवा अशुभ घटना को इंगित करती है। हमें उत्पन्न होने वाले अशुभ प्रभाव का निश्चित मान भी निकालना चाहिए।

यदि कोई ग्रह 0 बिन्दु प्रदान करता है तो परिणाम अशुभ ही होता है। जहां तक अष्टकवर्ग का सम्बन्ध है तो यह बल से हीन होता है। इसको समझने के

लिए उदाहरणतः शुक्र को लेते हैं। माना कि शुक्र लग्न से तृतीय भाव में स्थित है और अपने से पंचम भाव अर्थात लग्न से सप्तम भाव में यह बिन्दु प्रदान नहीं करता है। चूंकि पंचम भाव भी विवाह होने का संकेत देता है और सप्तम भाव भार्या का भाव होने के कारण, जहां तक बिन्दुओं का सम्बन्ध है यदि शुक्र इस भाव में बिन्दु प्रदत्त नहीं करता है तो जातक का विवाह नहीं होता अथवा जातक की भार्या नहीं होती। किसी भी भाव में शुक्र का बिन्दु प्रदान करना शुभ है। इसका बिन्दु प्रदान न करना बिल्कुल भी शुभ नहीं है क्योंकि यह आनन्द भोगने का कारक है।

सर्वाष्टक वर्ग के सप्तम भाव के बिन्दुओं को सप्तमेश द्वारा अपने भिन्नाष्टक वर्ग में सप्तम भाव में प्रदान किये बिन्दुओं से गुणा करके गुणनफल को 27 से भाग करें और शेषफल प्राप्त करें। यदि चन्द्रमा शुभ है* तो शेषफल के बराबर अश्विनी नक्षत्र से और यदि चन्द्रमा अशुभ है** तो धनिष्ठा से गिनकर आगे का नक्षत्र प्राप्त करें। यदि इस प्रकार से प्राप्त नक्षत्र उस राशि में ही आता है जिस राशि में सप्तमेश का नक्षत्र आता है तो जातक किसी भी सूरत में विवाह नहीं करेगा। किसी भी ग्रह द्वारा प्रदान किये गये बिन्दु यदि वह उस भाव विशेष के साथ लग्न से समान स्थिति में है, समस्या को अधिक बढ़ायेगा।

चतुर्थ भाव की विवेचना करने के लिए, शुक्र के शोध्य पिण्ड को शुक्र से चतुर्थ भाव के बिन्दुओं के साथ गुणा करें। यदि गुणनफल सर्वाष्टक वर्ग के चतुर्थ भाव के बिन्दुओं के बराबर आता है तो जातक के पास एक अच्छा मकान होएगा। इसी प्रकार किसी भी भाव को आंकने के लिए शुक्र के शोध्य पिण्ड को शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग में उस भाव के बिन्दुओं से गुणा करके प्राप्तांक को सर्वाष्टक वर्ग में उसी भाव के बिन्दुओं से तुलना करके देख सकते हैं।

शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग में लग्न से शुक्र द्वारा गृहीत राशि तक के बिन्दुओं का योग करें। यह योग आयु के उस वर्ष को इंगित करता है जिस वर्ष जातक मकान, आनन्दादि होगा।

शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग में शुक्र से चतुर्थ, पंचम एवं नवम भावों के बिन्दुओं का योग करें। यदि यह योग सर्वाष्टकवर्ग के चतुर्थ भाव से सम्बन्धित होता है तो यह इंगित करता है कि ऐसे जातक को उसकी भू-सम्पति से आय भी होती है। यदि अष्टम भाव बली हो तो जातक को किराये में दी गई सम्पति से परेशानियां हो सकती हैं।

---

* शुक्ल पक्ष का चन्द्रमा शुभ चन्द्रमा कहलाता है।

** कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा अशुभ चन्द्रमा कहलाता है।

यदि कोई ग्रह 5 शुभ बिन्दु प्रदान करता है तो जन्मपत्रिका के जातक के परिवार में सभी प्रकार की खुशियां होती हैं, सात्विक व्यक्तियों से भेंट होती है, धार्मिक स्थानों की तीर्थ यात्रा, उच्च शिक्षा की प्राप्ति, शेयर बाजार से प्राप्ति, जातक की स्वयं अथवा निकट सम्बन्धी का विवाह आदि शुभ कार्य होते हैं। इन सब के लिए हम इनके निश्चित कारकों का उस भाव विशेष में गोचर देखेंगे। यदि शुभ बिन्दुओं की संख्या 6 है तो ऐसे जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली हो सकता है, वह दिखने में सुन्दर, संस्कारित, शत्रुओं पर आसानी से विजय प्राप्त करने वाला और रोग एवं ऋण से मुक्त होता है। यदि 7 से अधिक बिन्दु हैं तो यह वाहन सुख, ऐश्वर्य, सुख का भोग, भौतिकता से पूर्ण खुशियां देता है।

शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग द्वारा आजीविका:

शुक्र ध्वनि–दृष्टि, कला, कलात्मक, शिल्प एवं दस्तकारी, वस्त्रों का निर्यात, कपडा उद्योग, कृत्रिम फूलों, इकीबाना, चित्रकला, कम्प्यूटर–ग्राफिक्स (शुक्र की राहू–केतू से युति। यहां राहू–केतु कम्प्यूटर के लिए एवं शुक्र ग्राफिक्स के लिए) आदि को इंगित करता है। कम्प्यूटर–ग्राफिक्स के लिए मंगल भी बली होना आवश्यक है क्योंकि कम्प्यूटर बिजली से चलता है।

शुक्र द्वारा इंगित ये सभी तब सही सिद्ध होते हैं जब शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग में शुक्र से दशम भाव में अच्छी संख्या में शुभ बिन्दु होते हैं। शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग के दशम, एकादश एवं द्वितीय भावों के बिन्दुओं का योग, सर्वाष्टक वर्ग में लग्न से दशम भाव के बिन्दुओं की संख्या से मिलना चाहिए।

कुछ ज्योतिषाचार्यों का मत है कि शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग के दशम, एकादश एवं द्वितीय भावों के बिन्दुओं के योग को शुक्र द्वारा गृहीत राशि के बिन्दुओं से गुणा करके प्राप्त गुणनफल में से दशमेश के भिन्नाष्टक वर्ग के बिन्दुयों के योग को घटायें। यह आजीविका से सम्बन्धित है, इसको प्रमाणित करने की आवश्यकता है।

यदि सर्वाष्टक वर्ग में तृतीय, सप्तम एवं एकादश भावों के बिन्दु दशम भाव के बिन्दुओं से मिलते–जुलते हों अर्थात उनमें अन्तर अधिक न हो और वे पूरा–पूरा भाग होने योग हों तो जातक की शुक्र से सम्बन्धित कार्यों से आजीविका होती है।

अध्याय 14

शनि का भिन्नाष्टकवर्ग

शनि के भिन्नाष्टकवर्ग द्वारा, जन्मपत्रिका के जातक को शनि द्वारा प्राप्त होने वाले शुभाशुभ परिणामों की विवेचना की जाती है। शनि मृत्यु, रोग एवं दुःख का कारक ग्रह होता है और यह विघ्न, गरीबी, वियोग, ईर्ष्या एवं दोष का कारण बनता है।

सामान्यतः निर्बली शनि होने पर ही नकारात्मक परिणाम अधिक होते हैं जबकि दूसरी तरफ बली शनि कडी मेहनत, एकाग्रता और आध्यात्मिक जीवन के शुभ होता है। यह कृषि–भूमि, स्थिर सम्पति और भू–सम्पति का भी कारक होता है।

वृषभ एवं तुला लग्न के लिए योगकारक होने के कारण सबसे अधिक शुभफलदायक होता है और इसके अतिरिक्त मिथुन एवं कन्या लग्न के लिए भी शनि सामान्यतः अच्छे फल देन वाला ग्रह होता है।

शनि के गोचर के परिणामः

जन्मपत्रिका के जिस भाव में 0 से 3 बिन्दु होते हैं, उस भाव में शनि का गोचर बीमारी एवं मृत्यु तुल्य स्थिति, आर्थिक हानि, बलात्कार, हत्या, निम्नवर्गीय लोगों से रुकावटें, अधिक मेहनत का कार्य लेकिन कम प्राप्ति, भार्या एवं सन्तान को पीड़ा और यहां तक की मृत्यु तक भी, देता है।

जन्मपत्रिका में 0 से 3 बिन्दुओं के साथ स्थित शनि निर्बली होता है, जबकि 4 बिन्दुओं के साथ स्थिति होने पर यह सम परिणाम देता है। चूंकि शनि के अधिकतम बिन्दु केवल 39 हैं, अतः यह देखा गया है कि 4 बिन्दुओं के साथ शनि पर्याप्त अथवा योग्य फल देने में पूर्णरूप से समर्थ होता है।

यदि जन्मपत्रिका में शनि बली होकर 5 से 8 बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो यह भूसम्पति अर्थात जमीन–जायदाद, नौकर, उच्च सामाजिक स्थिति, दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता और जनसमूह का नेतृत्व देता है।

कुछ ज्योतिषाचार्यों ने इसी प्रकार के परिणाम अलग–अलग बिन्दुओं के साथ स्थित जन्मकालीन शनि के बारे में कहे हैं। अपने निरुपण में हमने इस व्याख्या को अधिक विश्वसनीय नहीं पाया है। यह निश्चित है कि इस विषय में किसी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले अधिक शोध करना आवश्यक है।

किसी भी पद्धति से गोचर के परिणामों की विवेचना करते समय ज्योतिषशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों का ध्यान रखना भी आवश्यक है। यदि यह अच्छे बिन्दुओं के साथ हो तो चन्द्रमा से तृतीय, षष्टम एवं एकादश भाव में शनि का गोचर शुभ फलदायक होता है। चन्द्रमा के ऊपर एवं चन्द्रमा से द्वितीय एवं द्वादश भाव में शनि के गोचर का समय साढे साती का समय कहलाता है और यदि इस समय जातक की दशा भी प्रतिकूल हो तो यह समय जातक के लिए परेशानियों, मानसिक चिन्ताओं एवं दुःख का समय हो सकता है। इसी प्रकार के फल तब भी मिलते हैं जब शनि चन्द्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में गोचर करता है। यदि इस समय जातक की दशा भी अशुभ चल रही होती है तो यह समय अधिक अशुभ हो जाता है। लेकिन यदि सर्वाष्टकवर्ग में जन्मपत्रिका के सम्बन्धित भावों में 28 से अधिक बिन्दु हों तो अशुभ फलों की प्रबलता में कमी आ जाती है।

जब शनि किसी ऐसी राशि में गोचर करता है जो राशि शनि के भिन्नाष्टक वर्ग में कोई भी शुभ बिन्दु प्राप्त नहीं करती है तो जातक के लिए मृत्यु अथवा मृत्यु तुल्य स्थित होती है। चाहे शनि अपनी उच्च राशि में ही क्यों न हो यदि 3 या कम बिन्दुओं के साथ होता है तो ऐसा जातक *अल्पायु* कहा जाता है। शास्त्रीय ग्रन्थों में कहा गया है कि अपने भिन्नाष्टक वर्ग में शनि यदि 6 या अधिक बिन्दुओं के साथ बली स्थिति में होता है तो जातक को जन्म से अत्याधिक चिन्तायें होती हैं। यदि यह लग्न में स्थित हो तो यह स्पंष्ट इंगित करता है कि जातक को जीवनभर परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। अन्य लोग ऐसे जातक को समझ पाने में असमर्थ होते हैं। यदि यह शनि उच्च का होता है तो यह जातक को दार्शनिक बनाता है और जीवन में सब कुछ, यहां तक की पैतृक सम्पति भी खोते हुए मोहमाया से विरक्ति देता है।

नीच राशि अथवा शत्रु राशिगत अथवा अस्त शनि यदि 5 या अधिक बिन्दुओं के साथ हो और चन्द्रमा बली हो तो यह *पूर्णायु* देता है। पूर्णायु फलित करने के लिए चन्द्रमा का बल देखना भी आवश्यक है।

यदि त्रिकोण की राशियों में से किसी भी राशि का स्वामी चन्द्रमा अथवा शनि होता है तो ऐसे जातक को साढे साती में परेशानियां कम होती हैं।

उदाहरणतः मीन लग्न के लिए कर्क राशि त्रिकोण की राशि होती है अतः मीन लग्न के जातकों के लिए साढे साती का समय अधिक परेशानियों का समय नहीं होता है। इसी प्रकार तुला एवं वृषभ राशियों के लिए शनि त्रिकोण के स्वामी के साथ–साथ योगकारक ग्रह भी होता है अतः कभी भी अशुभ परिणाम नहीं देता है।

यदि शनि लग्न अथवा पंचम भाव में शत्रु राशिगत हो या नीच का हो या अस्त हो या ग्रहयुद्ध में हारा हुआ हो और 4 या 5 बिन्दुओं के साथ हो तो ऐसे जातक का सम्बन्ध व्यभिचारी स्त्रियों एवं नौकरों के साथ होता है और यह सम्पदा की अल्पता को भी दर्शाता है। यदि इस स्थिति में 8 शुभ बिन्दु हों तो जातक के अन्दर नेतृत्व के गुण होते हैं और वह ऐसे पवित्र स्थान का प्रशासक होता है जहां मंत्रों का उच्चारण, यज्ञ, यत्रं पूजा और तत्रं पूजा होती है। यदि 7 बिन्दुओं के साथ होता है तो जातक समृद्ध और धनवान होता है।

शनि के भिन्नाष्टक वर्ग में प्रत्येक राशि एवं उससे त्रिकोण की राशियों योग करें। जिस राशि समूह के बिन्दु अधिकतम होते हैं उस दिशा में जातक का कूडादान अथवा बेकार की वस्तुएं रखने का कमरा होना चाहिए।

शनि के भिन्नाष्टक वर्ग में जो राशि बिन्दु रहित होती है उस राशि में सूर्य एवं चन्द्रमा का गोचर उस सौरमाह में मृत्यु को इंगित करता है। मकर एवं कुम्भ लग्न के जातकों के लिए क्रमशः चन्द्रमा एवं सूर्य सप्तमेश होते हैं।

शनि का कक्ष्या विशेष में गोचर फलः

अपने भिन्नाष्टकवर्ग की बिन्दुहीन कक्ष्या में शनि का गोचर, स्वास्थ्य एवं धन–सम्पति की हानि, दुर्गति एवं दुःखों का कारण बनता है और जातक को दुर्घटना की ओर अग्रसर करता है।

अपने भिन्नाष्टकवर्ग में, बिन्दुयुत कक्ष्या में शनि का गोचर पैतृक धन–सम्पति, विजय, कृषि उत्पादक, जमीन–जायदाद और सरकार से संविदा आदि देता है। यह समय चुनाव लड़ने अथवा उपग्रह छोड़ने के लिए बहुत ही शुभ होता है।

कृषि कार्य प्रारम्भ करने का शुभ समयः

जब शनि अपने भिन्नाष्टकवर्ग में अधिकतम बिन्दु प्राप्त करने वाली राशि में गोचर करता है वह समय सेवकों की नियुक्ति और कृषि सम्बन्धित कार्य प्रारम्भ

करने के लिए सबसे अधिक श्रेष्ठ होता है। लेकिन चूंकि शनि धीमी गति से चलने वाला ग्रह है और 30 साल में एक बार ही एक राशि में गोचर करता है अतः यह नियम अधिक व्यवहारिक नहीं है। इसके स्थान में यह अधिक उचित होगा कि कार्य उन दिनों प्रारम्भ किया जाए जिन दिनों अधिकतम बिन्दुओं वाली राशि लग्न में उदय होती है।

आयुः

शनि आयु का कारक ग्रह है जो जन्मपत्रिका में अपनी स्थिति अनुसार आयु की अवधि का निर्णय करता है। ज्योतिषशास्त्र के शास्त्रीय ग्रन्थों में आयु निर्णय के लिए स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि यदि शनि केन्द्र में 1 से 4 बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो जातक की आयु को कम करता है। यह भी कहा गया है कि यदि बली शनि 5 या 6 बिन्दुओं के साथ लग्न में स्थित हो तो अत्याधिक दुर्गति, अल्पायु और धन–सम्पति की हानि देता है। यद्यपि नीच राशि अथवा शत्रु राशि का शनि लग्न में 5 से अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित हो तो शुभ परिणाम देता है बशर्ते कि चन्द्रमा अच्छी स्थिति में हो।

व्यवहारिक रूप में अनेक जन्मपत्रिकाओं का विश्लेषण करने पर हमने शास्त्र के इस नियम को स्वीकार करने योग्य नहीं पाया है। इस विषय पर ज्योतिष का आधारभूति नियम कि केन्द्र में स्थित उच्च राशि अथवा स्वराशि का बली शनि *'शश'* नामक महापुरुष योग बनाता है, फलस्वरूप जातक दीर्घायु एवं सुख–समृद्धि से पूर्ण होता है, अधिक सार्थक सिद्ध होता है। शश नामक महापुरुष योग के विषय में फलदीपिका में मंत्रेश्वर कहते हैं किः

शस्तः सर्वजनैः सुभृत्यबलवान् गामाधिपो वा नृपो
दुर्वृत्तः शशयोगजोऽन्यवनितावित्तान्वितः सौख्यवान्।।

जिसका भावार्थ है कि शश योग में जन्मा जातक राजा के समान अर्थात उच्च पदाधिकारी एवं प्रभावशाली होता है। ऐसा जातक स्वयं बलवान होता है और उसके नीचे, अच्छे–अच्छे लोग कार्य करते हैं। ऐसे जातक की सभी लोग प्रशंसा अवश्य करते हैं लेकिन इनका आचरण उत्तम नहीं होता है। ऐसा जातक धनवान एवं सुखी होता है।

इससे यह बात अधिक पुष्ट होती है कि शनि की ऐसी स्थिति का योग जातक का लम्बी आयु एवं समृद्धिवान होने का योग है। जितने अधिक बिन्दु होगें, परिणाम उतना ही अधिक शुभ होता है।

ज्योतिष के सामान्य नियमानुसार लम्बी आयु के लिए लग्नेश का अष्टमेश से बली होना और केन्द्र में शुभ ग्रहों का होना आवश्यक है।

यदि शनि लग्न अथवा चतुर्थ भाव में अपनी उच्च अथवा स्वराशि में न हो और कम बिन्दुओं के साथ हो यह दीर्घायु प्रदान नहीं करता है। आयुष्य का कारक ग्रह होकर निर्बली होने और लग्न पर अशुभ दृष्टि होने की स्थिति में यह नियम कुछ हद तक तो ठीक हो सकता है लेकिन अल्पायु होने के लिए अन्य स्थितियों जैसे कि केन्द्र में शुभ ग्रहों का न होना, कमजोर लग्नेश, चन्द्रमा, बृहस्पति के साथ–साथ अष्टम एवं दशम भाव/भावेश भी अतिमहत्वपूर्ण हैं, अतः अल्पायु के फलित का निर्णय करने से पहले इनका विचार भी अवश्य करना चाहिए।

शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि यदि नीच राशि अथवा शत्रु राशि का शनि लग्न में 4 से अधिक बिन्दुओं के साथ स्थित होकार शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को दीर्घायु देता है।

समृद्धि के योगः

1. जब शनि लग्न अथवा चन्द्रमा से केन्द्र भाव में अपनी उच्च राशि अथवा स्वराशि में स्थित होता है तो शश नाम का महापुरुष योग बनाता है जो जातक को प्रचुर मात्रा में सम्पति और ताकत देता है।
2. यदि लग्न अथवा शनि से अष्टम भाव में शुभ ग्रह स्थिति हो और उस भाव का भावेश भी बली होकर स्थित हो तो यह स्थिति जातक को अत्याधिक समृद्धि एवं खुशियां देने वाली होती है।
3. वृषभ लग्न के लिए नवमेश एवं दशमेश होने से शनि योगकारक होता है। ऐसी स्थिति में यदि शनि तृतीय, षष्टम अथवा एकादश भाव में 3 बिन्दुओं के साथ भी स्थित हो तो बली राजयोग बनाता है।
4. नीच अथवा शत्रु राशि का शनि अस्त होकर 4 अथवा 5 बिन्दुओं के साथ लग्न अथवा पंचम भाव अथवा कुछ मामलों में अन्य भाव में भी स्थित होता है तो अत्याधिक धन–सम्पदा देता है। ऐसी स्थिति में जितने अधिक बिन्दु होते हैं, जातक की उतनी ही अधिक समृद्धि होती है और उसके पास बहुत सारे नौकर, उपपत्नियां जैसे व्यक्तिगत सुख–साधन होते हैं।

5. यद्यपि 4 से अधिक बिन्दुओं के साथ शनि, चन्द्रमा से युति करके लग्न में स्थित हो तो जातक को दरिद्रता देता है लेकिन अन्य केन्द्रों में यह धन–सम्पति एवं समृद्धि देता है।

अशुभ युतियांः

1. जन्मपत्रिका में स्वराशि का शनि द्वितीय अथवा द्वादश भाव में और अन्य अशुभ ग्रह त्रिकोण में स्थित हों तो ग्रहों की यह स्थिति जातक को दरिद्रता देती है बशर्ते शनि 4 बिन्दुओं के साथ हो।
2. शनि अथवा लग्न से अष्टमेश, शत्रु की राशि में स्थित हो अथवा अस्त हो और शुभ ग्रहों की दृष्टि से अप्रभावित हो तो यह स्थिति जन्मपत्रिका के जातक के लिए शुभ नहीं होती है।
3. नीच राशिगत शनि एवं उच्च का मंगल, दोनों ही शनि के अष्टकवर्ग में 4 बिन्दुओं के साथ स्थिति हों और अष्टमेश निर्बली हो तो यह स्थिति दरिद्रता देती है।

शनि का गोचर और मृत्युः

शनि आयु का कारक ग्रह होता है, अर्थात मृत्यु निर्णय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अष्टकवर्ग पद्धति में भी आयु निर्णय के लिए शनि एवं शनि का भिन्नाष्टकवर्ग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शनि के भिन्नाष्टकवर्ग में, शनि से अष्टम भाव में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को शनि के शोध्य पिण्ड से गुणा करें।' प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग करके शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या के नक्षत्र अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण के नक्षत्र पर शनि का गोचर जातक के लिए संघातिक हो सकता है।

इस नियम को स्वर्गीय श्रीमति इन्दिरा गांधी की उदाहरण जन्मपत्रिका में लगाकर समझते हैं।

शनि का शोध्यपिण्ड	= 196
शनि से अष्टम भाव में प्राप्त बिन्दु	= 1

* कुछ शास्त्रीय ग्रन्थों में शनि के भिन्नाष्टकवर्ग में, शोधन से पूर्व, शनि से सप्तम भाव में प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को लिया गया है।

अतः 196 x 1 = 196 -:- 27 = शेषफल 7

अश्विनी नक्षत्र से 7 गिनने पर पुनर्वसु नक्षत्र आता है।

30 अक्टूबर1984 को जब श्रीमति इन्दिरा गांधी की मृत्यु हुई, उस समय शनि विशाखा नक्षत्र में गोचर कर रहा था जो पुनर्वसु से त्रिकोण का नक्षत्र है।

अथवा

शनि के भिन्नाष्टकवर्ग में, शनि द्वारा गृहीत राशि में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को शनि के शोध्य पिण्ड से गुणा करें और प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग करके शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, नक्षत्र की संख्या को दर्शाती है।

उस नक्षत्र अथवा उस नक्षत्र से त्रिकोण के नक्षत्र पर शनि का गोचर का समय जातक के लिए संघातिक हो सकता है।

अथवा

शनि के भिन्नाष्टकवर्ग में, बृहस्पति द्वारा गृहीत राशि में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को शनि के शोध्य पिण्ड से गुणा करें और प्राप्त गुणनफल को 12 से भाग करके शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, राशि की संख्या को दर्शाती है।

उस राशि अथवा उस राशि से त्रिकोण की राशि पर बृहस्पति का गोचर का समय जातक के लिए संघातिक हो सकता है।

शनि का शोध्य पिण्ड और सूर्य का गोचरः

शनि के भिन्नाष्टकवर्ग में, सूर्य द्वारा गृहीत राशि में शोधन से पूर्व प्राप्त बिन्दुओं की संख्या को शनि के शोध्य पिण्ड से गुणा करें और प्राप्त गुणनफल को 12 से भाग करके शेषफल प्राप्त करें। शेषफल की संख्या, राशि की संख्या को दर्शाती है।

उस राशि अथवा उस राशि से त्रिकोण की राशि पर सूर्य का गोचर का समय जातक के लिए संघातिक हो सकता है।

अध्याय 15

अष्टकवर्ग और गोचर

ग्रह सदैव चलायमान रहते हैं जिसके कारण सौरमण्डल में उनकी स्थितियां निरन्तर बदलती रहती है। ग्रहों की इस चलायमान स्थिति को ही गोचर कहते हैं और जन्मपत्रिका के भावों एवं ग्रहों संदर्भ में, गोचर के ग्रहों की दिन प्रतिदिन की स्थितियों की विवेचना गोचर अध्ययन कहलाता है। अष्टकवर्ग पद्धति, गोचर अध्ययन की विभिन्न पद्धतियों में से एक पद्धति है।

गोचर को भलीभान्ति समझने के लिए सर्वप्रथम ग्रहों की गति को जानना आवश्यक है अर्थात विभिन्न ग्रह कितने समय तक एक राशि में रहते हैं, यह ज्ञान होना आवश्यक है। ग्रहों द्वारा किसी भी राशि को पार करने में लिए गये समय को नीचे सारिणी में दर्शाया गया है।

सारिणी

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू
एक राशि में गोचर का समय	30 दिन	2.25 दिन	45 दिन	28 दिन	365 दिन / 1 साल	30 दिन	2.5 साल	1.5 साल

ग्रहों की प्रति दिन की औसत गति

	प्राचीन खगोलशास्त्रानुसार						आधुनिक खगोलशास्त्रानुसार		
ग्रह	अंश	मिनट	सैकण्ड	परा	प्रतपरा	तत्परा	अंश	मिनट	सैकण्ड
शनि	00	02	00	22	53	25	00	02	01.9
बृहस्पति	00	04	59	8	48	35	00	04	59.1
मंगल	00	31	26	28	11	09	00	31	26.5
सूर्य	00	59	08	10	10	24	00	59	08.2
शुक्र	01	36	07	43	37	15	01	36	07.7
बुध	04	05	32	20	41	51	04	05	32.4
चन्द्रमा	13	10	34	52	03	49	13	10	35.0

यह हमेशा याद रखना चाहिए कि गोचर के परिणाम जन्मपत्रिका के योगों द्वारा इंगित परिणाम की अवहेलना नहीं कर सकते हैं। जन्मपत्रिका ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है जिसमें दशाक्रम भी निहित होता है और जो हम सब को कर्मो के अनुरूप कर्मफल से बांधती है। नियति का नियम हमारे कर्मों के बन्धन को प्रकट करने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है और हमारे जीवन में, जो कुछ भी शुभ अथवा अशुभ घटनायें होती हैं वह हमारे कर्मों का ही फल होता है।

उदाहरणतः यदि जन्मपत्रिका सन्तान का संकेत नहीं देती है तो सन्तान होने के अनुकूल गोचर होने की स्थिति में यद्यपि अन्य परिणाम अच्छे हो सकते हैं लेकिन सन्तान का जन्म होगा, यह फलित नहीं करना चाहिए क्योंकि गोचर अपनी ओर से कोई भी फल देने में असमर्थ है। सही मायने में दशाक्रम द्वारा इंगित किये जाने वाली घटनाओं के संदर्भ में गोचर को द्वितीय वरीयता देनी चाहिए।

लेकिन इसके विपरीत, यदि जन्मपत्रिका में सन्तान योग है तो वह कब फलीभूत होगा इसका निर्णय कैसे हो? ज्योतिषशास्त्र का सामान्य ज्ञाता भी इस प्रश्न के उत्तर में कह सकता है कि ज्योतिषशास्त्र के सामान्य नियमानुसार जन्मपत्रिका का कोई भी योग, उस योग सम्बन्धित अनुकूल दशा में फलीभूत होता है, अतः सन्तान सम्बन्धित अनुकूल दशा आने पर यह योग भी फलीभूत होगा। यहां पुनः यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि दशाकाल कम से कम 6 वर्ष लम्बा होता है और 6 वर्ष का समय कोई कम समय नहीं होता है, तो इसका निर्णय कैसे हो कि इन वर्षों में सन्तान कब होगी। इस प्रश्न का उत्तर जानने में गोचर की भूमिका प्रारम्भ होती है। जैसे कि पहले भी कहा है कि ग्रह चलायमान होते हैं, अतः जिस समय ग्रह, गोचरवश अनुकूल स्थिति में आएंगे तो वह समय विशेष, सन्तान योग के फलीभूत होने का समय होगा। अतः यद्यपि जीवन में होने वाली मुख्य घटनाओं की विवेचना जन्मपत्रिका से करते हैं लेकिन, गोचर को अष्टकवर्ग से मिलाकर देखने पर उस घटना की शुभता अथवा अशुभता के स्तर को आंका जा सकता है।

गोचर के परिणामों के निर्णय के लिए निम्नलिखित बातों का विचार करना चाहिए:

शास्त्रीय ग्रन्थों का कथनः

ज्योतिषशास्त्र के सभी शास्त्रीय ग्रन्थों ने गोचर देखने के लिए सभी ग्रहों की स्थिति को जन्म चन्द्रमा से देखने की अनुशंसा की है। अपनी कृति फलदीपिका के छब्बीसवें अध्याय के प्रथम श्लोक में मंत्रेश्वर, गोचर देखने के विषय को स्पष्ट करते हुए कहते हैं:

सर्वेषु लग्नेष्वपि सत्सु चन्द्रलग्नं प्रधानं खलु गोचरेषु।
तस्मात्तदृक्षादपि वर्तमानग्रहेन्द्रचारैः कथयेत्फलानि ।।

अर्थात यद्यपि जन्मपत्रिका में जन्म लग्न से, सूर्य को लग्न मानकर* या अन्य ग्रह जिस राशि में हों उनको लग्न मानकर विचार किया जा सकता है, किन्तु गोचर फलादेश में चन्द्र लग्न की प्रधानता है। चन्द्र लग्न अर्थात जन्म के समय जिस राशि में चन्द्रमा स्थित था और जो चन्द्रराशि भी कहलाती है।

उदाहरणतः स्वर्गीय इन्दिरा गांधी के जन्म के समय कर्क लग्न उदय हो रहा था एवं चन्द्रमा मकर राशि में था अतः गोचर देखने के लिए मकर राशि को लग्न मानकर विचार किया जाएगा।

जन्म चन्द्रमा के संदर्भ में ग्रहों के गोचर की शुभ स्थितियांः

सभी ग्रह, चाहे शुभ हों अथवा अशुभ, गोचरवश चन्द्रमा से एकादश भाव में अनुकूल स्थित में होते हैं और परिणास्वरूप शुभ फल देते हैं। इसके अतिरिक्त सूर्य, राहू एवं केतु गोचरवश चन्द्रमा से तृतीय, षष्टम एवं दशम भाव में आने पर शुभ परिणाम देते हैं। मंगल एवं शनि तृतीय एवं षष्टम भाव में शुभ फल देते हैं। चन्द्रमा प्रथम, तृतीय, षष्टम एवं सप्तम भाव में शुभ फल देता है, जबकि शुक्र षष्टम, सप्तम एवं दशम भावों को छोडकर, अन्य सभी भावों में शुभ फलदायक होता है। बृहस्पति, द्वितीय, पंचम, सप्तम एवं नवम भाव में और बुध द्वितीय, चतुर्थ, षष्टम, अष्टम एवं दशम भाव में गोचरवश शुभ फलदायक होता है।

उपरोक्त सभी स्थितियां ग्रहों द्वारा शुभ फल देने की स्थितियां हैं, लेकिन गोचर विश्लेषण करते समय एक अन्य स्थित का भी विचार करना आवश्यक होता है, जिसे ***वेध*** कहते हैं।

---

* ज्योतिषशास्त्र के सभी ग्रन्थों ने फलित करने के लिए लग्न के अतिरिक्त, चन्द्रमा एवं सूर्य को भी लग्न मानकर, जन्मपत्रिका की विवेचना करने की अनुशंसा की है। फलदीपिका ने यहां इसी सिद्धान्त को पुनः कहा है।

गोचरवश कोई भी ग्रह चाहे अपने शुभ भाव अथवा अशुभ भाव में गोचर कर रहा हो, यदि दूसरा ग्रह, उस ग्रह के भाव से, वेध के भाव में गोचर करता है तो इस स्थिति में गोचर के परिणाम का अहसास नहीं होता है। उदाहरणतः सूर्य तृतीय भाव में गोचर कर रहा हो तो वह शुभ परिणाम देने के लिए बाध्य होता है लेकिन यदि उसी समय कोई अन्य ग्रह सूर्य के वेध भाव में गोचर कर रहा हो तो वह सूर्य को शुभ परिणाम नहीं देने देता है और सूर्य का गोचर निष्फल हो जाता है। यहां यह याद रखना आवश्यक है कि चूंकि सूर्य, शनि का पिता है अतः सूर्य एवं शनि के बीच में कोई वेध नहीं होता है। अर्थात गोचरस सूर्य एवं शनि, एक–दूसरे से वेध स्थान में स्थित होने पर भी, एक–दूसरे को शुभ परिणाम देने से बांधते नहीं हैं। इसी प्रकार चूंकि चन्द्रमा, बुध का पिता है अतः इनके बीच भी वेध नहीं होता है।

वेध की इस विधा को समझने के लिए पहले यह समझते हैं कि विभिन्न शास्त्रों में विभिन्न ग्रहों के वेद स्थानों के बारे में क्या कहा है। नारद पुराण एवं फलदीपिका के अनुसार शुभ स्थानों में स्थित होने पर निम्नलिखित स्थानों में स्थित ग्रह वेध करते हैं:

सूर्य

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	3	6	10	11
उपरोक्त भावों के वेध भाव	9	12	4	5

चन्द्रमा

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	1	3	6	7	10	11
उपरोक्त भावों के वेध भाव	5	9	12	2	4	5

मंगल

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	3	6	11
उपरोक्त भावों के वेध भाव	12	9	5

बुध

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	2	4	6	8	10	11
उपरोक्त भावों के वेध भाव	5	3	9	7	8	12

बृहस्पति

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	2	5	7	9	11
उपरोक्त भावों के वेध भाव	12	4	3	10	8

शुक्र

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	1	2	3	4	5	8	9	11	12
उपरोक्त भावों के वेध भाव	8	7	1	10	9	5	11	3	6

शनि

गोचर वश गृहीत शुभ भाव	3	6	11
उपरोक्त भावों के वेध भाव	12	9	5

विशेषः

1. राहू–केतु तृतीय, षष्टम, दशम एवं एकादश भावों में शुभ परिणाम देते हैं।
2. वेध केवल शुभ भावों में लागू होता है, अशुभ भावों में लागू नहीं होता है।

ज्योतिषशास्त्र में मील का पत्थर मानी जाने वाले अन्य ग्रन्थ, जातक परिजात के अनुसार प्रत्येक भाव का, एक वेध भाव होता है। जब कोई भी ग्रह किसी भाव विशेष में गोचर करता है तो उस भाव के, वेध भाव में गोचरवश स्थित अन्य ग्रह द्वारा उसका वेध होता है। जन्मपत्रिका के प्रत्येक भाव के वेध भाव को निम्नलिखित सारिणी में दर्शाया गया है।

सारिणी संख्या 15.1

राशि/ग्रह	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
सूर्य	1	2	9	3	6	12	7	8	10	4	5	11
चन्द्रमा	5	1	9	3	6	12	2	7	10	4	5	11
मंगल	1	2	12	3	4	9	6	7	8	10	5	11
बुध	2	5	4	3	7	9	6	7	8	8	12	11
बृहस्पति	1	12	2	5	4	6	3	7	10	9	8	11
शुक्र	8	7	1	10	9	12	2	5	11	4	3	6
शनि	1	2	12	3	4	9	6	7	8	10	5	11

सारिणी की विवेचनाः

उपरोक्त सारिणी के अनुसार, यदि सूर्य, जन्म के चन्द्रमा से प्रथम भाव में गोचर करता है तो उसी भाव में स्थित अन्य ग्रह से, द्वितीय भाव में गोचर करता है तो द्वितीय भाव में स्थित ग्रह से, तृतीय भाव में गोचर करता है तो नवम भाव में स्थित ग्रह से और इसी प्रकार पंचम भाव में गोचर करता है तो षष्टम भाव में स्थित ग्रह से, उसका वेध होता है। इसी प्रकार अन्य भावों को और अन्य ग्रहों के लिए विभिन्ना भावों को देखा जाता है।

विभिन्न भावों में उपरोक्त गोचर का अष्टकवर्ग के संदर्भ में अर्थः

जैसा कि पहले भी कहा गया है कि भिन्नाष्टक वर्ग में प्रत्येक ग्रह के पास अधिकतम 8 इकाई होती हैं, 0 इकाई निम्नतम बल है और 4 इकाई मध्यम बल होता है, जबकि सर्वाष्टकवर्ग में ग्रह के पास अधिकतम 56 इकाई बल होता है जिसका 28 इकाई मध्य बिन्दु होता है।

भिन्नाष्टकवर्ग में 0 से 8 बिन्दुओं के परिणामों के सामान्य नियम इस प्रकार हैंः

बिन्दुओं की संख्या	प्राप्त होने वाले परिणाम
0	मृत्यु भय अथवा अत्याधिक कष्ट
1	हानियां, बिखराव, चिन्तायें, रोग
2	हानियां, अनावश्यक व्यय, जीवन एवं कार्यो में रुकावटें
3	चिन्तायें, मिथ्याबोध अथवा भ्रम, अप्रसन्नता
4	दशा के अनुसार मिले–जुले परिणाम
5	स्वास्थ्य, धन–सम्पति, सबसे अच्छा तालमेल
6	धन–सम्पति की वृद्धि, प्राप्तियां, उच्च सामाजिक स्थिति
7	सभी प्रकार की खुशियां
8	सभी प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति, समाज में प्रसिद्धि

ग्रहों के शुभ एवं अशुभ परिणामः

1. **सूर्यः** यदि सूर्य अधिकतम बिन्दुओं के साथ बली स्थिति में है तो यह अपने भाव विशेष के स्वामित्व के अनुसार शत्रुओं पर विजय, शासन में उच्च स्थिति, स्वास्थ्य एवं धन–सम्पति की वृद्धि जैसे शुभ फल देता है।

   जबकि कम बिन्दुओं के साथ निर्बली सूर्य अप्रसन्नता, बाधायें, शासन से परेशानियां, परिवार से अलगाव और इधर–उधर भटकना आदि, अशुभ फल देता है।

   सूर्य द्वारा प्रदत्त रोगः सिरदर्द, हृदय रोग, सीने में दर्द, आंखों की बिमारियां, पेट दर्द आदि।

2. **चन्द्रमाः** यदि चन्द्रमा अधिकतम बिन्दुओं के साथ बली स्थिति में हो तो धन–सम्पति, अच्छा भोजन, शयनकक्ष का सुख, सुन्दर एवं बहुमूल्य परिधान, मित्रता, विपरीत लिंग से संयोग, सुख, समृद्धि और अच्छा स्वास्थ्य आदि, शुभ फल देता है।

   जबकि कम बिन्दुओं के साथ स्थित निर्बली चन्द्रमा कमजोर दिमाग, दिमागी अशान्ति, डर, हर प्रकार की समस्यायें, घरेलू असन्तोष, स्वास्थ्य एवं धन की हानि, शरीर में आलस्य और इर्ष्या आदि, अशुभ फल देता है।

   चन्द्रमा द्वारा प्रदत्त रोगः फेफड़े सम्बन्धित रोग, अस्थमा, सांस की बिमारियां, पाचन क्रिया सम्बन्धित रोग, हैजा, अतिसार, पीलिया, रक्त विकार आदि।

3. **मंगलः** अधिकतम बिन्दुओं के साथ स्थित बली मंगल प्रभुत्व, शत्रुओं पर सफलता, विजय, भूसम्पदा, धन–सम्पति आदि, शुभ फल देता है।

   जबकि कम बिन्दुओं के साथ स्थित निर्बली मंगल भाई–बहनों के साथ झगडा–फसाद, कड़वे शब्दों का आदान–प्रदान, धन–सम्पति एवं पदच्युति, भार्या के साथ मतभेद, दुर्घटना आदि, अशुभ फल देता है।

   मंगल द्वारा प्रदत्त रोगः रक्तचाप, अल्सर, घाव, चोट, पित्त की अधिकता एवं इसके कारण बुखार, रक्तविकार आदि।

4. **बुधः** अधिकतम बिन्दुओं के साथ स्थित बली बुध, अच्छी वाचाल शक्ति, धन–सम्पति, समृद्धि, सम्मान, सचरित्रता आदि, शुभ फल देता है।

   जबकि कम बिन्दुओं के साथ स्थित निर्बली बुध, धन–सम्पति की हानि,

कर्कश वाणी, अपमान, सन्ताप, पदच्युति, बुद्धि का मन्द होना आदि अशुभ फल देता है।

बुध द्वारा प्रदत्त रोगः स्नायु का असन्तुलन, मस्तिष्क सम्बन्धित बिमारियां, त्वचा सम्बन्धित बिमारियां, खून की कमी आदि।

5. **बृहस्पतिः** अधिकतम बिन्दुओं के साथ स्थित बली बृहस्पति, धन–सम्पति, भूसम्पति, समृद्धि, पुत्र सन्तान का जन्म, शासन की अनुकम्पा, धार्मिक एवं सचरित्र व्यक्तियों से सम्बन्ध, ज्ञान, विवाह और पारिवारिक प्रसन्नता आदि, शुभ फल देता है।

   जबकि कम बिन्दुओं के साथ स्थित निर्बली बृहस्पति धन–सम्पति की हानि, अपमान, पदच्युति, स्थान परिवर्तन, अपव्यय, वियोग आदि अशुभ फल देता है।

   बृहस्पति द्वारा प्रदत्त रोगः यकृत सम्बन्धित बिमारियां, केन्सर, पीलिया, मधुमेह आदि।

6. **शुक्रः** अधिकतम बिन्दुओं के साथ स्थित बली शुक्र, विषय–सुख, सुगन्धित द्रव्य, बहुमूल्य परिधान, खुशियां, विवाह, सन्तान, धन–सम्पति, समृद्धि, पारिवारिक खुशियां, आनन्दमय यात्रायें, प्रसिद्धि, भूसम्पति एवं सुन्दर आवास आदि, शुभ फल देता है

   जबकि कम बिन्दुओं के साथ स्थित निर्बली शुक्र ऋण, सन्ताप, हानियां, स्त्रियों के द्वारा बुराइयां, भार्या की अस्वस्थता आदि अशुभ फल देता है।

   शुक्र द्वारा प्रदत्त रोगः यौन रोग, विषय–सुख से होने वाले रोगादि।

7. **शनिः** अधिकतम बिन्दुओं के साथ स्थित बली शनि अथवा शनि का अधिकतम बिन्दुओं वाले भाव में गोचर धन–सम्पति, खुशियां, सेवकों का सुख, भूसम्पति, विजय, स्थायी नौकरी, जनसमूह का नेतृत्व, सुखी वैवाहिक जीवन एवं सम्मान आदि, शुभ फल देता है।

   जबकि कम बिन्दुओं के साथ स्थित निर्बली शनि अथवा कम बिन्दु वाले भाव में शनि का गोचर अस्वस्थता, मृत्यु अथवा मृत्युभय, दूर स्थानों की यात्रा, अकारण अधिक श्रम, कारावास, सन्ताप, प्राकृतिक आपदाएं, परिवार एवं नाते–रिश्तेदारों से दूरी, बाधायें, दरिद्रता, धन–सम्पति की हानि आदि अशुभ फल देता है।

शनि द्वारा प्रदत्त रोग: वायु एवं कफ जनित बिमारियां, गठिया, पाचन शक्ति की निष्क्रियता, विगलांकता, यौनशक्ति का क्षीण होना, अनुवांशिक बिमारियां आदि।

सर्वाष्टकवर्ग में 30 से अधिक बिन्दु प्राप्त करने वाली राशि में जब कोई ग्रह गोचर करता है तो वह बहुत ही श्रेष्ठ फल देने की स्थिति में होता है। इसी प्रकार अपने भिन्नाष्टकवर्ग में 4 बिन्दुओं से अधिक बिन्दु प्राप्त करने वाली राशि में भी गोचर का ग्रह बहुत ही पवित्र एवं शुभ फल देता है।

किसी भी ग्रह का अपनी उच्च राशि अथवा स्वराशि में गोचर करने की अवधि बहुत ही शुभ फलदायक होती है, जबकि ग्रह का नीच राशि में गोचर विनाशकारी साबित होता है।

उदाहरणतः शनि 17 अप्रेल 1998 को अपनी नीच राशि मेष में प्रवेश किया था तो इसके विनाशकारी परिणामों का अनुभव सारे विश्व ने किया था। चारों ओर आग, बाढ, भूकम्प आदि ने हलचल मचा दी थी। बाढ ने पूरे बंग्ला देश को तबाह कर दिया। दक्षिण एशिया की अर्थव्यवस्था चरमरा गई थी। बंग्लादेश पूर्ण रूप से बाढ की चपेट में आ गया था। नाटो ने युगोस्लाविया में बहुत बडे पैमाने पर बमबारी की। कोसोवा से शरणार्थियों के स्थानांतरण ने हत्या, लूट, एवं आगजनी से भरे मध्य युग के इतिहास की याद ताजा कर दी थी। भारत में, जयललिता द्वारा समर्थन वापिस लेने से वाजपेयी सरकार के स्थायित्व को खतरा उत्पन्न हो गया था और 15 अप्रेल 1999 को उसने संसद में अपना बहुमत खो दिया। सरकार केवल एक मत से बहुमत सिद्ध करने में असफल रही और उसे त्यागपत्र देना पडा। भारत में उत्पन्न इस स्थिति का एक अन्य कारण जैसे कि स्वतत्रं भारत की जन्मपत्रिका के लग्नेश शुक्र का वृषभ/मिथुन राशि में गोचर का प्रभाव भी था।* स्वतंत्र भारत की जन्मपत्रिका में चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में मिथुन राशि में कोई भी बिन्दु नहीं है। चन्द्रमा बुद्धि का कारक है और द्वितीय भाव परिवार को दर्शाता है।

नक्षत्रों के द्वारा गोचर की विवेचना:

नक्षत्रों को क्रमशः जन्म, सम्पत, विपत्त, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मित्र एवं अतिमित्र, इन नौ वर्गों में बांटा गया है। इस प्रकार बांटने पर सभी 27 नक्षत्र

* इस विषय में श्री एम. एस. मेहता ने भारतीय विद्या भवन से प्रकाशित हाने वाली पत्रिका जरनल आफ ऐस्टोलोजी के एक लेख में विस्तार से वर्णन किया है।

उपरोक्त वर्गो के अनुसार तीन भागों में बंटते हैं। किसी भी जन्मपत्रिका में इनकी गिनती जन्म नक्षत्र अर्थात जन्म के समय चन्द्रमा द्वारा गृहीत नक्षत्र से प्रारम्भ होती है। उदाहरणतः स्वर्गीय श्रीमति इन्दिरा गांधी की जन्मपत्रिका में चन्द्रमा मकर राशि के उत्तरषाढा नक्षत्र में था, अतः यह उनका जन्म नक्षत्र कहलायेगा और क्रमशः उपरोक्त वर्ग के अन्य नक्षत्रों की गणना इसी से प्रारम्भ होगी। जन्म नक्षत्र, जन्म नक्षत्र से दसवां नक्षत्र एवं उन्नीसवां नक्षत्र एक भाग में आते हैं। इन्हें क्रमशः जन्म नक्षत्र, अनुजन्म नक्षत्र एवं त्रिजन्म नक्षत्र कहते हैं।

ज्योतिषशास्त्र के श्रेष्ठ ग्रन्थों में से एक, फलदीपिका में मंत्रेश्वर ने ग्रहों के विभिन्न नक्षत्रों में गोचर के फलों का उल्लेख विस्तार से किया है। फलदीपिका के सिद्धान्त अन्य ग्रन्थों के सिद्धान्तों से अलग मत रखते हैं। फलदीपिका के मतानुसार किसी भी ग्रह का जन्म नक्षत्र से तृतीय, पंचम एवं सप्तम नक्षत्र अथवा इनके त्रिकोण के नक्षत्रों अर्थात जन्म नक्षत्र से बारहवें, इक्कीसवें, चौदहवें, तेईसवें, सोलहवें एवं पच्चीसवें नक्षत्र में गोचर, जीवन में दुर्भाग्य का कारण होता है।

तृतीय एवं इसके त्रिकोण के नक्षत्र **विपत् तारा**, पंचम एवं इसके त्रिकोण के नक्षत्र **प्रत्यरि तारा** और सप्तम एवं इसके त्रिकोण के नक्षत्र **वध तारा** कहलाते हैं। जब कोई शुभ ग्रह इन नक्षत्रों में गोचर करता है तो परिणाम शुभ नहीं होते हैं जबकि पापी एवं क्रूर ग्रह का इन नक्षत्रों में गोचर शुभ फलदायक होता है, विशेषकर तब अधिक श्रेष्ठ परिणाम मिलते हैं जब ये ग्रह अन्य अशुभ ग्रहों से युति करें अथवा दृष्ट हों अथवा ये स्वयं वक्री या अस्त हों।

ज्योतिषशास्त्र के विभिन्न शास्त्रीय ग्रन्थों के मतानुसार ग्रहों का अलग–अलग नक्षत्रों में गोचर का फल इस प्रकार से होता है:

सूर्य का जन्म नक्षत्र से प्रथम और 14वें से 23वें नक्षत्र पर गोचर अशुभ फलदायक होता है। अन्य नक्षत्रों में यह शुभ फलदायक होता है।

चन्द्रमा का जन्म नक्षत्र से प्रथम, 2रे, 16वें से 18वें नक्षत्र पर गोचर अशुभ फलदायक होता है। अन्य नक्षत्रों में यह शुभ फलदायक होता है।

मंगल का जन्म नक्षत्र से प्रथम से 8वें, 12वें से 15वें और 18वें से 21वें नक्षत्र पर गोचर अशुभ फलदायक होता है। अन्य नक्षत्रों में यह शुभ फलदायक होता है।

बुध, बृहस्पति और शुक्र का जन्म नक्षत्र से प्रथम से 3रे, 7वें से 12वें 18वें एवं 19वें नक्षत्र पर गोचर अशुभ फलदायक होता है। अन्य नक्षत्रों में यह शुभ फलदायक होता है।

शनि, राहू और केतु का जन्म नक्षत्र से प्रथम, 7वें, 9वें से 11वें, 26वें एवं 27वें नक्षत्र पर गोचर अशुभ फलदायक होता है। अन्य नक्षत्रों में यह शुभ फलदायक होता है।

ग्रहों का कक्ष्याओं में गोचरः

अष्टकवर्ग पद्धति द्वारा ग्रहों के गोचर का सूक्ष्म अध्ययन करने का यह एक अतिमहत्वपूर्ण विचार है। इसके महत्व को समझते हुए, इसकी विवेचना अलग अध्याय में विस्तार चर्चा की गई है।

विभिन्न लग्नों के लिए तात्कालिक शुभ एवं अशुभ ग्रहः

वृहत पराशर होराशास्त्र में महर्षि पराशर गोचर के संदर्भ में कहते हैं कि कोई ग्रह विशेष, किसी लग्न विशेष के लिए शुभ हो सकता है लेकिन किसी अन्य लग्न विशेष के लिए अशुभ भी हो सकता है। अतः किसी भी ग्रह के गोचर के परिणामों की विवेचना करते समय जन्मपत्रिका में उसके स्वामित्व का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। जन्मपत्रिका में स्वामित्व के आधार पर, ग्रहों के शुभाशुभ का निर्णय इस प्रकार होता हैः

1. लग्नेश चाहे नैसर्गिक शुभ ग्रह हो अथवा अशुभ, सदैव शुभ ही होता है। उदाहरण के लिए मेष एवं वृश्चिक लग्नों के लिए मंगल तथा मकर एवं कुम्भ लग्नों के लिए शनि, सदैव ही शुभ ग्रह होता है।
2. इसी प्रकार त्रिकोणेश भी सदैव शुभकारी होते हैं।
3. केन्द्र एवं त्रिकोण के स्वामी होने के कारण कर्क एवं सिंह लग्नों के लिए मंगल, वृषभ एवं तुला लग्न के लिए शनि और मकर एवं कुम्भ लग्न के लिए शुक्र योगकारक ग्रह होकर सदैव शुभफलकारी होते हैं।
4. केन्द्राधिपति दोष के कारण केन्द्र के स्वामी होने पर अशुभ ग्रह अपनी अशुभता छोड देते हैं जबकि शुभ ग्रह अपनी शुभता छोडकर, सम हो जाते हैं और फलस्वरुप शुभ परिणाम नहीं देते हैं।

दृष्टियांः

गोचर की विवेचना में दृष्टियां भी बहुत महत्वपूर्ण होती है। गोचर के शुभ ग्रह पर शुभ ग्रह की दृष्टि, फल की शुभता में वृद्धिकारक होती है जबकि अशुभ ग्रह की दृष्टि, विनाशकारी होती है अर्थात ग्रह द्वारा प्रदत्त होने वाली शुभता में कमी करती है।

वक्री ग्रहः

सूर्य एवं चन्द्रमा को छोडकर शेष पांचों ग्रह, स्थितिवश सूर्य से दूरी के आधार पर वक्री होते हैं जबकि राहू–केतु सामान्यतः सदैव वक्री रहते हैं। कोई ग्रह, सूर्य से कितना दूर होने पर वक्री होता है, कब मार्गी होता है और कितने दिन वक्री रहता है, पाठकों की जानकारी के लिए इसको नीचे दी गई सारिणी संख्या 15.2 में दर्शाया गया है।

सारिणी संख्या 15.2

ग्रह	वक्री होने के समय सूर्य से दूरी	मार्गी होने के समय सूर्य से दूरी	वक्री / मार्गी होते समय स्तम्भन की अवधि	वक्री रहने की अवधि	ग्रह के पुनः वक्री होने की अवधि
शनि	251 अंश	109 अंश	5 दिन	140 दिन	378.1 दिन
बृहस्पति	245 अंश	115 अंश	5 दिन	120 दिन	398.9 दिन
मंगल	228 अंश	132 अंश	3 दिन	80 दिन	779.9 दिन
शुक्र	29 अंश	29 अंश	2 दिन	42 दिन	583.9 दिन
बुध	14 अंश से 20 अंश तक	17 अंश से 20 अंश तक	1 दिन	24 दिन	115.9 दिन

नैसर्गिक शुभ ग्रह का अपने अनुभव भाव में वक्री होकर गोचर करना उस भाव सम्बन्धित शुभ फलों में वृद्धिकारक होता है जबकि प्रतिकूल भाव का गोचर परिणामों में कम अशुभता लिए हुए होता है।

सामान्यतः नैसर्गिक अशुभ ग्रह का वक्री गोचर हानिप्रद होता है। अर्थात वक्री होने पर अशुभ ग्रह अधिक अशुभ हो जाता है। यदि अशुभ ग्रह अपने अनुकूल भावों अर्थात तृतीय, षष्टम एवं एकादश भावों में वक्री होकर गोचर करता है तो इसकी शुभ प्रभावों में कमी आती है। यदि अशुभ ग्रह शुभ भावों अर्थात केन्द्र अथवा त्रिकोण में वक्री होकर गोचर करता है तो इसके फल अधिक अशुभ हो जाते हैं।

दशानाथ का फलः

1. शुभ ग्रह की दशा में जब वह शुभ ग्रह विशेष अपने अनुकूल भावों में गोचर करता है तो अधिकतम शुभ एवं श्रेष्ठ परिणाम देता है और जब प्रतिकूल भावों में गोचर करता है तो उसके शुभ परिणाम कम हो जाते हैं।
2. अशुभ ग्रह की दशा में उस ग्रह विशेष का, अशुभ भावों में गोचर अत्याधिक अनिष्टकारी फल देता है जबकि शुभ भावों में गोचर इन परिणामों में कमी लाता है। अर्थात फल अधिक अशुभ नहीं होते हैं।

अस्त होने का प्रभावः

कोई भी ग्रह, चन्द्रमा से अनुकूल स्थानों में गोचर करते हुए अस्त हो जाता हैं अथवा राहू–केतु अक्ष में आने के कारण ग्रहण से पीड़ित हो जाता हैं तो शुभ फल नहीं देता हैं, जबकि ग्रह का प्रतिकूल स्थानों में गोचर करते हुए अस्त होना अथवा ग्रहण से पीड़ित होना, अशुभ फलदायक होता हैं।

ग्रह, भोगांशों में सूर्य से निकट होने के कारण अस्त होते हैं। सूर्य से ग्रहों की अस्त होने की निम्नतम दूरी, सभी ग्रहों के लिए समान नहीं है। विभिन्न ग्रह सूर्य से कितने अंश दूर होने पर अस्त होते है, वह इस प्रकार हैः

यदि चन्द्रमा, सूर्य से 12 अंशो के अन्दर स्थित है तो अस्त होता है।

यदि मंगल, सूर्य से 17 अंशो के अन्दर स्थित है तो अस्त होता है।

यदि बुध, सूर्य से 14 अंशो के अन्दर स्थित है तो अस्त होता है।

यदि बृहस्पति, सूर्य से 11 अंशो के अन्दर स्थित है तो अस्त होता है।

यदि शुक्र, सूर्य से 10 अंशो के अन्दर स्थित है तो अस्त होता है।

यदि शनि, सूर्य से 15 अंशो के अन्दर स्थित है तो अस्त होता है।

पापकर्त्तरी योग और शुभ कर्त्तरी योगः

जब गोचर करते हुए कोई ग्रह, दो पापी ग्रहों के बीच आ जाता है, तो वह ***पापकर्त्तरी योग*** में स्थित कहलाता है। यदि ग्रह अनुकूल भाव में गोचर करते हुए इस योग में शामिल होता है तो उसके द्वारा प्रदत्त शुभ फलों में कमी आती है और यदि प्रतिकूल भावों में गोचर करते हुए इस योग में शामिल होता है तो इसके द्वारा प्रदत्त अशुभ फलों की वृद्धि हो जाती है। जबकि किसी भी ग्रह का ***शुभकर्त्तरी योग**** में स्थित होना विपरीत परिणाम अर्थात शुभ फलदायक होता है।

1. किसी भी ग्रह के गोचर की शुभाशुभ स्थिति का आंकलन करते समय उस ग्रह विशेष से अन्य ग्रहों की स्थितियों को भी देखकर ही विवेचना करनी चाहिए। किसी भी ग्रह विशेष से चतुर्थ, अष्टम एवं द्वादश भावों में शुभ ग्रहों का होना अच्छी स्थिति होती है, जबकि इन भावों में पापी अथवा अशुभ ग्रहों की स्थिति प्रतिकूल फल देने वाली होती हैं। ये नियम, पराशर द्वारा दशा/अन्तर्दशा के निर्णय के विषय में कहे गए सिद्धान्तों के समान ही हैं।

2. गोचर में सूर्य एवं मंगल प्रथम द्रेष्कोण में, बृहस्पति एवं शुक्र द्वितीय द्रेष्कोण में और चन्द्रमा एवं शनि तृतीय द्रेष्कोण में स्थित होने पर अपना शुभाशुभ फल देते हैं जबकि बुध एवं राहु किसी राशि में अपनी स्थिति की पूरी अवधि में अपना प्रभाव दिखाते हैं। अढाई साल के परिणामों का निर्णय शनि से, एक साल के परिणामों का निर्णय बृहस्पति से, मासिक परिणामों का निर्णय अन्य आन्तरिक ग्रहों से और दैनिक परिणामों का निर्णय चन्द्रमा से करना चाहिए।

3. जिस ग्रह की अन्तर्दशा चल रही हो वह ग्रह जब अपनी नीच राशि अथवा भाव में गोचर करता है तो दरिद्रता एवं अन्य अशुभ फल देता है। इसी प्रकार अन्तर्दशानाथ का अपनी उच्च राशि अथवा भाव में गोचर शुभ फलदायक होता है।

4. हिन्दु ज्योतिषशास्त्र के सिद्धान्तों का सम्मानित प्राचीन ग्रन्थ, फलदीपिका इस सिद्धान्त का प्रतिपादन करती है कि गोचर के परिणामों का आंकलन करते समय जन्मपत्रिका में स्थित प्रत्येक ग्रह के भाव को लग्न मानकर, इसके अनुसार ही विभिन्न भावों के परिणामों का आंकलन करना चाहिए। इस नियम को उदाहरण से समझते हैं:

---

* जब ग्रह दो शुभ ग्रहों के बीच स्थित होता है तो ग्रह की यह स्थिति शुभकर्त्तरी योग बनाता है।

उदाहरणतः जन्मपत्रिका में मंगल, वृषभ राशि में स्थित है तो वृषभ राशि को लग्न भाव मानकर गोचर के ग्रहों का विचार करेंगे। यदि गोचर का मंगल, वृषभ से सप्तम भाव की राशि अर्थात वृश्चिक में गोचर कर रहा हो और मंगल के भिन्नाष्टक वर्ग में वृश्चिक राशि में कोई बिन्दु नहीं हैं तो यह मंगल विवाह सम्बन्धित समस्यायें पैदा करेगा। इसी प्रकार यदि कन्या राशि जो कि वृषभ से पंचम भाव की राशि है, उसमें 6 बिन्दु हैं तो मंगल का कन्या राशि में गोचर, पंचम भाव के कारकत्तवों जैसे कि शिक्षा, सन्तान, प्रेम सम्बन्ध आदि के सम्बन्ध में बहुत ही श्रेष्ठ एवं उत्तम फल देगा।

गोचर के परिणामों के फलित का समय निर्धारणः

फलदीपिका के मतानुसार कोई भी ग्रह गोचरवश जब जन्मपत्रिका में अपने भोगांशों के समान भोगांशों को पार करेगा तो अपना शुभाशुभ फल देगा। उदाहरणतः किसी जन्मपत्रिका में बृहस्पति मेष राशि में 15 अंशों में स्थित है और अपने भिन्नाष्टकवर्ग में 8 बिन्दु प्राप्त करने वाली वृश्चिक राशि में गोचर कर रहा है तो इस भाव का सबसे शुभ फल तब प्राप्त होगा जब बृहस्पति 15 अंशो पर पहुंचेगा।

यदि पापी/क्रूर ग्रह, स्वगृही हो तो उस भाव विशेष का प्रभाव बढ जाता है। यदि कोई ग्रह नीच राशि अथवा शत्रु राशि में स्थित है तो उस भाव विशेष की हानि करता है।

यदि शुभ ग्रह दुस्थान अर्थात तृतीय, षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भावों के स्वामी होते हैं तो ये चाहे अपनी उच्च राशि में ही क्यों न हों, जिस किसी भी भाव में स्थित होते हैं, उस भाव की हानि करते हैं । इसके विपरीत अशुभ ग्रह, शुभ भावों के स्वामी होने पर भी, उच्च राशि के होकर जिस भाव में स्थित होते हैं उस भाव के शुभ फलों में वृद्धि करते हैं।

अध्याय 16

ग्रहों का कक्ष्या में गोचर

अष्टकवर्ग का सामान्य अर्थ होता है आठ वर्ग। लेकिन यहां अष्टक का भावार्थ आठ तो है लेकिन वर्ग शब्द का अर्थ विशेष है जो आठ प्रकार की उन ऊर्जाओं को इंगित करता है जिन्हे सूर्यादि सात ग्रह एवं आठवां लग्न, उत्सर्जित करते हैं। किसी भी राशि अथवा भाव के साथ–साथ ग्रहों पर पड़ने वाली इन आठों प्रकार की ऊर्जाओं के अध्ययन के लिए प्रत्येक राशि के 30 अंशों को 3 45′ के आठ बराबर भागों में बांटा गया है जिन्हे कक्ष्यायें कहते हैं। अतः 3 45′ का एक भाग एक कक्ष्या कहलाता है। प्रत्येक कक्ष्या का अपना एक निश्चित स्वामी होता है जो सभी राशियों में समान होता है। प्रत्येक कक्ष्या का विस्तार एवं उसका स्वामी इस प्रकार से हैं:

कक्ष्या क्रम	राशि में कक्ष्या का विस्तार	कक्ष्या का स्वामी	ग्रह की एक कक्ष्या में रहने की अवधि
1.	00 अंश 00 मिनट से 03 अंश 45 मिनट तक	शनि	112 दिन
2.	03 अंश 45 मिनट से 07 अंश 30 मिनट तक	बृहस्पति	45 दिन
3.	07 अंश 30 मिनट से 11 अंश 15 मिनट तक	मंगल	7 दिन
4.	11 अंश 15 मिनट से 15 अंश 00 मिनट तक	सूर्य	3.8 दिन
5.	15 अंश 00 मिनट से 18 अंश 45 मिनट तक	शुक्र	2.3 दिन
6.	18 अंश 45 मिनट से 22 अंश 30 मिनट तक	बुध	22 घण्टे
7.	22 अंश 30 मिनट से 26 अंश 15 मिनट तक	चन्द्रमा	6.9 घण्टे
8.	26 अंश 15 मिनट से 30 अंश 00 मिनट तक	लग्न	

स्वामियों के उपरोक्त क्रम से दो चीजें स्पष्ट होती हैं। प्रथम यह ि कक्ष्याओं का स्वामित्व पृथ्वी से ग्रहों की दूरी के आधार पर निश्चित किया गर है और दूसरी यह कि ग्रहों को सौरमण्डल में उनकी भ्रमण करने की गति व

आधार पर कक्ष्याओं का स्वामित्व दिया गया है।

इस सारिणी से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि कोई ग्रह किसी भी राशि में किसी भी कक्ष्या में कितने दिन तक गोचर करता है।

कोई भी ग्रह जब किसी भी राशि में प्रवेश करता है तो सर्वप्रथम वह शनि की कक्ष्या में प्रवेश करता है, उसके पश्चात बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध, चन्द्रमा और सबसे अन्त में लग्न की कक्ष्या में प्रवेश करके राशि को पार कर देता है। पंचांग अथवा ग्रह सारिणी में ग्रहों का भोगांश दिया हुआ होता है अतः भोगांशों के आधार पर उसकी कक्ष्या एवं कक्ष्या के स्वामी को आसानी से जाना जा सकता है।

जब कोई ग्रह किसी ऐसी राशि में गोचर करता है जिसके स्वामी ने उसमें शुभ बिन्दु का अंशदान दिया होता है तो उसके द्वारा दिया गया परिणाम शुभ होता है चाहे सामान्य गोचर के नियमानुसार वह ग्रह शुभ फल देने वाला हो अथवा अशुभ फल देने वाला हो। किसी ग्रह ने बिन्दु प्रदत्त किया है अथवा नहीं इसको प्रस्थारक वर्ग से देखा जा सकता है। प्रस्थारक वर्ग को अध्याय 2 में स्वर्गीय इन्दिरा गांधी की जन्मपत्रिका को उदाहरणस्वरूप लेकर विस्तार से समझाया गया है।

उपरोक्त सिद्धान्त को इसी उदाहरण से समझते हैं। बृहस्पति के प्रस्थारक वर्ग, सारिणी संख्या 2.5 का अवलोकन करें। बृहस्पति के प्रस्थारक वर्ग से स्पष्ट है कि मेष राशि में शुक्र, बुध एवं लग्न द्वारा प्रदत्त कुल 3 बिन्दु हैं। अतः कोई भी ग्रह जब इन ग्रहों की कक्ष्याओं में अर्थात 15 00′ से 22 30′ एवं 26 15′ से 30 00′ तक गोचर करेगा तो वह शुभ फल प्रदान करेगा क्योंकि इन कक्ष्याओं में इनके स्वामियों ने बिन्दु प्रदत्त किये हैं। इसी प्रकार वृषभ राशि में कुल 6 बिन्दु हैं जिन्हे बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, चन्द्रमा एवं लग्न ने प्रदत्त किया है। अतः जब कोई भी ग्रह बिन्दुओं की इन कक्ष्याओं में गोचर करेगा तो शुभ फल प्रदान करेगा लेकिन ग्रहों का अन्य कक्ष्याओं में गोचर, गोचर के सामान्य नियमानुसार शुभाशुभ फल देगा।

कक्ष्या में गोचर की व्याख्या के नियमः

1. कोई ग्रह जब किसी ऐसी कक्ष्या में गोचर करता है जिस कक्ष्या के स्वामी ने उसमें बिन्दु प्रदत्त किया है तो गोचर का वह ग्रह शुभ परिणाम देता है।

इसके साथ–साथ यदि इस कक्ष्या में एक साथ कई ग्रह गोचर करते हैं तो श्रेष्ठ एवं वृद्धक परिणाम मिलना निश्चित होता है।

2. जब कोई ग्रह किसी ऐसी कक्ष्या में गोचर करता है जिसमें कक्ष्या का स्वामी बिन्दु प्रदत्त नहीं करता है तो वह अशुभ परिणाम देने के लिए बाध्य होता है अथवा कोई भी अनुकूल परिणाम नहीं देता है।

3. ग्रह का ऐसी राशि में गोचर, जिसमें यह बिन्दु प्राप्त करता है तो यह धनदायक होता है।

4. कोई भी ग्रह जन्मपत्रिका में अपने स्वामित्व के अनुसार अपने कारकत्वों और कक्ष्या के स्वामी जिसने बिन्दु प्रदत्त किया होता है, उसके कारकत्वों के अनुसार फल देता है।

5. यदि गोचरस ग्रह एवं कक्ष्या का स्वामी मित्र होते हैं तो परिणाम अधिक शुभ होते हैं लेकिन यदि शत्रु होते हैं तो परिणाम इतने अच्छे नहीं होते हैं।

6. अष्टकवर्ग में उच्च अथवा नीच के बिन्दु नहीं होते हैं अपितु यह एक राशि में प्राप्त हुए बिन्दु होते हैं। अतः गोचर का विचार करते समय, किसी भी भाव विशेष में स्थित अथवा उससे सम्बन्धित सभी ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्गों का भी विचार करना चाहिए।

7. यदि दशा/अन्तर्दशा का स्वामी ऐसी कक्ष्या में गोचर करता है जिसके स्वामी ने बिन्दु प्रदत्त किये हों तो वह समय विशेष शुभ फल प्राप्ति का समय होता है। यदि इस कक्ष्या का स्वामी दशा/अन्तर्दशा स्वामी का मित्र होता है तो परिणाम अधिक श्रेष्ठता लिए हुए होते हैं।

अध्याय 17

इन्दु लग्न और आर्थिक सम्पन्नता

ज्योतिषशास्त्र के प्राचीन ग्रन्थों में बार–बार *इन्दु लग्न* अथवा *धन लग्न* शब्द का प्रयोग मिलता है। वृहत पराशर होरा शास्त्र में इसको *विशेष चन्द्र योग* के नाम से कहा गया है। इन्दु, चन्द्रमा का पर्यायवाची नाम है अर्थात इन्दु का दूसरा अर्थ चन्द्रमा भी होता है और इस विशेष लग्न का प्रयोग जातक के ऐश्वर्य एवं धन–सम्पन्नता के स्तर का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है। यद्यपि अनुभव में यह आया है कि इस लग्न का प्रयोग जीवन की शुभ घटनाओं और धन–सम्पति की प्राप्ति आदि के लिए भी किया जा सकता है। साधारण शब्दों में यह कहा जा सकता है कि लग्न, सूर्य लग्न एवं चन्द्र लग्न के अतिरिक्त, इन्दु लग्न एक ऐसा लग्न है जो जातक के ऐश्वर्य एवं धन–सम्पन्नता के साथ–साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के विषय में चमत्कारी जानकारियां देता है।

इन्दु लग्न की गणनाः

इन्दु लग्न की गणना के लिए, राहू–केतु के अतिरिक्त सभी सातों ग्रहों को निम्नलिखित कला/इकाई दी गई हैं:

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
कलाओं की संख्या	30	16	6	8	10	12	1

छाया ग्रह होने के कारण राहू–केतु को इस गणना में भी शामिल नहीं किया जाता है।

1. सर्वप्रथम चन्द्रमा से नवमेश और लग्न से नवमेश की कलाओं का योग करें।
2. चूंकि जन्मपत्रिका में केवल 12 भाव ही होते हैं, अतः यदि यह योग 12 से अधिक है तो इसमें से 12 के गुणक को इस प्रकार से कम करें कि शेष संख्या 12 अथवा 12 से कम रह जाए। लेकिन किसी ही स्थिति में यह 0

नहीं होती है। यदि 12 के गुणक घटाने पर 0 शेष बचता है तो 0 के स्थान पर 12 को लिया जाता है।

3. यदि योगफल 12 से कम है तो उपरोक्त प्रक्रिया करने की आवश्यकता नहीं है।

4. इस प्रकार प्राप्त संख्या के बराबर, जन्मपत्रिका में चन्द्रमा द्वारा गृहीत भाव से आगे के भावों को गिनें।* इस प्रकार गिनने पर जो भाव आता है, वह जन्मपत्रिका का ***इन्दु लग्न*** कहलाता है।

आइये, इन नियमों को उदाहरणों द्वारा समझते हैं।

उदाहरण जन्मपत्रिका संख्या 1

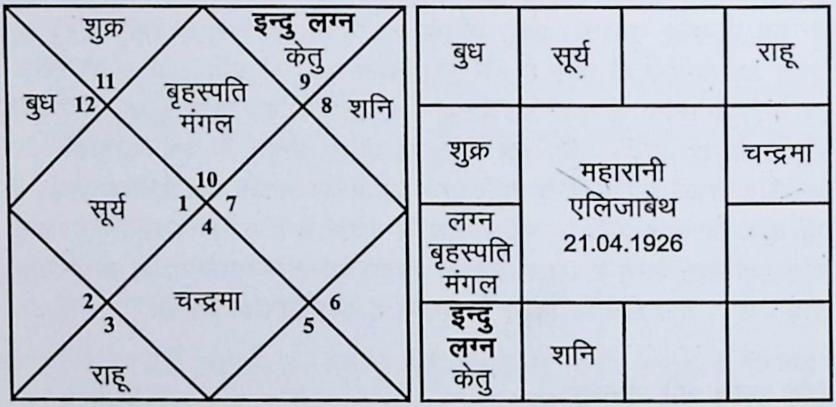

1. महारानी एलिजाबेथ की उपरोक्त जन्मपत्रिका में लग्न से नवम भाव का स्वामी बुध है जिसके पास 8 कलायें हैं और चन्द्रमा से नवम भाव का स्वामी बृहस्पति है जिसके पास 10 कलायें हैं। इन 8 एवं 10 कलाओं को जोड़ने पर योग 18 आता है।

2. चूंकि प्राप्तांक 12 से अधिक है, अतः इसको 12 से भाग करने पर शेष 6 बचता है।

3. जन्मपत्रिका में चन्द्रमा, कर्क राशिगत होकर सप्तम भाव में स्थित है। यहां से 6 भाव आगे गिनने पर धनु राशि द्वारा गृहीत द्वादश भाव आता है, जो इस जन्मपत्रिका का इन्दु लग्न बनता है।

इन्दु लग्न की गणना को पुनः एक अन्य जन्मपत्रिका द्वारा समझते हैं:

* चन्द्रमा द्वारा गृहीत भाव से गिनने के कारण ही यह इन्दु लग्न कहलाता है।

कुछ ज्योतिषाचार्य इन्दु लग्न की गणना करने के लिए जैमिनी पद्धति* एवं जैमिनी दृष्टियों** का प्रयोग करते हैं। इस पद्धति में ग्रहों की कलायें तो यही होती हैं लेकिन सम एवं विषम राशियों से नवम भाव की गणना की विधि अलग होती है। यदि लग्न अथवा चन्द्रमा विषम राशि में हों तो गणना सीधी होती है और यदि सम राशि में हो तो गणना विपरीत दिशा में होती है। इन्दु लग्न पर ग्रहों की दृष्टियों के प्रभाव की विवेचना भी पराशरी दृष्टि के स्थान पर जैमिनी दृष्टियों से की जाती है। इस पद्धति के अनुसार जितने अधिक ग्रह इन्दु लग्न को देखते हैं, ऐश्वर्य एवं धन–दौलत की दृष्टि से स्थिति उतनी ही शुभ मानी जाती है।

अब उपरोक्त जन्मपत्रिकाओं में ही ***जैमिनी पद्धति द्वारा इन्दु लग्न*** निकाल कर इसके नियमों को समझते हैं।

उदाहरण ***जन्मपत्रिका*** में लग्न में सम राशि है, अतः नवम भाव की गणना लग्न से विपरीत दिशा में होगी। इस प्रकार गिनने से लग्न से नवम भाव में वृषभ राशि आती है जिसका स्वामी शुक्र होता है और शुक्र के पास 12 कला होती हैं। इस जन्मपत्रिका में चन्द्रमा भी सम राशि में है अतः चन्द्रमा से नवम भाव की गणना भी विपरीत दिशा में होगी। इस प्रकार गिनने से चन्द्रमा से नवम भाव में वृश्चिक राशि आती है जिसका स्वामी मंगल होता है और मंगल के पास 6 कला होती हैं। इन दोनों ग्रहों की कलाओं का योग 18 आता है, जिसमें से 12 घटाने पर शेषफल 6 बचता है।चूंकि चन्द्रमा सम राशि है अतः चन्द्रमा से 6 भाव आगे विपरीत दिशा में ही गिने जाएंगे। इस प्रकार गिनने से चन्द्रमा से षष्टम भाव, लग्न से द्वितीय भाव में आता है जहां कुम्भ राशि है। जैमिनी पद्धति के अनुसार इस जन्मपत्रिका में यह भाव इन्दु लग्न बनता है।

कुम्भ राशि स्थिर राशि है जो उच्च के सूर्य द्वारा गृहीत मेष राशि और चन्द्रमा द्वारा गृहीत राशि कर्क से दृष्ट है। यह तुला राशि द्वारा भी दृष्ट है जिसका स्वामी शुक्र ही इसमें स्थित है लेकिन निकतम चर राशि होने के कारण मकर राशि इसको दृष्ट नहीं करती है। इस प्रकार इन्दु लग्न पर दो बली ग्रहों की दृष्टि है।

---

* जैमिनी पद्धति जन्मपत्रिका विशलेषण की एक अलग लेकिन अद्भुत पद्धति है जिसमें राशियों को उनके चर, स्थिर एवं द्विस्वभाव के अनुसार विचारा जाता है।

** जैमिनी दृष्टि में चर राशि (1,4,7,10) अपनी निकटम स्थिर राशि को छोडकर अन्य स्थिर राशियों को दृष्ट करती है और इसी प्रकार स्थिर राशि (2,5,8,11) अपनी निकटम चर राशि को छोडकर अन्य चर राशियों को दृष्ट करती है। द्विस्वभाव राशि अन्य द्विस्वभाव राशियों (3,6,9,12) को ही दृष्ट करती है। इसी प्रकार इन राशियों में बैठे ग्रह भी राशियों के स्वभाव के अनुसार अन्य ग्रहों एवं राशियों को दृष्ट करते हैं।

इन्दु लग्न की व्याख्याः

अतुल्य धन–सम्पति के योगः

1. इन्दु लग्न का अधिकतम शुभ ग्रहों से युत अथवा दृष्ट होना समृद्धि के लिए एक अतिशुभ योग है। यह योग इन ग्रहों की दशा में प्रचुर मात्रा में धनदायक होता है। यद्यपि एक शुभ ग्रह की दृष्टि ही इस योग के उद्देश्य के लिए पर्याप्त है लेकिन इस योग में जितने अधिक ग्रह शामिल होते हैं, जीवन में उतना ही अधिक समय जातक को इसकी शुभता को भोगने के लिए मिलता है। यह योग ***कोटेश्वर योग*** के नाम से जाना जाता है।

2. इन्दु लग्न में उच्च के क्रूर ग्रहों (शनि, सूर्य एवं मंगल)* का स्थित होना भी कोटेश्वर योग बनाता है जो अन्त में प्रचुर मात्रा में धन–समृद्धि दायक होता है। यद्यपि किसी भी क्रूर अथवा अशुभ ग्रह का इन्दु लग्न के भाव में स्थित होना ही धनदायक होता है लेकिन इसकी मात्रा अधिक नहीं होती है।

3. इन्दु लग्न के भाव में स्थित एक भी शुभ ग्रह पर किसी भी अन्य ग्रह की दृष्टि, चाहे वह शुभ हो अथवा अशुभ, पर्याप्त मात्रा में धनदायक होती है।

4. इन्दु लग्न केवल अशुभ ग्रह/ग्रहों द्वारा गृहीत भी हो तो यह जातक को मध्य स्तर का धन देते हैं।

5. वह सभी ग्रह जो इन्दु लग्न के भाव में स्थित होते हैं अथवा इसको दृष्ट करते हैं, अपनी दशा में धन–सम्पति देते हैं।

6. जो ग्रह इन्दु लग्न से त्रिकोण अथवा केन्द्र में स्थित होते हैं वह ग्रह भी अपनी–अपनी दशा/अन्तर्दशा में धन–सम्पति देते हैं।

7. अनुभव में यह भी पाया गया है कि जब–जब गोचरवश बृहस्पति इस लग्न से केन्द्र में गोचर करता है तो जन्मपत्रिका के जातक को भू–सम्पति, धन एवं खुशियां देता है।

8. जो ग्रह इन्दु लग्न से तृतीय, षष्टम, अष्टम एवं द्वादश भावों में स्थित होते हैं वह अपनी दशा–अन्तर्दशा में धन–सम्पति का नाश करते हैं।

9. इन्दु लग्न पर नीच के अशुभ ग्रह की दृष्टि आर्थिक सम्पन्नता के लिए शुभ नहीं होती है। इसी तरह इन्दु लग्न के भाव को ग्रहविहीन होना अथवा

* सामान्यतः सूर्य, मंगल, शनि, राहू–केतु और कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा नैसर्गिक क्रूर ग्रहों की श्रेणी में आते हैं जबकि इनके साथ युत होने पर बुध भी क्रूर ग्रह बन जाता है।

किसी भी ग्रह द्वारा दृष्ट नहीं होना आर्थिक सम्पन्नता के लिए शुभ स्थिति नहीं होती है।

10. जन्मपत्रिका में आर्थिक सम्पन्नता के लिए इन्दु लग्न से विवेचना करते समय, इस लग्न से द्वितीय एवं एकादश भाव और भावेशों की स्थिति भी देखनी चाहिए। इनकी स्थिति, सम्पन्नता के स्तर का अनुमान लगाने में सहायक होती है।

11. इन्दु लग्न को प्रथम भाव मानने पर धन–समृद्धि के लिए, इसका द्वितीय, पंचम, नवम, एकादश एवं दशम भाव/भावेश का सम्बन्ध, धन योग बनाता है।

12. इन्दु लग्न के सभी संम्बन्धित भाव एवं भावेश के बल की आंकलन के लिए सर्वाष्टकवर्ग का उपयोग सार्थक सिद्ध होता है।

इन्दु लग्न के उपरोक्त फलों को उदाहरण जन्मपत्रिका से समझने का प्रयास करते हैं:

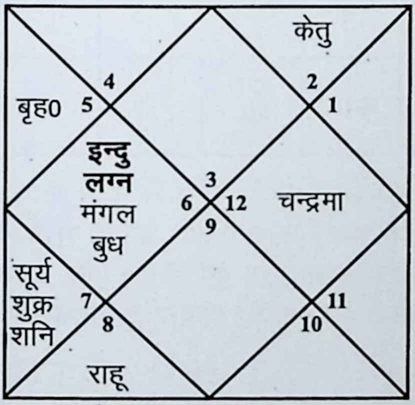

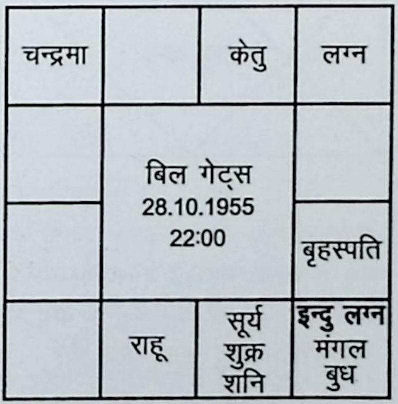

संसार के सबसे धनवान व्यक्तियों में से एक, बिल गेट्स की उपरोक्त जन्मपत्रिका मिथुन लग्न की है। लग्न से नवम भाव में कुम्भ राशि है जिसके स्वामी शनि के पास 1 कला है और चन्द्रमा से नवम भाव में वृश्चिक राशि है जिसके स्वामी मंगल के पास 6 कला हैं। इन दोनों की कलाओं का योग 7 आता है, जो स्वयं ही 12 से कम है अतः चन्द्रमा से सप्तम भाव, कन्या राशि में इन्दु लग्न आता है।

इन्दु लग्न के भाव में दो ग्रह, उच्च का लग्नेश एवं चतुर्थेश बुध और षष्टेश एवं एकादशेश मंगल के स्थित है, जिससे जन्मपत्रिका में कोटेश्वर योग बन रहा है। इन्दु लग्न से द्वितीय भाव बहुत बली है जिसमें तीन ग्रह, उच्च का शनि, स्वग्रही पंचमेश शुक्र एवं नीचभंग राजयोग बनाता हुआ सूर्य स्थित है। इन्दु लग्न से एकादश भाव यद्यपि रिक्त है लेकिन उच्च के शनि से दृष्ट है और इसका स्वामी चन्द्रमा सबसे अधिक बली केन्द्र, दशम में स्थित होकर पूर्ण दृष्टि से इन्दु लग्न को दृष्ट करता है।

के. के. बिडला

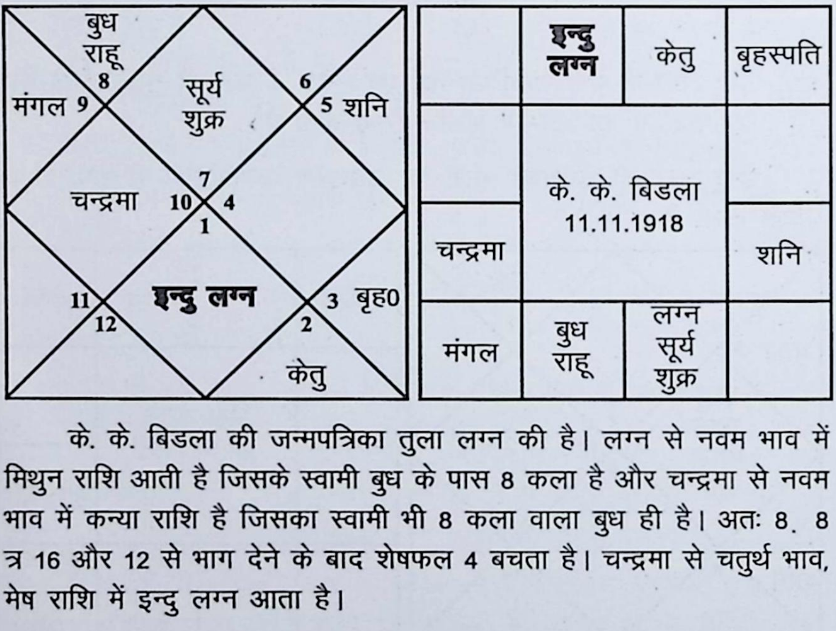

के. के. बिडला की जन्मपत्रिका तुला लग्न की है। लग्न से नवम भाव में मिथुन राशि आती है जिसके स्वामी बुध के पास 8 कला है और चन्द्रमा से नवम भाव में कन्या राशि है जिसका स्वामी भी 8 कला वाला बुध ही है। अतः 8. 8 त्र 16 और 12 से भाग देने के बाद शेषफल 4 बचता है। चन्द्रमा से चतुर्थ भाव, मेष राशि में इन्दु लग्न आता है।

इन्दु लग्न को लग्नेश शुक्र अपनी मूलत्रिकोण राशि से एवं नीचभंग राजयोग बनाता हुआ एकादशेश सूर्य दृष्ट करता है। इन्दु लग्न से चन्द्रमा केन्द्र में स्थित है और दो ग्रह, योगकारक शनि एवं मंगल इस लग्न से त्रिकोण में हैं। सर्वाष्टकवर्ग में धन–सम्पति से सम्बन्धित सभी भाव, लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, नवम, दशम एवं एकादश क्रमशः 30, 29, 30, 28, 27 एवं 35 बिन्दुओं के साथ बली हैं।

मुकेश अम्बानी

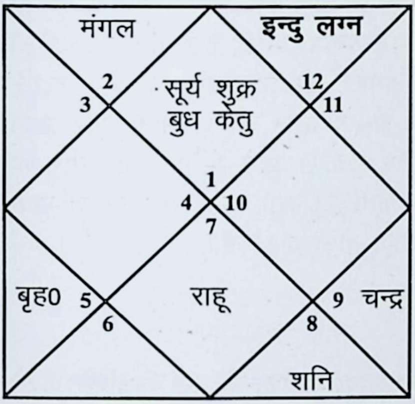

इन्दु लग्न	लग्न सूर्य शुक्र बुध केतु	मंगल	
	मुकेश अम्बानी		
			बृहस्पति
चन्द्रमा	शनि	राहू	

मुकेश अम्बानी की जन्मपत्रिका मेष लग्न की है। लग्न से नवमेश बृहस्पति के पास 10 कला और चन्द्रमा से नवमेश सूर्य के पास 30 कला हैं। इनका योग 40 आता है जिसको 12 से भाग देने पर शेषफल 4 बचता है। चन्द्रमा से चतुर्थ भाव, मीन राशि में इन्दु लग्न आता है।

इन्दु लग्न से द्वितीय भाव बहुत बली है जिसमें पंचमेश सूर्य उच्च राशि का होकर, द्वितीयेश शुक्र, तृतीयेश एवं षष्टेश बुध और केतु के साथ स्थित हैं। इन्दु लग्न का स्वामी बली त्रिकोण में स्थित होकर लग्नेश मंगल से दृष्ट है।

इन्दु लग्न 26	लग्न 22	26	34
44	मुकेश अम्बानी		26
34			26
25	22	20	32

सर्वाष्टक वर्ग में दशम एवं एकादश भाव क्रमशः 34, 35 बिन्दु लेकर बहुत बली हैं। यहां ध्यान देने वाली बात यह है कि एकादश भाव में दशम एवं द्वादश दोनों से ही अधिक बिन्दु हैं जो कि समृद्धि का बहुत ही श्रेष्ठ योग है।

विशेषः कई ज्योतिषाचार्य धन–सम्पति का अनुमान लगाने के लिए द्वितीय भाव एवं एकादश भाव से भी इन्दु लग्न की गणना करते हैं। इस तरह की गणना में लग्न से द्वितीय भाव और चन्द्रमा से द्वितीय भाव से नवमेशों अर्थात लग्न एवं चन्द्रमा के दशमेशों की कलाओं को योग करके उपरोक्त प्रकार से शोधन करके संख्या प्राप्त की जाती है और प्राप्त संख्या के समान चन्द्रमा के द्वितीय भाव से आगे के भावों को गिनकर इन्दु लग्न द्वितीय निश्चित किया जाता है। इसी प्रकार से एकादश भावों से गणना करके इन्दु लग्न एकादश प्राप्त करते हैं।

अष्टकवर्ग में इन्दु लग्न का प्रयोगः

सर्वाष्टक वर्ग का उपयोग सम्बन्धित भाव/भावेशों के बल निर्धारण करने के लिए प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है। सामान्यतः जन्मपत्रिका में लग्न को प्रथम भाव मानते हुए द्वितीय, पंचम, नवम, दशम एवं एकादश भाव/भावेशों के सम्बन्ध से बनने वाले धन योगों को देखा जाता है। जबकि इन्दु लग्न से धन–सम्पति एवं समृद्धि का निर्णय करने के लिए इससे द्वितीय एवं एकादश भाव/भावेशों की जन्मपत्रिका में स्थिति देखी जाती है। यदि सर्वाष्टक वर्ग में इन भावों में प्राप्त बिन्दुओं को भी इसमें शामिल करके देखेंगे तो यह धन–समृद्धि के स्तर की सही स्थित का ज्ञान करने में सहायक होता है।

1. यदि लग्न, नवम, दशम और एकादश भावों में 30 अथवा अधिक बिन्दु हों तो ऐसा जातक जन्म से लेकर मृत्यु तक, अर्थात जीवनभर धनवान रहता है।

2. यदि लग्न एवं चतुर्थ भाव में 33 बिन्दु हों और इनके स्वामी भाव परिवर्तन करके स्थित हों तो जातक धनवान होता है।

3. यदि दशम एवं द्वादश भावों की अपेक्षा एकादश भाव में अधिक बिन्दु हों तो यह धनवान होने के लिए शुभ योग है। इसके अतिरिक्त यदि लग्न में भी द्वादश भाव से अधिक बिन्दु हों तो जातक सभी भौतिक सुखों का आनन्द लेता है।

4. यदि लग्न, नवम, दशम एवं एकादश, सभी भावों में 25 से कम बिन्दु हों और पापी/क्रूर ग्रह त्रिकोण भावों (लग्न, पंचम एवं नवम) में स्थित हों तो ऐसा जातक भिखारी अर्थात धन से हीन होता है।

5. कुछ शास्त्रीय ग्रन्थों के अनुसार यदि लग्न, द्वितीय, चतुर्थ, नवम, दशम एवं एकादश भावों के बिन्दुओं का योग 164 से अधिक होता है तो ऐसा जातक धनवान होता है। इसी प्रकार यदि षष्टम, अष्टम एवं द्वादश भावों के बिन्दुओं का योग 76 से कम होता है तो ऐसे जातक के व्यय से अधिक आय होती है।

   आज के समय में यह नियम अधिक सटीक नहीं लगता है। व्यवहारिक रुप से निरीक्षण करने में यह पाया गया है कि षष्टम भाव प्रतियोगिता के भाव के साथ–साथ किसी भी खोई चीज को पुनः प्राप्त करने का भाव भी है। इसी प्रकार अष्टम भाव काले धन* के साथ–साथ पैतृक सम्पति, लाटरी, स्वयं द्वारा अर्जित न किये जाने वाली आय अथवा शेयर बाजार से अचानक प्राप्त होने वाले लाभ आदि का भाव भी है और द्वादश भाव विदेशी कम्पनियों अथवा बहुराष्टीय कम्पनियों से प्राप्त होने वाले लाभ को भी दर्शाता है।

6. यदि द्वितीय भाव में द्वादश भाव की अपेक्षा अधिक बिन्दु होते हैं तो जातक अपने सुख या आनन्द के लिए बहुत ही कम धन का व्यय करता है। वह अपने धन को बैंक या अन्य सुरक्षित स्थानों में संभाल कर रखता है।

7. यदि द्वादश भाव में एकादश भाव से अधिक बिन्दु होते हैं तो इसके दो अर्थ होते हैं। प्रथम यह कि जातक का व्यय उसकी आय से अधिक है अर्थात वह ऋणादि लेता है, और दूसरा यह कि जातक की विदेशी स्त्रोतों या अन्य देश या देशों से भी आय है अथवा वह बहुराष्टीय कम्पनी में कार्यरत है।**

---

* अघोषित धन, काला धन कहलाता है।

** ऐसा जातक विदेश में जाकर भी धन अर्जित कर सकता है। ज्योतिष के नियमानुसार कोई भी जातक तभी विदेश जाता है जब उसकी जन्मपत्रिका में चतुर्थ भाव एवं भावेश पीड़ित होता है और द्वादश भाव/भावेश से स्थिति, दृष्टि अथवा युति द्वारा सम्बन्ध बनाता है।

अध्याय 18

अष्टकवर्ग एवं आयुर्दाय

ज्योतिषशास्त्र के प्राचीन शास्त्रीय ग्रन्थों में आयुर्दाय की गणना के लिए बहुत सारी पद्धतियों का वर्णन मिलता है। अष्टकवर्ग पद्धति उन पद्धतियों में से ही एक ऐसी पद्धति है जिसके सही निर्णय की देने की क्षमता की सभी शास्त्रों ने अनुशंसा की है। यद्यपि पराशर ने अपने ग्रन्थ वृहत पराशर होराशास्त्र में स्पष्ट कहा है कि आयु गणना के लिए सर्वश्रेष्ठ पद्धति अष्टकवर्ग पद्धति है लेकिन व्यवहारिक रूप में, केवल अष्टकवर्ग पद्धति द्वारा आयु की गणना करने पर सही परिणाम नहीं मिलते हैं। यदि इस पद्धति के साथ पराशरी विंशोत्तरी दशा एवं जैमिनी पद्धति के सिद्धान्तों का उपयोग किया जाये तो अवश्य ही सबसे अच्छे और सटीक परिणाम मिलते हैं।

यद्यपि अष्टकवर्ग पद्धति में भी गणना की कई विधियों का वर्णन मिलता है, लेकिन हम यहां सबसे अधिक प्रसिद्ध दो विधियों को उदाहरण सहित समझा रहे हैं।

विधि–1: नक्षत्रायु पद्धति–सर्वाष्टकवर्ग पर आधारित

नियमः सर्वप्रथम पूर्व के अध्यायों में वर्णित विधियों से जन्मपत्रिका का सर्वाष्टक वर्ग बनाकर शोध्य पिण्डों की गणना करें।

उदाहरणतः राजीव गांधी की जन्म पत्रिका का सर्वाष्टकवर्ग इस प्रकार हैः

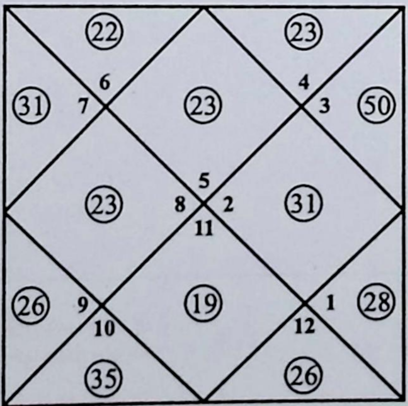

26	28	31	50
19	राजीव गान्धी 14 / 15–08–47 (सर्वाष्टकवर्ग)		23
35			लग्न 23
26	23	31	22

सर्वाष्टकवर्ग का ग्रह पिण्ड

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	योग
पिण्ड	45	45	24	45	90	63	0	312

सर्वाष्टकवर्ग का राशि पिण्ड

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल योग
पिण्ड	14	0	0	36	90	15	35	16	0	20	44	0	270

अब ग्रह पिण्ड और राशि पिण्ड का कुल योग अर्थात सर्वाष्टकवर्ग का शोध्य पिण्ड निकालते हैं। **शोध्य पिण्ड = 312 + 270 = 582**

नियमः (अ) शोध्य पिण्ड को 7 से गुणा करके प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग करें। प्राप्त भागफल, जातक की आयु को नक्षत्र वर्ष में दर्शाता है।

(ब) नक्षत्र आयु के वर्षों को सौरवर्षों में परिवर्तन करने के लिए, 324 से गुणा और प्राप्त गुणनफल को 365.25 से पुनः भाग करना पड़ता है। यदि भागफल 100 से अधिक होता है तो उसमें से 100 घटाना पड़ता है जबकि अन्य स्थिति में अर्थात यदि भागफल 100 से कम है तो प्राप्त भागफल ही जातक की आयु होती है।

उदाहरणतः राजीव गांधी की जन्मपत्रिका के शोध्य पिण्ड को इस प्रकार संशोधित करेंगेः

प्राप्त शोध्यपिण्ड = 582

582 x 7 = 4074 -:- 7 = 150.8 नक्षत्र वर्ष

(150.8 x 324) -:- 365.25 = 134 सौरवर्ष (लगभग)

चूंकि भागफल 100 से अधिक आता है अतः भागफल 134 से 100 को घटायेंगे। इस प्रकार घटाने पर हमारे पास 34 शेष बचता है जो आयु के वर्षों को बताती है।

विधि–2: भिन्नाष्टकवर्ग पर आधारित

इस विधि में पिछले अध्यायों में वर्णित नियमों के अनुसार प्रत्येक ग्रह का शोध्य पिण्ड ज्ञात करना होता है। इसके लिए निम्नलिखित कार्य करना पड़ेगाः

1. सूर्यादि सभी सातों ग्रहों के भिन्नाष्टकवर्ग बनाइये।

2. भिन्नाष्टकवर्गों में त्रिकोण एवं एकाधिपत्य शोधन करें।
3. ग्रह पिण्ड एवं राशि पिण्ड प्राप्त करके दोनों को जोड़कर प्रत्येक ग्रह का शोध्य पिण्ड ज्ञात करें।

इस प्रकार की क्रिया करने पर प्रत्येक ग्रह के निम्नलिखित शोध्य पिण्ड प्राप्त करते हैं:

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
शोध्य पिण्ड	145	170	152	192	160	122	256

प्रत्येक ग्रह द्वारा प्रदत्त आयु

नियमः प्रत्येक ग्रह के शोध्य पिण्ड को 7 से गुणा करें और प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग देकर भागफल प्राप्त करें। चूंकि शंभू होराप्रकाश में यह कहा गया है कि कोई भी ग्रह 27 वर्ष से अधिक आयु प्रदित नहीं कर सकता है, अतः यदि प्राप्त भागफल 27 से अधिक हो तो उसमें से 27 घटाकर शेष प्राप्त करें। शेषफल भी 27 से अधिक होने की स्थिति में पुनः 27 तब तक घटाते हैं, जब तक भागफल 27 से कम नहीं हो जाता है। इस प्रकार प्राप्त संख्या ग्रह द्वारा प्रदित लगभग आयु के वर्षों को इंगित करती है।

राजीव गांधी की उदाहरण जन्म पत्रिका में प्रत्येक ग्रह द्वारा प्रदत्त आयु की गणना इस प्रकार से है:

ग्रह	शोध्य पिण्ड	गुणा	गुणनफल	भाग	भागफल	घटा	प्रदित आयु
सूर्य	145	7	1015	27	37	27	10
चन्द्रमा	170	7	1190	27	44	27	17
मंगल	152	7	1064	27	39	27	12
बुध	192	7	1344	27	49	27	22
बृहस्पति	160	7	1120	27	41	27	14
शुक्र	122	7	854	27	31	27	04
शनि	256	7	1792	27	66	27	12*

* शनि द्वारा प्रदत्त आयु गणना में भागफल की संख्या 66 में से 27 घटाने के बाद भी शेष 39 बचता है जो 27 से अधिक है। अतः 39 में से पुनः 27 को घटायेंगे।

आयु हरण अर्थात शोधन के नियमः

प्रत्येक ग्रह द्वारा प्रदत्त आयु का, निम्नलिखित नियमों के अनुसार शोधन अर्थात हरण होता है।

नियम–1: वर्षों की संख्या को आधा करनाः

(अ) यदि किसी भी राशि में एक से अधिक ग्रह स्थित हों तो उन सभी ग्रहों द्वारा प्रदत्त आयु के वर्षों की संख्या आधी हो जाती है।
राजीव गांधी की उदाहरण जन्मपत्रिका में पांच ग्रह लग्न में स्थित हैं अतः सभी पांचों ग्रहों पर यह हरण लागू होगा और इनके द्वारा प्रदत्त आयु आधी हो जाएगी।

(ब) यदि कोई ग्रह नीच राशि में स्थित हो अथवा अस्त हो तो उस ग्रह द्वारा प्रदत्त आयु के वर्षों की संख्या भी आधी हो जाती है।

नियम–2: वर्षों की संख्या को एक तिहाई करनाः

(क) यदि कोई ग्रह अपने नैसर्गिक शत्रु ग्रह की राशि में स्थित हो

(ख) यदि कोई ग्रह ग्रहयुद्ध में हारा हुआ हो

(ग) यदि सूर्य और चन्द्रमा राहू–केतु अक्ष पर स्थित हों अर्थात ग्रहण की स्थिति हो तो सम्बन्धित ग्रह द्वारा प्रदत्त आयु के वर्षों की संख्या 1/3 कम हो जाती है।

नियम–3: पत्रिका के प्रकाशित भाव में स्थित होने पर शोधनः

जन्म पत्रिका के प्रकाशित भाग में स्थित ग्रहों पर यह शोधन लागू होता है। जन्मपत्रिका के प्रत्येक भाव की स्थिति एवं ग्रह की प्रकृति के अनुसार यह शोधन आगे निम्नलिखित तालिका के अनुसार होता हैः

क्रम संख्या	ग्रह द्वारा गृहीत भाव	यदि पापी ग्रह हो तो कम होने वाले वर्ष	यदि शुभ ग्रह हों तो कम होने वाले वर्ष
1	द्वादश भाव	पूरे वर्ष	1/2
2	एकादश भाव	1/2	1/4
3	दशम भाव	1/3	1/6
4	नवम भाव	1/4	1/8
5	अष्टम भाव	1/5	1/10
6	सप्तम भाव	1/6	1/12

अतिमहत्वपूर्ण: यदि कोई भी ग्रह कई शोधनों का अधिकारी होता है तो ऐसी स्थिति में उस पर सभी शोधन नहीं लगते हैं, अपितु सबसे अधिक हरण साल मिले हो तो उसको लेना कम साल छोड़ देना करने वाला शोधन ही लागू होता है।

अब इन नियमों को उदाहरण जन्मपत्रिका में लगाकर समझते हैं।

ग्रह द्वारा प्रदत्त कुल आयु (वर्षों में)		1/2 हरण के बाद शेष आयु		1/3 हरण के बाद शेष आयु			प्रकाशित भाव में स्थिति के कारण हरण	कुल शेष आयु
		अ	ब	क	ख	ग		
सूर्य	10	5	–	–	–	–	–	5
चन्द्रमा	17	8.5	–	–	–	–	–	8.5
मंगल	12	–	–	8	–	–	–	8
बुध	22	11	–	–	–	–	–	11
बृहस्पति	14	7	7	–	–	–	–	7
शुक्र	04	2	–	2.66	–	–	–	2.66
शनि	12	–	–	–	–	–	6	6

शेष आयु का कुल योग = 48.16 अर्थात 48 साल एवं लगभग 2 महीने

इस प्रकार प्राप्त आयु जातक की नक्षत्रायु है,* जिसको पहले की तरह ही सौरवर्षों में परिवर्तित करना है जो इस प्रकार से होगा: (48 x 324) -:- 365.25 = 42.5 साल। हमारी गणना के अनुसार यह राजीव गांधी की कुल आयु आती है जबकि राजीव गांधी लगभग 47 साल तक जीवित रहे।

टिप्पणी: जैसा कि पहले कहा है कि इस पद्धति की गणना करने की विधि एकदम सटीक नहीं है और इसमें भी मतान्तर अधिक हैं तथा अलग–अलग विधियों से गणना करने पर जातक की आयु में अन्तर आता है। अधिकतर यह देखा गया है कि उपरोक्त गणना द्वारा प्राप्त आयु और यथार्थ में जातक द्वारा भोगी गई आयु में अन्तर होता है। किसी अष्टकवर्ग विशेषज्ञ का मानना है कि

* नक्षत्र आयु के वर्षों को सौरवर्षों में परिवर्तन करने के लिए, 324 से गुणा और प्राप्त गुणनफल को 365.25 से : भाग करना पड़ता है। यदि भागफल 100 से अधिक होता है तो उसमें से 100 घटाना पड़ता है जबकि अन्य स्थिति में अर्थात यदि भागफल 100 से कम है तो प्राप्त भागफल ही जातक की आयु होती है।

यदि जन्मपत्रिका में शनि बली हो तो सर्वाष्टकवर्ग की विधि का उपयोग करना चाहिए, किसी का कहना है कि यदि मंगल बली हो तो भिन्नाष्टकवर्ग की विधि का प्रयोग करना चाहिए, जबकि अन्य ज्योतिषाचार्य इसकी गणना की कुछ अलग ही विधि बताते हैं।

इसलिए अष्टकवर्ग की जिन विधियों की गणना यहां समझाई गई हैं, उन्हें बिना विचारे किसी भी जन्मपत्रिका में नहीं लगा सकते हैं। इस विषय पर निरन्तर शोध की आवश्यकता है और शोध ही सही विधि का निर्णय कर सकता है। यहां जो उदाहरण सहित गणना बताने का प्रयोजन केवल यह है कि पाठकगण अष्टकवर्ग गणना की विधियों और नियमों को समझकर, इसमें आगे शोध कर सकें। केवल शोध कार्य ही यह बता सकता है कि इस पद्धति में कहां त्रुटि है।

अध्याय 19

अष्टकवर्ग और दशा–अन्तर्दशा

अष्टकवर्ग पद्धति के अर्न्तगत, जिस दशा के विषय में यहां बताया जा रहा है वह अष्टकवर्ग दशा नहीं है अपितु पराशर द्वार अनुमोदित विंशोतरी दशा ही है, क्योंकि अष्टकवर्ग का मुख्य उदगम् स्थल पराशर होरा शास्त्र ही है।

दशानाथ की स्थितिः

1. किसी भी जन्मपत्रिका में दशा सम्बन्धित फलों की विवेचना करते समय सर्वप्रथम ज्योतिषशास्त्र के सामान्य नियमों को लगाकर ही दशा नाथ की स्थिति का अनुमान करना चाहिए। सामान्य नियमों के अनुसार यदि किसी भी जन्मपत्रिका में दशानाथ उच्च का हो, स्वग्रही हो, लग्नेश, पंचमेश अथवा नवमेश हो और युति–दृष्टि द्वारा शुभ ग्रहों से प्रभावित हो तो सामान्यतः जातक को शुभ परिणाम देता है। दशानाथ नैसर्गिक शुभ ग्रह होकर यदि केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो शुभ फलदायक होता है जबकि नैसर्गिक पापी अथवा क्रूर ग्रह होने पर तृतीय, षष्टम अथवा एकादश भावों में स्थित हो तोशुभ फलदायक होता है।

2. अपनी नीच राशि में स्थित ग्रह, अस्त ग्रह, षष्टेश, अष्टमेश अथवा द्वादशेश और षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भावों में स्थित ग्रह, अपनी दशा–अन्तर्दशा में सामान्यतः शुभ परिणाम नहीं देते हैं, अपितु अशुभता अवश्य उत्पन्न करते हैं।

3. शुभ ग्रह की युति अथवा दृष्टि द्वारा प्रभावित होने पर अशुभ ग्रहों की अशुभता में कमी आती है जबकि शुभ ग्रह, अशुभ ग्रह से युति अथवा दृष्टि से प्रभावित होने पर मिले–जुले फल देते हैं।

4. सामान्यतः लग्नेश, दशमेश और उच्च के ग्रह की दशा, जीवन की सबसे अच्छी दशायें होती हैं, यद्यपि इन दशाओं का फल भी, जन्मपत्रिका में दशानाथों की स्थिति पर ही निर्भर होता है।

5. यदि दशानाथ जन्मपत्रिका के शुभ एवं अशुभ, दोनों प्रकार के भावों का स्वामी है तो उसकी दशा में प्राप्त होने वाले शुभाशभ फलों को समझने के लिए यह देखना चाहिए कि उसकी मूलत्रिकोण राशि, जन्मपत्रिका के किस भाव की राशि है। यदि दशानाथ की मूलत्रिकोण राशि दुःस्थानों अर्थात तृतीय, षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भाव की राशि है तो फल अशुभता लिए हुए अधिक होते हैं, जबकि अन्य स्थिति में शुभ फल प्राप्त होते हैं। उदाहरणतः कन्या लग्न में शनि पंचमेश एवं षष्टेश होता है। चूंकि शनि की मूलत्रिकोण राशि कुम्भ, षष्टम भाव की राशि होती है, अतः शनि की दशा में जातक को अशुभ फल अधिक प्राप्त होते हैं। पंचमेश होने के कारण जहां शनि जातक को अच्छी शिक्षा देता है, लेकिन वहीं षष्टेश भी होने के कारण शिक्षा के स्तर को अधिक उंचाइयों तक पहुंचने की योग्यता नहीं देता है।

6. कोई भी दशानाथ जन्मपत्रिका में जिन–जिन भावों का स्वामी होता है एवं जिन–जिन भावों को दृष्ट करता है उन–उन भावों से सम्बन्धित फल देने के साथ ही साथ अपने कारकत्व के अनुसार भी फल देता है। उदाहरणतः मिथुन लग्न में बृहस्पति सप्तमेश होने के कारण सप्तम भाव के फल जैसे कि साझेदारी, विवाह आदि और दशमेश होने के कारण आजीविका एवं यश–कीर्ति तो देता ही है, लेकिन सन्तान, धन–सम्पति एवं ज्ञान का कारक होने के कारण इनसे सम्बन्धित फल भी देता है। चूंकि मिथुन लग्न के लिए दो केन्द्रों का स्वामी होने के कारण बृहस्पति केन्द्राधिपति दोष से सबसे अधिक पीड़ित होता है, अतः प्राप्त होने वाले फलों की श्रेष्ठता एवं गुणवता में इस दोष का प्रभाव भी विचारणीय होता है।

7. शुभफल प्राप्ति के लिए दशानाथ से चतुर्थ, पंचम, अष्टम एवं नवम भाव में अशुभ ग्रह स्थित नहीं होने चाहिए और दशानाथ को स्वयं भी पापकत्ररी योग में नहीं होना चाहिए।

8. जो ग्रह उपचय स्थानों अर्थात तृतीय, षष्टम, दशम एवं एकादश भावों में स्थित होते हैं, वह अपनी दशा में धीरे–धीरे शुभ फल देते चले जाते हैं।

9. दशानाथ के शुभाशुभ भावों के स्वामित्व के निर्णय के लिए लग्न के साथ–साथ चन्द्रमा से भी विचार करना चाहिए। उदाहरणतः इन्दिरा गांधी की जन्मपत्रिका में बृहस्पति लग्न से षष्टम एवं नवम भाव का स्वामी है जबकि चन्द्रमा से तृतीय एवं द्वादश भाव का स्वामी है।

10. किसी भी ग्रह की दशा में प्राप्त होने वाले फलों के निर्णय करने में अष्टकवर्ग पद्धति बहुत अधिक सहायक होती है। यदि दशानाथ अपने द्वारा गृहीत राशि में 4 से अधिक बिन्दु प्राप्त करता है और साथ ही साथ सर्वाष्टकवर्ग में 28 अथवा अधिक बिन्दु प्राप्त करती है तो दशा की लगभग सारी अवधि शुभ फलदायक होती है।

11. इसी प्रकार दशानाथ जिस कक्ष्या में बैठा है, यदि उस कक्ष्या में उसका स्वामी बिन्दु प्रदत्त करता है तो भी दशा में प्राप्त होने वाले फल अनुकूल होते हैं।

अन्तर दशानाथः

इसी प्रकार से ही अन्तर दशानाथ की स्थिति को भी जांचना चाहिए। शुभ फल देने के लिए अन्तर दशानाथ को निम्नलिखित स्थितियों में नहीं होना चाहिएः

(i) दशानाथ से षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश भाव में

(ii) इसको अस्त अथवा नीच राशि का नहीं होना चाहिए।

अध्याय 20

मुहूर्त्त और अष्टकवर्ग

मुहूर्त्त वह समय विशेष होता है जो किसी कार्य विशेष के प्रारम्भ के लिए शुभ समय होता है। मुहूर्त्त का निर्णय करने के लिए ज्योतिषशास्त्र में कई सिद्धान्तों का वर्णन मिलता है जिनके अनुसार सभी ज्योतिषाचार्य मुहूर्त्त का निर्णय भी करते हैं, लेकिन यदि अन्य सिद्धान्तों के साथ–साथ अष्टकवर्ग पद्धति के सिद्धान्तों को भी इसमें शामिल किया जाता है तो परिणाम अधिक श्रेष्ठ प्राप्त होते हैं। इसके साथ–साथ आवास एवं कार्यालय के वास्तु का निश्चिय अष्टकवर्ग के आधार पर होता है तो यहां भी यह अतिश्रेष्ठ एवं वर्धक फलदायक होता है।

मुहूर्त्त और सूर्यः

1. शुमंगलकारी माह– जब सूर्य किसी ऐसी राशि में गोचर करता है जो राशि, सूर्य के अष्टकवर्ग में 5 अथवा अधिक बिन्दुओं के साथ होती है तो वह सौर माह विशेष निम्नलिखित शुभ कार्यों के लिए अच्छा होता हैः–
   (i) विवाह, धार्मिक एवं अन्य पवित्र धर्मार्त्थ कार्यों के लिए,
   (ii) दूर देश की यात्रा अथवा तीर्थ यात्रा के लिए और
   (iii) नये साहसिक कार्यो को प्रारम्भ के लिए।
2. सूर्य के भिन्नाष्टकवर्ग में जिस राशि में सबसे अधिक बिन्दु होते हैं, उस राशि द्वारा इंगित दिशा में शिव आदि देवी–देवताओं की स्थापना करनी चाहिए।

दिशा का ज्ञान करने का अन्य तरीका यह भी है कि दिशा विशेष को इंगित करनें वाली प्रत्येक राशि एवं उससे त्रिकोण की राशियों के बिन्दुओं का योग किया जाये। मेष, सिंह एवं धनु राशियाँ पूर्ब दिशा को, वृषभ, कन्या एवं मकर राशियाँ दक्षिण दिशा को, मिथुन, तुला एवं कुंम्भ राशियाँ पश्चिम दिशा को और कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशियाँ उत्तर दिशा को इंगित करती हैं। सूर्य के अष्टकवर्ग में जिस समूह की राशियों में प्राप्त बिन्दुओं का योग अधिक हो वह

दिशा सभी शुभ कार्यो के लिए, देवी–देवताओं की पूजा के लिए और शासन की सेवाओं के लिए चुननी चाहिए।

जातक को ऋण लेने अथवा दवाई खाने के लिए वह दिन चुनना चाहिए जिस दिन की उगती राशि में, जातक की जन्मपत्रिका के सर्वाष्टकवर्ग में कम बिन्दु हों और उससे अगली राशि में अधिक बिन्दु हों जिसके फलस्वरूप वह ऋण चुकाने अथवा शीघ्र स्वस्थ होने में समर्थ होता है।

शुभ कार्य करने के लिए दिन के भाग का चयनः

इस तरह से चयन करने के लिए दिनमान को तीन भागों में बांटा जाता है।

प्रथम भाग को जन्मपत्रिका में सूर्य द्वारा गृहीत भाव और उससे अगले तीन भाव अर्थात सूर्य से द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ भाव इंगित करते हैं।

दिन के दूसरे भाग को सूर्य द्वारा गृहीत भाव से पंचम, षष्टम, सप्तम एवं अष्टम भाव इंगित करते हैं।

दिन के तीसरे भाग को सूर्य द्वारा गृहीत भाव से नवम, दशम, एकादश एवं द्वादश भाव इंगित करते हैं।

सूर्य के अष्टकवर्ग में इन तीनों समूह में से जिस समूह के बिन्दुओं की संख्या अधिक होती है दिन का वह भाव उस जातक द्वारा शुभ कार्य प्रारम्भ करने के लिए अधिक शुभ होता है।

मंगल का अष्टकवर्ग और मुहूर्त्तः

रसोईघर की दिशाः मंगल के भिन्नाष्टक वर्ग में प्रत्येक दिशा की राशि और उससे त्रिकोण की राशियों का योग करें। इस प्रकार चारों दिशाओं को इंगित करने वाली तीन–तीन राशियों के चार समूह बन जाते हैं। जिस समूह की राशियों के बिन्दुओं का योग अधिकतम हो, उस समूह द्वारा इंगित दिशा में जातक का रसोईघर स्थित हो तो इसमें पकाया जाने वाला भोजन जातक के लिए श्रेष्ठ होता है जो उसको बिमारियों से दूर रखते हुए, उसके आयुर्दाय के लिए भी शुभकारी होता है।

भू–सम्पति लेने का समयः जब मंगल ऐसी राशि में गोचर करता है जो राशि मंगल के भिन्नाष्टकवर्ग में अधिकतम बिन्दु प्राप्त करती है, तो वह समय विशेष भू–सम्पति खरीदने के लिए अतिशुभ समय होता है।

चन्द्रमा का अष्टकवर्ग और मुहूर्त्तः

किसी भी शुभ कार्य के प्रारम्भ के लिए शुभ समय का चयन करने में अर्थात मुहूर्त्त निर्णय में चन्द्रमा महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यद्यपि कार्य विशेष के अनुसार चन्द्रमा के अतिरिक्त अन्य ग्रहों की स्थितियों का विचार भी अवश्य होता है लेकिन चन्द्रमा की स्थिति का विचार सभी कार्यो के लिए होता है। अष्टकवर्ग पद्धति के अनुसार किसी भी कार्य के शुभ मुहूर्त्त के चयन के लिए चन्द्रमा का बली होकर अपने भिन्नाष्टकवर्ग में 5 अथवा अधिक बिन्दु वाली राशि में गोचर श्रेष्ठ होता है।

चन्द्रमा के भिन्नाष्टकवर्ग में जिस राशि में अधिकतम बिन्दु होते हैं, उस राशि में जब चन्द्रमा गोचर करता है तो वह समय विशेष चूड़ाकरण और सगाई जैसे संस्कार करने के लिए होता है।

स्नानघरः चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में, प्रत्येक दिशा की राशि और उससे त्रिकोण की राशियों का योग करें। इस प्रकार चारों दिशाओं को इंगित करने वाली राशियों के चार समूह बन जाएंगे। जो समूह अधिक बिन्दुओं के साथ बली होता है, उस समूह द्वारा इंगित दिशा में जातक के घर का स्नानघर स्थित होना चाहिए।

बुध का अष्टकवर्ग और मुहूर्त्तः

बुध के भिन्नाष्टकवर्ग में जो राशि 4 से अधिक बिन्दु प्राप्त करके बृहस्पति से दृष्ट होती है, उस राशि में जब बुध गोचर करता है तो वह समय विशेष शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए अतिशुभ होता है। किसी भी बालक की शिक्षा प्रारम्भ करने के मुहूर्त्त निर्णय में यदि इस स्थिति का विशेष ध्यान रखा जाता है तो ऐसे बालक को शिक्षा प्राप्त करने में अडचने नहीं आती हैं।

विष्णु भगवान की अराधना करने के लिए ऐसा समय चुनना चाहिए जब वह राशि उदय होती है जो बुध के भिन्नाष्टकवर्ग में अधिकतम बिन्दुओं के साथ होती है।

जपादि पवित्र कार्यों के लिए शुभ समयः

बृहस्पति के भिन्नाष्टकवर्ग में अधिकतम बिन्दु प्राप्त करने वाली राशि में सूर्य के गोचर का समय सभी धार्मिक कार्य करने के लिए शुभ समय होता है।

इसी प्रकार जब बृहस्पति स्वयं ऐसी राशि में गोचर करता है जिस राशि में बृहस्पति के भिन्नाष्टकवर्ग में अधिकतम बिन्दु होते हैं तो वह समय विशेष जप, तप एवं प्रार्थना करने, दीक्षा लेने, धार्मिक एवं अध्यात्मिक संस्कार सम्पन्न करने, वेद सीखने और मेहमान एवं ब्राह्मणों को भोजन कराने के लिए अतिशुभ समय होता है।

कृषि सम्बन्धित कार्यः

जब शनि अपने भिन्नाष्टकवर्ग में अधिकतम बिन्दु प्राप्त करने वाली राशि में गोचर करता है अथवा जिन दिनों वह राशि उदय होती हैं, वह समय सेवकों की नियुक्ति और कृषि सम्बन्धित कार्य प्रारम्भ करने के लिए सबसे अधिक श्रेष्ठ होता है।

सेवक के आवास की दिशाः

शनि के भिन्नाष्टक वर्ग में जिस राशि में सबसे अधिक बिन्दु हों उस राशि द्वारा इंगित दिशा में सवेकों का आवास, भण्डार का स्थान, मल–मूत्र त्यागने का स्थान आदि होना चाहिए।

अध्याय 21

विवाह और अष्टकवर्ग

यद्यपि अच्छे वैवाहिक जीवन के लिए ज्योतिषशास्त्र के सामान्य सिद्धान्तों को नकारा नहीं जाना चाहिए, लेकिन वैवाहिक जीवन में पति–पत्नी दोनों को अच्छी खुशियां एवं समृद्धियां प्राप्त हो और दोनों मिलकर एक आदर्श वैवाहिक जीवन जीने में सफल रहें, इसके लिए अष्टकवर्ग का उपयोग, बहुत ही कारगर सिद्ध होता है। ज्योतिषशास्त्र के सामान्य नियमों के अनुसार सुखी वैवाहिक जीवन के लिए, जन्मपत्रिका में निम्नलिखित स्थितियां आवश्यक हैंः

1. लग्न, लग्नेश और सप्तम भाव एवं सप्तमेश बली होना चाहिए।*
2. जन्मपत्रिका में शुक्र शुभ भाव में स्थित होना चाहिए। साथ ही साथ, शुक्र अस्त, नीच, शत्रु राशि अथवा षष्टम, अष्टम एवं द्वादश भावों में स्थित नहीं होना चाहिए।
3. शुक्र को पापकर्त्तरी योग में नहीं होना चाहिए।
4. शुक्र को मंगल, राहू अथवा शनि के प्रभाव से मुक्त होना चाहिए क्योंकि इनका प्रभाव, वैवाहिक जीवन की खुशियों को बिगाड देता है।
5. शुक्र राशि के अन्त अथवा प्रारम्भ में नहीं होना चाहिए।
6. जन्मपत्रिका में दाराकारक ग्रह एवं उपपद शुभ भाव में स्थित होने चाहिए।
7. लग्नेश और सप्तमेश, एक–दूसरे से षष्टम, अष्टम अथवा द्वादश नहीं होने चाहिए।
8. द्वितीय भाव अर्थात कुटुम्ब स्थान और चतुर्थ भाव अर्थात सुख स्थान पीड़ित नहीं होने चाहिए।
9. मंगल का अशुभ प्रभाव वैवाहिक जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

---

* इस विषय पर लेखक की पुस्तक "Analysing Horosope through Modern Texhniques" में विस्तार से चर्चा की गई है।

10. शनि एवं बुध, दोनों ही नपुंसक ग्रह हैं। इनका प्रभाव सप्तम भाव एवं सप्तमेश पर नहीं होना चाहिए।

ज्योतिषशास्त्र के शास्त्रीय ग्रन्थों में अष्टकवर्ग पद्धति के संदर्भ में, सुखी वैवाहिक जीवन के लिए कई नियमों का उल्लेख मिलता है। इनमें से कुछ नियम इस प्रकार हैं:

अ. यदि शुक्र के भिन्नाष्टक वर्ग सबसे अधिक बिन्दु प्राप्त करने वाली राशि द्वारा इंगित दिशा से जातक की भार्या को आना चाहिए। यदि जीवनसाथी शुक्र के भिन्नाष्टकवर्ग में अधिकतम बिन्दु प्राप्त करने वाली राशि की दिशा से आता है तो भी वैवाहिक जीवन सुखमय होता है। इसके विपरीत यदि निम्नतम बिन्दु प्राप्त करने वाली दिशा से जीवन साथी आता है तो वैवाहिक जीवन में असन्तोष बना रहता है।

ब. यदि पति–पत्नि में से एक की जन्मपत्रिका में शुक्र से सप्तम भाव के स्वामी ग्रह के भिन्नाष्टकवर्ग में, दूसरे के जन्म नक्षत्र का स्वामी अथवा जन्मनक्षत्र से त्रिकोण के नक्षत्र का स्वामी, बिन्दु प्रदत्त करता है तो पति और पत्नी दोनों में एक–दूसरे के प्रति असीम प्रेम होता है। यदि राहू अथवा केतु नक्षत्र स्वामी बनते हैं तो राहू के लिए शनि और केतु के लिए मंगल का विचार करना चाहिए।

मिलान करना:

1. विवाह के लिए ऐसे जातक अथवा जातिका को चुनना चाहिए जिसके लग्न अथवा चन्द्रमा की राशि में दूसरे की जन्मपत्रिका में अधिकतम बिन्दु हों। अर्थात जातक की जन्मपत्रिका में जो राशि अधिकतम बिन्दु प्राप्त करती है, यदि जातिका की जन्मपत्रिका में वह राशि लग्न अथवा चन्द्रराशि होती है तो मिलान अतिशुभ होता है।

2. यह देखें कि जातक का चन्द्रमा किस ग्रह की कक्ष्या में स्थित है। चन्द्रमा के भिन्नाष्टकवर्ग में उस ग्रह द्वारा जिन–जिन राशियों में बिन्दु प्रदत्त किये जाते हैं, जीवनसाथी का उन राशियों में से किसी भी राशि का होना शुभ होता है और ऐसा मिलान श्रेष्ठ मिलान माना जाता है। उदाहरणतः माना कि जातक का चन्द्रमा, बृहस्पति की कक्ष्या में स्थित है तो ऐसी स्थिति में

चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग में बृहस्पति जिन राशियाँ में बिन्दु प्रदत्त करता है उस राशि की जातिका का चयन करना श्रेष्ठ होगा।

इस नियम को उदाहरण में ली गई स्वर्गीय श्रीमति इन्दिरा गांधी की जन्मपत्रिका से समझते हैं।

उदाहरण जन्मपत्रिका में चन्द्रमा मकर राशि में 5 अंश 35 मिनट का है, अर्थात बृहस्पति की कक्ष्या में स्थित है। चन्द्रमा के प्रस्तारक वर्ग, (तालिका संख्या 2.2) से स्पष्ट है कि बृहस्पति मेष, वृषभ, सिंह, वृश्चिक, धनु, कुम्भ एवं मीन राशि में बिन्दु प्रदत्त करता है। अतः इन राशियों में से किसी भी राशि का जीवनसाथी चुनना अधिक शुभ होता।

अध्याय 22

अष्टकवर्ग में मतभिन्नता

ज्योतिष शास्त्र की यह एक बिडंबना है कि मूल शास्त्रीय ग्रन्थों में वर्णित फलित के सभी सिद्धान्तों की विवेचना, बाद के ज्योतिषाचार्यों ने अपने–अपने अनुसार किया है जिससे कई बार भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती है। इसी तरह अष्टकवर्ग के नियमों को भी ज्योतिषाचार्यों ने अपने–अपने ढंग से लागू करने की अनुशंसा की है। यहां हम अष्टकवर्ग में प्रचलित विभिन्न मतों को उल्लेखित कर रहे हैं।

1. त्रिकोण शोधनः

इस पुस्तक में पराशर द्वारा प्रतिपादित त्रिकोण शोधन के सिद्धान्तों का ही अनुशरण किया गया है। त्रिकोण शोधन को समझाते हुए पराशर कहंते हैं किः

त्रिकोणेषु च यन्न्यूनं तत्तुल्यं त्रिषु शोधयेत्।
एकस्मिन् भवने शून्यं तत् त्रिकोणं न शोधयेत्।।
समत्वे सर्वगेहेषु सर्वं संशोधयेद् बुधः।
पश्चात् विपश्चिता कार्यमेकाधिपतिशोधनम्।।

उपरोक्त श्लोकों से स्पष्ट है कि त्रिकोण राशियों में से जिस राशि में सबसे कम बिन्दु होते हैं उसको ही तीनों राशियों के बिन्दुओं में से घटाना है। इस प्रकार से घटाने पर प्राप्त तीनों राशियों का शेषफल राशियों की शोधित बिन्दुओं की संख्या होती है। हमने भी इस पुस्तक में पराशर द्वारा अनुशंसित इसी नियम का प्रयोग करना समझाया है।

इस शोधन के संदर्भ में एक अन्य मत भी है जिसे **बालभद्र** ने अपने ग्रन्थ **होरा रत्न** में दिया है। बालभद्र के मतानुसार यदि तीनों राशियों के बिन्दुओं की संख्या समान नहीं हो तो, तीनों राशियों की संख्या को सबसे कम संख्या के समान कर देना चाहिए।

उदाहरणतः चन्द्रमा के भिन्नाष्टकवर्ग में मेष, सिंह और धनु राशियों के बिन्दुओं की संख्या क्रमशः 3, 2 एवं 5 है तो शोधन करने के लिए सबसे कम संख्या 2 को तीनों में से घटाने के स्थान पर, तीनों राशियों की संख्या सबसे कम संख्या के बराबर अर्थात 2 हो जाएगी।

इसी क्रम में, **मंत्रेश्वर ने फलदीपिका** नामक अपने ग्रन्थ में शोधन के नियमों का उल्लेख इस प्रकार किया है:

1. यदि त्रिकोण की तीनों राशियों के बिन्दुओं की संख्या असमान है तो तीनों राशियों की संख्या को सबसे कम संख्या के समान कर दें। (यह नियम बालभद्र के मतानुसार ही है और उपरोक्त वर्णित उदाहरण में इस प्रकार से ही शोधन किया है।)
2. यदि त्रिकोण की तीनों राशियों में से किन्ही दो राशियों में बिन्दुओं की संख्या 0 है तो तीसरी राशि की संख्या भी 0 हो जायेगी।
3. यदि तीनों राशियों में बिन्दुओं की संख्या समान है तो तीनों ही 0 हो जायेंगे।

2. भाव कुण्डली बनाम राशि कुण्डली:

माना किसी जातक के जन्म के समय लग्न 3 अंश का उदय हो रहा था। अब उसके भाग्य की तुलना, उस जातक के भाग्य से करें जिसका जन्म, इसके जन्म से 1 घण्टा 30 मिनट बाद हुआ, जब 27 या इससे अधिक अंश का वही लग्न उदय हो रहा था। दोनों का जन्म एक ही राशि का हो सकता है लेकिन भाव मध्य के सिद्धान्त के अनुसार दोनों का भाग्य में अन्तर होगा। राशि कुण्डली में ग्रह उसी राशि में हो सकते हैं लेकिन भाव कुण्डली में अलग–अलग भावों में भी हो सकते हैं। ग्रहों के भाव परिवर्तन के कारण उनके फल देने की क्षमता और फल, दोनों ही बदल जाएंगे।

1. अष्टकवर्ग के कुछ विशेषज्ञ ज्योतिषाचार्यों का यह मत है कि राशि कुण्डली की अपेक्षा, भाव कुण्डली अधिक महत्वपूर्ण होती है। अपने मत को उचित सिद्ध करने के लिए, उनका कहना है कि, किसी भी राशि कुण्डली में कोई ग्रह विशेष, किसी भाव विशेष में स्थित हो सकता है, जबकि भाव मध्य सिद्धान्त के द्वारा भाव कुण्डली बनाने पर वह भाव परिवर्तन कर सकता है,

अर्थात किसी अन्य भाव में स्थित हो सकता है। भाव मध्य का यह उपयोग श्रीपति द्वारा प्रसिद्ध किया गया। इसके कारण यदि कोई ग्रह भाव परिवर्तित करता है तो उस ग्रह विशेष की फल देने की क्षमता और फलों में भी अन्तर आता है। अतः यह सुझाव दिया गया कि अष्टकवर्ग की गणना, भाव कुण्डली के आधार पर करनी चाहिए न कि राशि कुण्डली के आधार पर।

2. सामान्य फलित ज्योतिष में भाव कुण्डली को राशि कुण्डली के समान ही महत्वपूर्ण माना जाता है। यही कारण है कि सटीक फलित करने के लिए, भाव एवं राशि कुण्डली, दोनों की सूक्ष्म विवेचना करनी चाहिए।

3. गजकेसरी, पंचमहापुरुष जैसे कई महत्वपूर्ण योग, ग्रहों की एक–दूसरे से भाव विशेष में स्थिति के कारण बनते हैं न कि राशियों के आधार पर जैसे कि जब चन्द्रमा एवं बृहस्पति एक–दूसरे से केन्द्र में होते हैं तो गजकेसरी योग बनता है।

इसके विपरीत, जो अष्कवर्ग विशेषज्ञ राशि कुण्डली को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं वह अपने मत के समर्थन में निम्नलिखित तर्क देते हैं:

1. ग्रह की मान्य स्थिति राशि है, भाव नहीं। इसके आधार पर ही किसी राशि विशेष के अंश विशेष में स्थित होने के कारण कोई ग्रह, उच्च का होता है और कोई नीच का।
2. नवमांश, सप्तमांश, दशमांश आदि सभी वर्ग कुण्डलियां राशियों एवं ग्रहों के अंशों के आधार पर ही बनती हैं।
3. जैमिनी पद्धति में राशियाँ का ही प्रयोग होता है, भावों का नहीं।
4. ग्रहों का स्वामित्व भी केवल राशियों पर ही आधारित है। उदाहरणतः शुक्र के पास वृषभ एवं तुला का स्वामित्व है जबकि बृहस्पति धनु एवं मीन का स्वामी है। इसके लिए भावों का विचार कभी भी नहीं होता है।
5. कक्ष्या द्वारा राशि को आठ भागों में बांटने की अवधारणा भी राशियों पर आधारित है। इसके लिए भी भाव का विचार बीच में नहीं आता है।
6. ग्रहों की तत्कालिक मित्रता अथवा शत्रुता भी केवल राशियों पर ही आधारित है।
7. त्रिकोण एवं एकाधिपत्य शोधन भी केवल राशियों के आधार पर ही होता है।

8. राशि गुणाकर का नियम भी केवल राशियों पर ही आधारित है।

3. बिन्दु 337 अथवा 386 – लग्नाष्टक

सर्वाष्टकवर्ग के बिन्दुओं की कुल संख्या 337 है। अष्कवर्ग के कुछ विशेषज्ञों का मत है कि लग्नाष्टक के बिन्दुओं को, जिनकी संख्या 49 है, इसमें शामिल करके इनकी संख्या 386 करनी चाहिए। अपनी इस मान्यता का कारण वह निम्नलिखित बताते हैं:

1. पराशर ने लग्न का अष्टकवर्ग देकर ही इसको अंष्टकवर्ग बनाया है। उसने लग्न अष्टकवर्ग के लिए 49 बिन्दु दिये हैं।
2. आयुर्दाय की गणना के लिए, लग्नाष्टक वर्ग महत्वपूर्ण कडी है।
3. यद्यपि लग्न निश्चित होता है लेकिन इसका स्वामी गोचरवश प्रभावित होता है।

ग्रहों से लग्न के लिए शुभ स्थान (कुल 49 बिन्दु)

शनि से	1–3–4–6–10–11	6
बृहस्पति से	1–2–4–5–6–7–9–10–11	9
मंगल से	1–3–6–10–11	5
सूर्य से	3–4–6–10–11–12	6
शुक्र से	1–2–3–4–5–8–9	7
बुध से	1–2–4–6–8–10–11	7
चन्द्रमा से	3–6–10–11–12	5
लग्न से	3–6–10–11	4

लेकिन इस मत के विपरीत, अष्टकवर्ग के अधिकतर विशेषज्ञों का यह मानना है कि केवल 337 बिन्दु ही लेने चाहिए। अपनी इस मान्यता के लिए वे निम्नलिखित कारण बताते हैं:

1. विभिन्न ग्रहों के भिन्नाष्टकवर्ग में लग्न से शुभ स्थानों की गणना पहले से ही हो जाती है, अतः इसको दूसरी बार जोड़ने का कोई औचित्य नहीं है।

2. लग्न पूर्णतः निश्चित होता है और इसका गोचर नहीं होता है।
3. यदि लग्नाष्टक के बिन्दुओं को जोड़ते है तो सर्वाष्टकवर्ग के कुल बिन्दु 386 हो जाते हैं। इनको 12 से भाग करने पर भागफल 32 आता है, जबकि अष्टकवर्ग के सभी विशेषज्ञ 28 बिन्दुओं को राशि का सामान्य बल मानते हैं।

4. राहू का अष्टकवर्गः

ज्योतिष शास्त्र के अधिकतर शास्त्रीय ग्रन्थों ने राहू के अष्टकवर्ग को नकारा है। केवल ***शंभू होरा प्रकाश*** ही एक मात्र ग्रन्थ है जिसने राहू के भिन्नाष्टक वर्ग के बारे में उल्लेख किया है। अधिकतर विशेषज्ञ इस बात में एक मत हैं कि अष्टकवर्ग में बिन्दुओं की कुल संख्या 337 है। चूंकि राहू एक छाया ग्रह है और अतः उसको उपरोक्त योजना से बाहर रखा गया है अर्थात इसमें शामिल नहीं किया है।

शंभू होरा प्रकाश के अनुसार, अन्य ग्रहों के संदर्भ में राहू के शुभ अंक अर्थात बिन्दु इस प्रकार से हैं:

राहू के लिए (कुल 43/44 अंक)

ग्रह	भाव	कुल
शनि से	3–5–7–10–11–12	6
बृहस्पति से	1–3–4–6–8	5
मंगल से	2–3–5–7*–12	4/5
सूर्य से	1–2–3–5–7–8–10	7
शुक्र से	6–7–11–12	4
बुध से	2–4–7–8–12	5
चन्द्रमा से	1–3–5–7–8–9–10	7
लग्न से	3–4–5–9–12	5

*टिप्पणीः डा. बी. वी. रमन ने मंगल से सप्तम भाव को भी जोड़कर 43 अंको के स्थान पर 44 अंक लिए हैं जबकि अन्य शास्त्रीय ग्रन्थों जैसे कि फलदीपिका, शंभू होरा प्रकाश ने केवल 43 अंक ही लिए हैं।

1. छाया ग्रह होने के कारण राहू के लिए राहू से कोई भी बिन्दु नहीं है। साथ ही साथ राहू के पास किसी भी राशि का स्वामित्व नहीं है, अतः इसमें किसी भी शोधन की कोई गुंजाइश नहीं है।

2. चूंकि सामान्यतः राहू के गोचरवश परिणाम दूसरे ग्रहों की कक्ष्याओं के द्वारा दिये जा सकते हैं, अतः राहू को कोई भी कक्ष्या आबंटित नहीं की गई है।

3. राहू की गति वक्री है अतः गोचर की इसकी कक्ष्यायें इस प्रकार से होती हैं: लग्न, चन्द्रमा, बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शनि। राहू किसी भी कक्ष्या में लगभग सवा दो महीने गोचर करता है।

4. अन्य क्रूर ग्रहों की तरह ही राहू के गोचर का परिणाम, चन्द्रमा से 3, 6 एवं 11 भाव में शुभ होता है। अन्य भावों में यह अशुभ है।

अपवाद

यह अपवाद ऋषि पराशर और वरामिहिर द्वारा नीचे दी गई जन्मकालीन ग्रहों की स्थितियों से गोचर के ग्रहों की आधारभूत शुभ स्थितियों से सम्बन्धित है। इसमें चन्द्रमा/बृहस्पति और शुक्र/मंगल की स्थितियों के विषय में थोडा भेद है। चूंकि इन स्थितियों का कारण अज्ञात है इसलिए जब तक शोध के द्वारा परिणामों का निर्णय नहीं हो जाता है किसी एक को ही सही मानना संभव नहीं है। मंत्रेश्वर ने ऋषि पराशर को लिया है जबकि श्री राव सर वरामिहिर को वरीयता दी है।

चन्द्रमा/बृहस्पति

पराशर	1	2	4	7	.8	10	11	–
वरामिहिर	1	–	4	7	8	10	11	12

शुक्र/मंगल

पराशर	3	4	–	6	9	11	12
वरामिहिर	3	–	5	6	9	11	12

अध्याय 23

उदाहरण जन्मकुण्डलियाँ

1. स्वतन्त्र भारत की जन्मकुण्डली

जन्म का दिनः 15–08–1947 समयः 00–01–00 बजे स्थानः नई दिल्ली

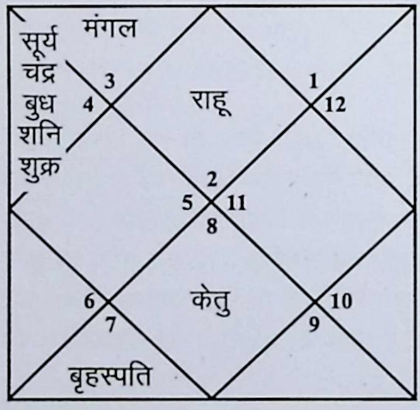

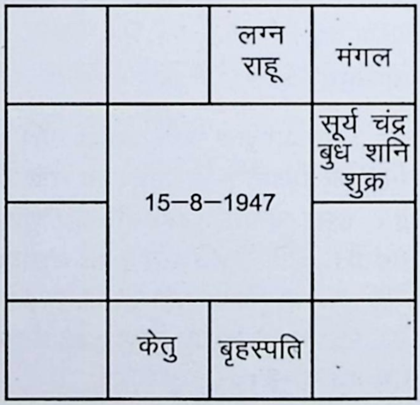

भिन्नाष्टकवर्ग

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	6	4	4	4	4	3	3	1	4	4	5	6
चन्द्रमा	6	6	0	5	2	6	5	4	3	5	4	3
मंगल	3	6	2	4	1	5	2	2	5	2	3	4
बुध	4	7	4	4	5	4	4	3	5	2	5	7
बृहस्पति	5	6	4	4	6	4	4	6	5	5	2	6
शुक्र	3	8	4	4	5	5	4	5	2	1	6	5
शनि	3	7	2	2	4	3	3	2	4	1	4	4
कुल	30	44	19	27	27	30	25	23	28	20	29	35

त्रिकोण शोधन के पश्चात् (घटाने के बाद)

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	2	1	1	3	0	0	0	0	0	1	2	5
चन्द्रमा	4	1	0	2	0	1	5	1	1	0	4	0
मंगल	2	4	0	2	0	3	0	0	4	0	1	2
बुध	0	5	0	1	1	2	0	0	1	0	1	4
बृहस्पति	0	2	1	0	1	0	2	2	0	1	0	2
शुक्र	1	7	0	0	3	4	0	1	0	0	2	1
शनि	0	6	0	0	1	2	1	0	1	0	2	2

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् (घटाने के बाद)

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	2	1	1	3	0	0	0	0	0	1	1	5
चन्द्रमा	1	1	0	2	0	1	5	1	1	0	4	0
मंगल	2	4	0	2	0	3	0	0	2	0	1	2
बुध	0	5	0	1	1	2	0	0	1	0	1	1
बृहस्पति	0	2	1	0	1	0	2	2	0	1	0	2
शुक्र	0	7	0	0	3	4	0	0	0	0	2	1
शनि	0	6	0	0	1	3	1	0	1	0	2	1

शोध्य पिण्ड

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
राशि पिण्ड	120	126	130	106	97	154	130
ग्रह पिण्ड	089	104	054	027	28	000	010
कुल	**209**	**230**	**184**	**133**	**125**	**154**	**140**

2. बिल क्लिन्टन

जन्म का दिनः 19—08—1946 समयः 08—30—00 बजे स्थानः

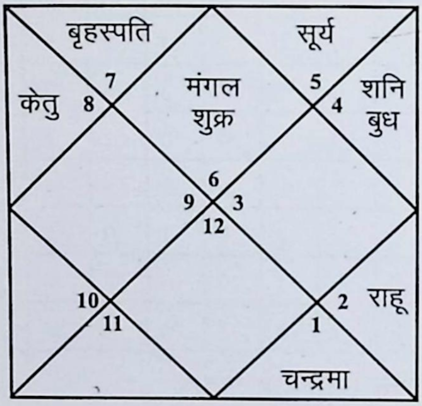

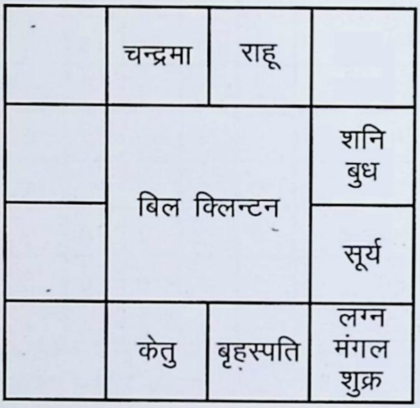

भिन्नाष्टकवर्ग

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	4	4	6	3	5	4	2	3	3	2	6	6
चन्द्रमा	3	6	5	5	1	4	5	5	2	6	5	2
मंगल	3	3	4	5	2	5	3	2	3	2	4	3
बुध	6	6	4	7	2	6	4	3	5	4	3	4
बृहस्पति	4	6	5	5	4	4	7	4	6	3	4	4
शुक्र	4	7	4	6	3	4	3	6	4	3	4	4
शनि	1	3	5	3	4	5	0	4	3	1	7	3
कुल	**25**	**35**	**33**	**34**	**21**	**32**	**24**	**27**	**26**	**21**	**33**	**26**

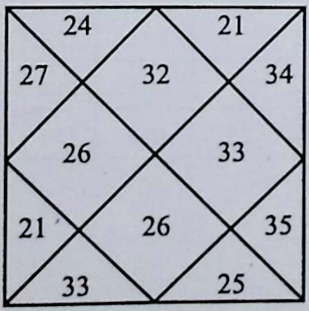

त्रिकोण शोधन के पश्चात् (घटाने के बाद)

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	1	2	4	0	2	2	0	0	0	0	4	3
चन्द्रमा	2	2	0	3	0	0	0	3	1	2	0	0
मंगल	1	1	1	3	0	3	0	0	1	0	1	1
बुध	4	2	1	4	0	2	1	0	3	0	0	1
बृहस्पति	0	3	1	1	0	1	3	0	2	0	0	0
शुक्र	1	4	1	2	0	1	0	2	1	0	1	0
शनि	0	2	5	0	3	4	0	1	2	0	7	0

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् (घटाने के बाद)

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	1	2	2	0	2	2	0	0	0	0	4	3
चन्द्रमा	2	2	0	3	0	0	0	2	1	2	0	0
मंगल	1	1	0	3	0	3	0	0	0	0	1	0
बुध	4	1	0	4	0	2	1	0	1	0	0	1
बृहस्पति	0	0	0	1	0	1	3	0	2	0	0	0
शुक्र	1	4	0	2	0	1	0	1	1	0	1	0
शनि	0	2	4	0	3	4	0	1	2	0	7	0

शोध्य पिण्ड

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
राशि पिण्ड	153	81	55	092	48	88	205
ग्रह पिण्ड	045	40	80	100	55	40	075
कुल	198	121	135	192	103	128	280

3. जार्ज डब्ल्यू– बुश

जन्म का दिनः 06–07–1946 समयः 07–46–00 बजे स्थानः न्यू हैवन

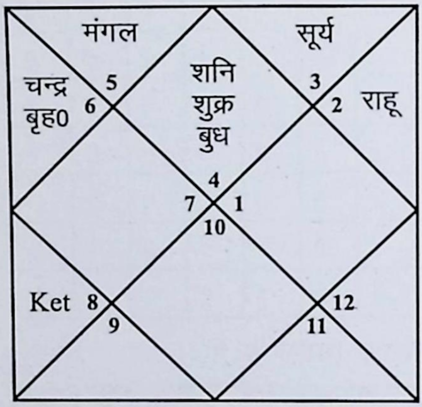

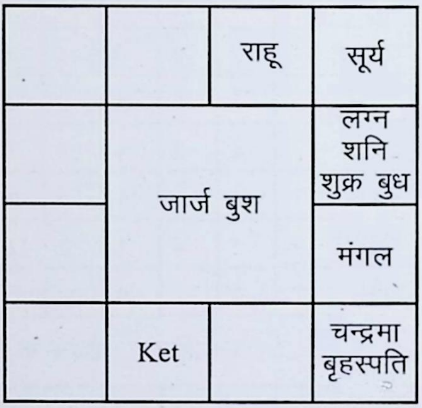

भिन्नाष्टकवर्ग

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	5	5	6	4	2	4	2	3	4	4	5	4
चन्द्रमा	6	5	3	3	2	7	3	5	5	4	2	4
मंगल	3	5	3	4	3	3	2	4	3	1	5	3
बुध	7	6	3	6	5	3	5	4	3	1	7	4
बृहस्पति	5	5	4	5	5	4	4	6	6	3	2	7
शुक्र	6	7	2	5	3	5	5	5	3	4	3	4
शनि	3	5	4	5	1	3	2	2	6	3	3	2
कुल	**35**	**38**	**25**	**32**	**21**	**29**	**23**	**29**	**30**	**20**	**27**	**28**

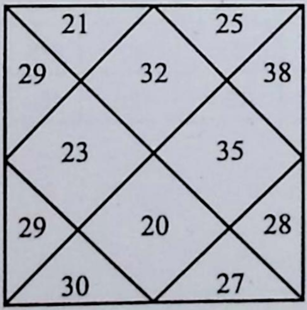

त्रिकोण शोधन के पश्चात् (घटाने के बाद)

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	3	1	4	1	0	0	0	0	2	0	3	1
चन्द्रमा	4	1	1	0	0	3	1	2	3	0	0	1
मंगल	0	4	1	1	0	2	0	1	0	0	3	0
बुध	4	5	0	2	2	2	2	0	0	0	4	0
बृहस्पति	0	2	2	0	0	1	2	1	1	0	0	2
शुक्र	3	3	0	1	0	1	3	1	0	0	1	0
शनि	2	2	2	3	0	0	0	0	5	0	1	0

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् (घटाने के बाद)

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	3	1	4	1	0	0	0	0	1	0	3	1
चन्द्रमा	2	0	1	0	0	3	0	2	1	0	0	1
मंगल	0	4	1	1	0	2	0	1	0	0	3	0
बुध	4	2	0	2	2	2	2	0	0	0	4	0
बृहस्पति	0	0	2	0	0	1	0	1	1	0	0	1
शुक्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	0	1	0
शनि	2	2	2	3	0	0	0	0	5	0	1	0

शोध्य पिण्ड

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
राशि पिण्ड	121	74	103	144	50	35	118
ग्रह पिण्ड	37	50	52	80	25	32	61
कुल	158	124	155	224	75	67	179

4. सचिन तेन्दूलकर

जन्म का दिनः 21–04–1973 समयः 18–01–00 बजे थानः मुम्बई

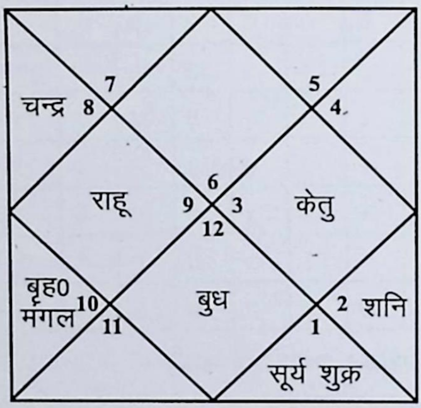

बुध	सूर्य शुक्र	शनि	केतु
	सचिन तेन्दूलकर 24–01–1933		
बृहस्पति मंगल			
राहू	चन्द्रमा		लग्न

भिन्नाष्टकवर्ग

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	3	4	3	4	5	4	3	6	4	5	5	2
चन्द्रमा	2	3	5	5	3	5	6	5	3	5	4	3
मंगल	2	2	3	3	4	4	2	5	2	5	5	2
बुध	4	3	5	4	7	4	2	5	7	3	7	3
बृहस्पति	5	4	3	7	4	4	5	4	5	6	5	4
शुक्र	2	5	3	5	4	5	3	7	5	5	4	4
शनि	2	3	3	3	1	4	4	5	4	3	4	3
कुल	20	24	25	31	28	30	25	37	30	32	34	21

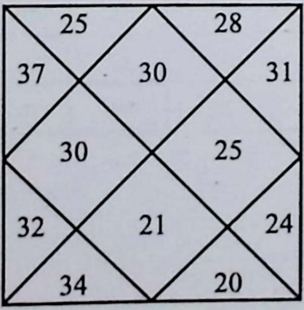

त्रिकोण शोधन के पश्चात् (घटाने के बाद)

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	0	0	0	2	2	0	0	4	1	1	2	0
चन्द्रमा	0	0	1	2	1	2	2	2	1	2	0	0
मंगल	0	0	1	1	2	2	0	3	0	3	3	0
बुध	0	0	3	1	3	1	0	2	3	0	5	0
बृहस्पति	1	0	0	3	0	0	2	0	1	2	2	0
शुक्र	0	0	0	1	2	0	0	3	3	0	1	0
शनि	2	0	0	0	0	1	1	2	3	0	1	0

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् (घटाने के बाद)

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	0	0	0	2	2	0	0	4	1	1	1	0
चन्द्रमा	0	0	0	2	1	2	2	2	1	2	0	0
मंगल	0	0	0	1	2	2	0	3	0	3	0	0
बुध	0	0	1	1	3	1	0	2	3	0	5	0
बृहस्पति	1	0	0	3	0	0	2	0	1	2	0	0
शुक्र	0	0	0	1	2	0	0	3	3	0	1	0
शनि	1	0	0	0	0	1	1	2	3	0	1	0

शोध्य पिण्ड

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
राशि पिण्ड	85	77	73	145	52	86	73
ग्रह पिण्ड	38	46	69	10	48	15	22
कुल	123	123	142	155	100	101	95

5. लाल बहादुर शास्त्री

जन्म का दिनः 09–10–1904 समयः 10–46–20 बजे स्थानः वराणसी

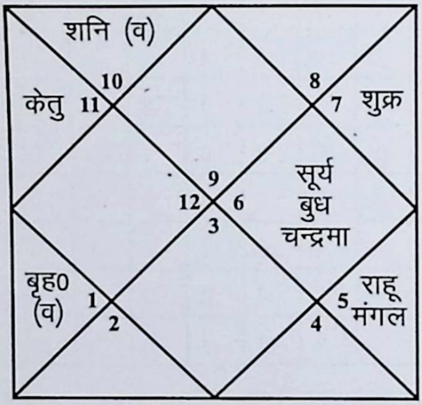

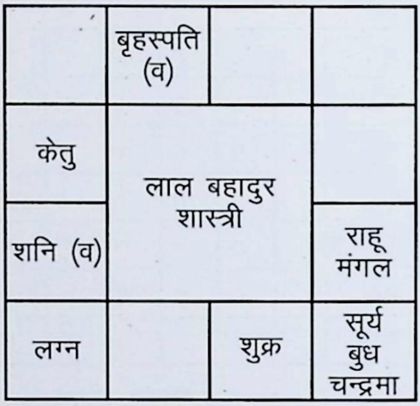

भिन्नाष्टकवर्ग

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	4	4	4	4	4	6	3	5	2	2	6	4
चन्द्रमा	5	3	6	5	1	4	3	5	3	4	5	5
मंगल	1	3	2	4	3	5	2	5	1	4	6	3
बुध	3	5	4	5	5	5	4	5	3	5	7	3
बृहस्पति	3	7	7	5	3	4	5	4	4	4	4	6
शुक्र	5	4	2	6	6	2	5	5	5	6	4	2
शनि	2	4	4	4	3	4	3	2	3	1	4	5
कुल	23	30	29	33	25	30	25	31	21	26	36	28

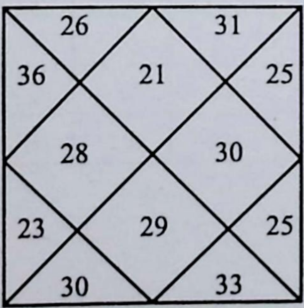

त्रिकोण शोधन के पश्चात् (घटाने के बाद)

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	2	2	1	0	2	4	0	1	0	0	3	0
चन्द्रमा	4	0	3	0	0	1	0	0	2	1	2	0
मंगल	0	0	0	1	2	2	0	2	0	1	4	0
बुध	0	0	0	2	2	0	0	2	0	0	3	0
बृहस्पति	0	3	3	1	0	0	1	0	1	0	0	2
शुक्र	0	2	0	4	1	0	3	3	0	4	2	0
शनि	0	3	1	2	1	3	0	0	1	0	1	3

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् (घटाने के बाद)

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	2	2	0	0	2	4	0	0	0	0	3	0
चन्द्रमा	4	0	1	0	0	1	0	0	2	1	1	0
मंगल	0	0	0	1	2	2	0	2	0	1	1	0
बुध	0	0	0	2	2	0	0	2	0	0	3	0
बृहस्पति	0	1	3	1	0	0	1	0	1	0	0	1
शुक्र	0	0	0	4	1	0	3	3	0	4	0	0
शनि	0	3	0	2	1	3	0	0	1	0	1	1

शोध्य पिण्ड

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
राशि पिण्ड	107	75	66	77	66	91	95
ग्रह पिण्ड	96	60	51	16	07	49	53
कुल	203	135	117	93	73	140	148

6. संजय गांधी

जन्म का दिनः 14–12–1946 समयः 09–27–00 बजे स्थानः दिल्ली

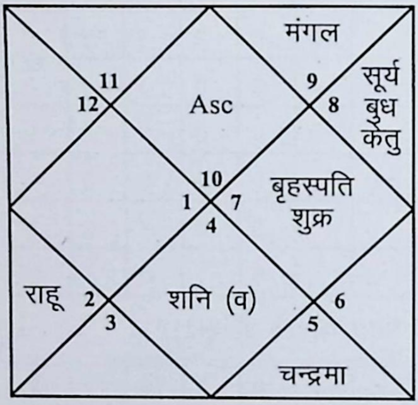

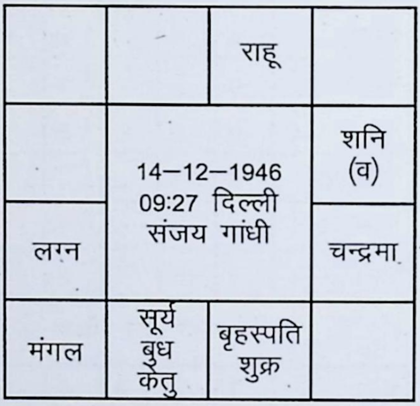

भिन्नाष्टकवर्ग

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	4	3	5	4	5	4	5	2	3	4	3	6
चन्द्रमा	4	6	5	2	6	5	4	3	2	6	4	2
मंगल	3	2	3	3	3	5	4	1	1	6	1	7
बुध	4	4	4	4	6	5	6	4	2	6	3	6
बृहस्पति	4	3	6	6	4	6	3	6	6	4	5	3
शुक्र	5	5	4	4	5	5	5	5	2	3	5	4
शनि	3	3	4	1	4	6	4	4	2	2	3	3
कुल	27	26	31	24	33	36	31	25	18	31	24	31

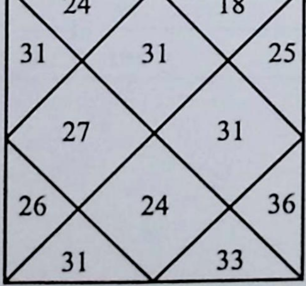

त्रिकोण शोधन के पश्चात् (घटाने के बाद)

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	1	0	2	2	2	1	2	0	0	1	0	4
चन्द्रमा	2	1	1	0	4	0	0	1	0	1	0	0
मंगल	2	0	2	2	2	3	3	0	0	4	0	6
बुध	2	0	1	0	4	1	3	0	0	2	0	2
बृहस्पति	0	0	3	3	0	3	0	3	2	1	2	0
शुक्र	3	2	0	0	3	2	1	1	0	0	1	0
शनि	1	1	1	0	2	4	1	3	0	0	0	2

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात् (घटाने के बाद)

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	1	0	1	2	2	1	2	0	0	1	0	4
चन्द्रमा	1	1	1	0	4	0	0	1	0	1	0	0
मंगल	2	0	2	2	2	2	3	0	0	4	0	6
बुध	2	0	0	0	4	0	3	0	0	2	0	2
बृहस्पति	0	0	0	3	0	0	0	3	2	1	1	0
शुक्र	1	1	0	0	3	2	1	1	0	0	1	0
शनि	0	0	1	0	2	1	1	3	0	0	0	2

शोध्य पिण्ड

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
राशि पिण्ड	115	78	181	109	70	83	88
ग्रह पिण्ड	54	30	71	71	61	42	57
कुल	169	108	252	180	131	125	145

अभ्यास के लिए जन्म पत्रिकाऐं: स्वंय करें

7. जवाहर लाल नेहरू

जन्म का दिनः 14–11–1889 समयः 11–03–00 बजे स्थानः इलाहबाद

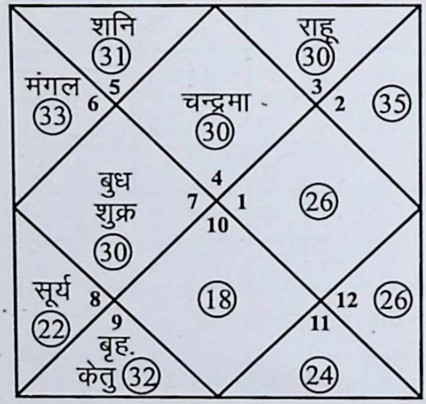

26	26	35	राहू 30
24	जवाहर लाल नेहरू		लग्न चन्द्रमा 30
18			शनि 31
बृहस्पति केतु 32	सूर्य 22	बुध शुक्र 30	मंगल 33

भिन्नाष्टकवर्ग

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	6	6	5	3	4	7	3	2	5	0	3	4
चन्द्रमा	5	5	5	5	3	4	4	2	6	6	3	1
मंगल	4	5	2	2	4	6	2	2	4	1	2	5
बुध	5	6	4	5	5	4	7	3	5	1	5	4
बृहस्पति	2	3	5	7	5	3	5	5	5	6	4	6
शुक्र	2	5	5	5	6	4	6	5	3	2	5	4
शनि	2	5	4	3	4	5	3	3	4	2	2	2
कुल	**26**	**35**	**30**	**30**	**31**	**33**	**30**	**22**	**32**	**18**	**24**	**26**

शोध्य पिण्ड

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
राशि पिण्ड	134	91	101	97	95	88	82
ग्रह पिण्ड	71	67	40	70	67	68	76
कुल	**205**	**158**	**141**	**167**	**162**	**156**	**158**

8. अटल बिहारी वाजपेई

जन्म का दिनः 25–12–1924 समयः 05–15–00 बजे स्थानः ग्वालियर

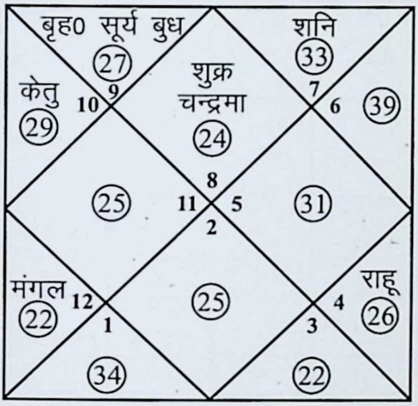

मंगल 22	34	25	22
25	अटल बिहारी वाजपेयी		राहू 26
केतु 29			31
27 बृहस्पति सूर्य बुध	लग्न 24 शुक्र चन्द्रमा	शनि 33	39

भिन्नाष्टकवर्ग

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	7	4	3	2	6	5	7	3	2	5	2	2
चन्द्रमा	4	4	3	5	5	6	3	3	4	4	4	4
मंगल	7	4	3	1	2	6	6	2	4	4	2	1
बुध	6	4	5	3	5	5	5	7	5	3	4	2
बृहस्पति	4	3	3	5	4	8	4	4	8	4	4	8
शुक्र	2	3	4	7	5	4	4	5	4	5	6	3
शनि	4	3	1	3	4	5	4	3	3	4	3	2
कुल	**34**	**25**	**22**	**26**	**31**	**39**	**33**	**24**	**27**	**29**	**25**	**22**

शोध्य पिण्ड

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
राशि पिण्ड	95	51	66	64	168	85	69
ग्रह पिण्ड	37	08	32	65	141	64	27
कुल	**132**	**59**	**98**	**129**	**309**	**149**	**96**

9. राजीव गांधी

जन्म का दिनः 20–08–1944 समयः 08–11–40 बजे स्थानः मुम्बई

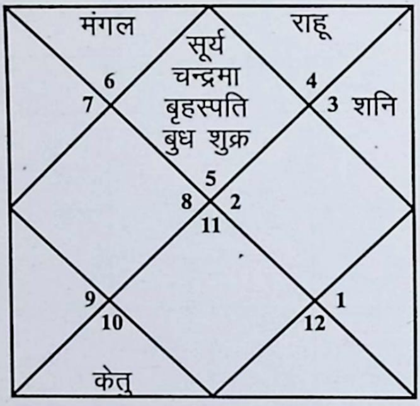

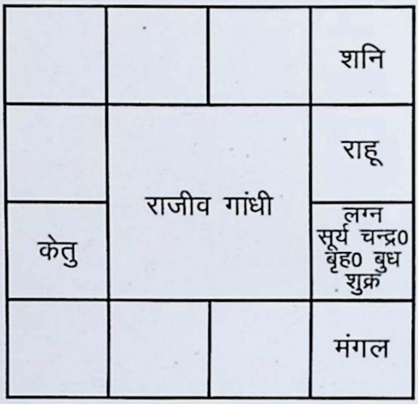

भिन्नाष्टकवर्ग

ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सूर्य	5	5	7	5	1	3	4	2	4	6	3	3
चन्द्रमा	2	7	7	2	4	0	7	5	2	4	6	3
मंगल	2	3	8	3	1	2	5	0	4	7	1	3
बुध	5	4	8	5	3	5	3	3	5	6	1	6
बृहस्पति	6	6	7	1	5	7	4	5	5	3	4	3
शुक्र	6	3	6	3	5	4	5	4	5	3	2	6
शनि	2	3	7	4	4	1	3	4	1	6	2	2
कुल	28	31	50	23	23	22	31	23	26	35	19	26

शोध्य पिण्ड

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
राशि पिण्ड	125	101	117	149	113	94	135
ग्रह पिण्ड	20	69	35	43	47	28	121
कुल	145	170	152	192	160	122	256

सर्वाष्टकवर्ग एवं इसके शोध्य पिण्ड

10. अमिताभ बच्चन

जन्म का दिनः 11–10–1942 समयः 15–01–36 बजे स्थानः इलाहबाद

		शनि (व)	
लग्न केतु	अमिताभ बच्चन		बृहस्पति
			Rah
		चन्द्रमा	सूर्य मंगल बुध शुक्र

27	26	33	29
लग्न 31	सर्वाष्टकवर्ग		42
24			23
32	29	21	20

शोध्य पिण्ड

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	कुल
ग्रह पिण्ड	0	20	0	0	30	0	5	55

राशि पिण्ड

राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	कुल
राशि पिण्ड	0	10	0	12	90	0	28	16	54	10	22	0	242

ग्रह पिण्डः 55 + 242 = 297

प्रकाशन के अन्य पुस्तकों की सूचि

प्रो. वी.के. चौधरी	• ज्योतिष स्वंय सीखिए
एस.बी.आर. मिश्र	• नाड़ी ज्योतिष
	• ज्योतिष शास्त्र में प्रश्न शास्त्र
	• ज्योतिष शास्त्र में चिकित्सा शास्त्र
एम.एस. मेहता	• वर्षफल
	• आधुनिक विधि से कुण्डली की विवेचना
एल.सी. शर्मा	• फलित ज्योतिष के तीन स्तम्भ (मुहूर्त, विवाह, सन्तान)
	• फलित ज्योतिष मूलसिद्धान्त व फलादेश
सी.एस. पटेल	• ज्योतिष शास्त्र में नवांश वर्ग
अनिल शर्मा	• मानव का पृथ्वी पर उद्देश्य
के.टी. शुभाकरण	• नक्षत्र फल (दो-भाग)
पं. वेणी माधव गोस्वामी	• लाल डायरी
	• उपाय मार्तण्ड
	• कौन मंगलीक, कौन नहीं
	• लाल किताब के फरमान
पं. लक्ष्मीकान्त वशिष्ठ	• लाल किताब गुटका

सागर पब्लिकेशन्स

72, जनपथ, वेद मेंशन, नई दिल्ली – 110001
दूरभाषः 23320648, 23328245
ई–मेलः sagarpub@vsnl.com
वेबसाइटः www.sagarpublications.com

आई.एस.बी.एन.: 978–81–7082–251–6

मूल्यः रू0 150/–